

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186521

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H001**
B57M Accession No. **P. G. H956**
Author **भार्गव, राजराजेश्वर, Comp.**
Title **माने न मानो**

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रान्तो-न प्रान्तो

अनहोनी-सी किन्तु बिल्कुल सच्ची विचित्र बातों का अनोखा संग्रह !

संशोधित और परिवर्द्धित नवीन संस्करण



सवा दो सौ से अधिक अनोखे विषय : दो सौ से अधिक चित्र

संकलनकर्ता और प्रकाशक

राजराजेश्वरप्रसाद भार्गव

हिन्दी विश्व-भारती कार्यालय,

चारबाग, लखनऊ

साधारण घटनाओं की प्रश्नतालिका शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। तदुपरान्त मानव-मस्तिष्क उत्सुकता और कल्पना के सहारे असाधारण क्षेत्रों की ओर अग्रसर होता है। वहाँ 'कैसे' और 'क्यों' का समाधान न मिलने पर भी वह चकित रह जाता है, उन घटनाओं की विशिष्टता और विशेषता पर मुग्ध हो जाता है और एक बार क्या हज़ार बार सुनने, देखने और जानने पर भी उनकी ओर से वह तटस्थ नहीं हो पाता। शताब्दियों के बाद शताब्दियाँ बीतती चली जा रही हैं, परन्तु उन अद्भुत, आश्चर्यजनक घटनाओं की मनोमोहकता वसन्त-प्रभात की सद्यः प्रस्फुटित कलिका के अनन्त औत्सुक्य की तरह ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। इस सङ्कलन द्वारा पाठकों का अधिकाधिक मनोरंजन हो और उनमें चिरकालिक जिज्ञासा जगी रहे यही हमारी कामना है।

मूल्य
चार रुपए

विषयानुक्रमिका

विषय	पृष्ठ
६६ वर्ष तक खंभे के सिरे पर बैठा रहनेवाला हठयोगी	११
६३७ फीट ऊँची इमारत के कँगूरे पर १६ दिन	११
सिपाही ने मुर्गी के दरबे में बैठकर अंडे से दिए	१२
पंद्रह वर्ष तक नित्य सूर्य की ओर एकटक देखता रहा	१२
शूल की सेज पर अठारह साल	१२
उत्थानपाद या सदैव खड़ा रहनेवाला तपस्वी	१३
लगातार २० वर्ष तक हाथ ऊँचे उठाए रखनेवाला साधु	१३
हथेली पर चिड़ियों का घोंसला	१३
४० दिन तक धरती में गड़ा रहनेवाला योगी	१४
त्रिशूलवेधी	१५
आँख के कोयों से साँपों की पिटारी उठा ली	१५
अधर में आँधे लटकते हुए चलनेवाली नदी	१६
कीलों पर लेटकर घन की चोंट सह लेनेवाली महिला	१६
बालों से छुः मन की चट्टान उठा लेनेवाली वीरबाला	१७
योरपीय पहलवान का अद्भुत शक्ति-प्रदर्शन	१७
प्रो० राममूर्ति के अद्भुत करतब	१८
नटों की अद्भुत कला	१६
मैक्सिको-वासियों का विचित्र रज्जु-नृत्य	२०
१३७ फीट ऊँचे बाँस पर शरीर-सन्तुलन	२०
टट्टियों को लाँघकर दौड़ने की होड़ में आदमी ने घोड़े को हरा दिया	२१
तीन घंटे में तीस मील की दौड़	२१
६० दिनों तक एक आँख बंद	२२
मस्तक द्वारा धूम्रपान	२२
क्या उसके हड्डियाँ न थीं	२२
अधोमुखी	२२
जीभ द्वारा ललाट का स्पर्श	२२
ब्लाइड बीअट्री—जिसके जीवन का बीमा नहीं हो सकता	२३
सर्कस का एक अनोखा खेल	२५
हथिनी की कलामुंडी	२५
फोटोग्राफर की अनोखी उड़ान	२६
६ मन १३ सेर वज़नवाली स्त्री	२६
सबसे लंबा और सबसे ठिगना आदमी	२७
आपका तौल केवल ६ मन १५ सेर है	२७

विषय

विषय	पृष्ठ
बताइए इन दोनों में कौन बड़ा है	२७
ज़िराफ़ की-सी गर्दनवाली महिलाएँ	२८
लंबकण्ठों का दादा	२८
यह किसी पत्नी की चोच नहीं, आदमी का मुँह है	२९
सिकोड़ा और सुखाया गया कपाल-रहित नरमुंड	२९
पौने तेईस इंच लंबे नख	२९
खोपड़ी को शमादान बना लिया...	३०
आठ मन वज़नी बेड़ियाँ पहने रहनेवाला फ़कीर	३०
शाहदौला का चूहा	३१
दुम्बारी—एक फ़ीजी फ़कीर	३१
पौने नौ फ़ीट लंबी मूँछें	३२
एक और मुछुंदरनाथ	३२
इस युग का एक महान् आश्चर्य—हेलिन कैलर	३३
सत्रहवर्षीया नानी	३५
परदादा नहीं, लकड़दादा	३५
परिवार में सब कोई बौने	३५
छंगामल नहीं, चौबीसाचंद	३६
संसार भर में सबसे मोटा आदमी...	३६
प्रत्येक आँख में दो-दो पुतलियाँ	३६
मनुष्य के सींग निकल आए	३७
इस व्यक्ति को दोपहर को तारे दिखाई देते थे	३७
साँप की तरह दो जीभवाली सुन्दरी	३७
सात वर्ष का वृद्ध	३८
मनुष्य की पीठ में सींग	३८
अर्द्धाङ्गिनी	३८
दुरंगी आँखें	३८
इसे केवल रात को दिखाई देता है	३८
दृष्टि-विहीन भारतीय प्लीडर	३९
जन्मान्ध डाकिया	३९
अनोखा टोकरीवाला	३९
बुढ़िया से बालिका	४०
जुड़वाँ भाई और बहनें	४१
भेड़ियों द्वारा पाले गए मनुष्य के बच्चे	४३
पाँच बहनें जिनका जन्म एक साथ हुआ	४५
पाँचों भाई दीर्घजीवी हुए	४६
हवाई छतरी से उतरते हुए चुस्ट सुलगा लेनेवाला उड़का	४७
असाधारण गणितज्ञ	४७
सर्पभक्षी	४७
इसे फौसी का डर नहीं	४७

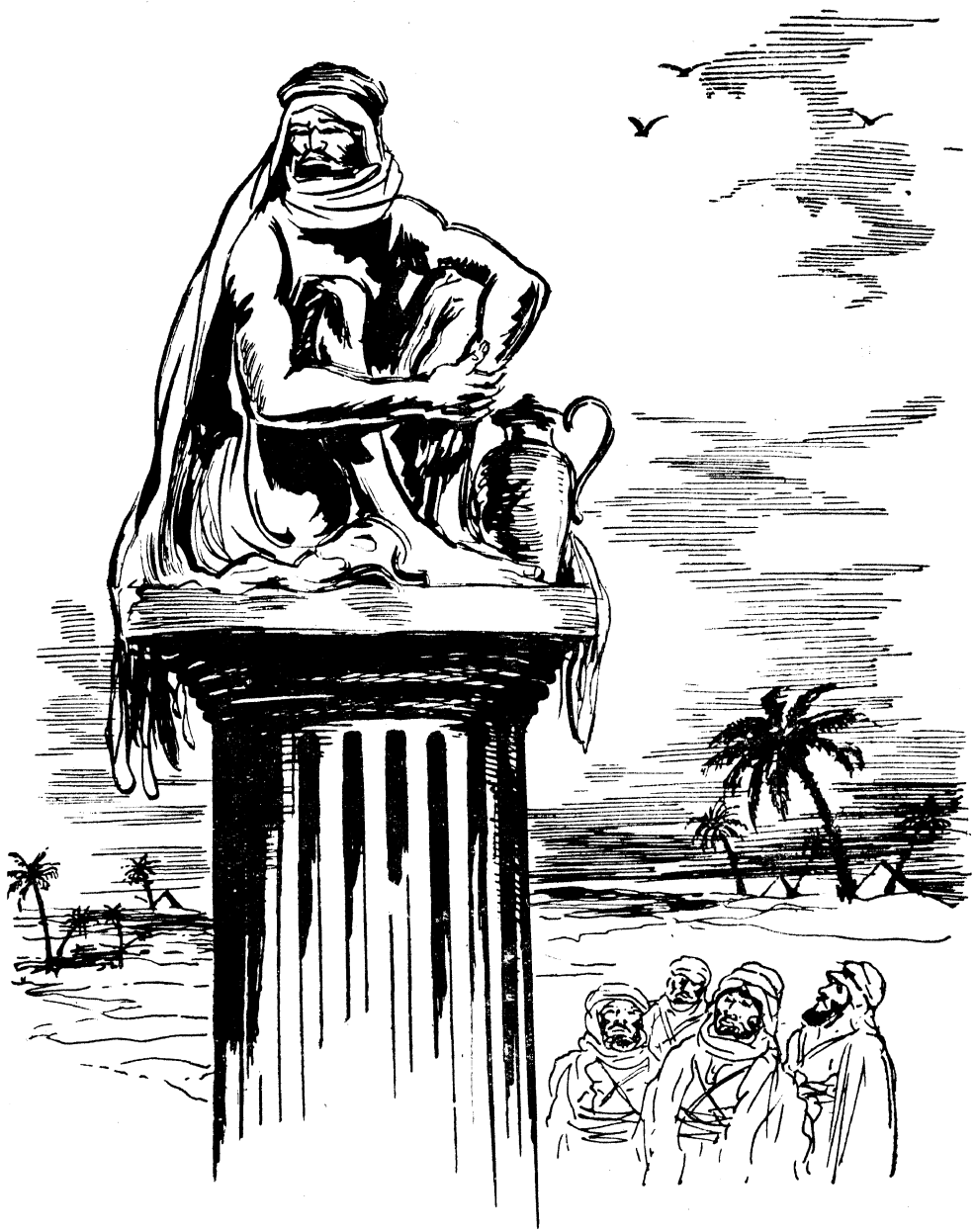
विषय	पृष्ठ
दहकते हुए अंगारों पर नंगे पाँव चलनेवाले ...	४८
अग्नि-भक्षक ...	४९
लाल अंगारे की तरह तपी हुई तलवार को चूम लेनेवाला ...	४९
एक साथ ही पाँच विभिन्न शब्द लिख देनेवाली महिला ...	५०
पाँव की उँगलियों द्वारा लिखाई ...	५०
मैसा-पल्टन ...	५१
मनुष्य की खोपड़ी से फुटबाल का खेल खेला गया ...	५२
जुआँ खेलने का सबसे अनोखा ढंग ...	५२
अल्यूमीनियम, काँच, लकड़ी और कागज़ के वस्त्र ...	५३
दुनिया का सबसे अद्भुत टोप ...	५३
झूबने का भय न रहा ...	५४
न्यूगिनी के सरदार का अनोखा ताज ...	५४
दलाईलामा—तिब्बत का विचित्र महंत ...	५५
न्यूयार्क का सबसे अजीब कुटुम्ब—वैन्डेल घराना ...	५५
स्वयं अपनी ही हत्या करने के अपराध में प्राणदण्ड ...	५७
सभापति के आसन पर नरककाल ...	५७
एक ही आदमी पाँच देशों का नौ-सेनापति रहा ...	५७
नेपोलियन ने घोड़े पर चढ़कर लालसागर पार किया था ...	५७
सम्राज्ञी या कैदी ...	५८
इवैञ्जलिन बूथ—७० वर्ष की वृद्धा होने पर भी जिसके विवाह के प्रस्ताव आ रहे हैं ...	५९
धनकुबेर रॉकफ़ेलर—जिसने ७५ करोड़ डालर दान में दिए ...	६१
चंद्रकाली—विश्व का सर्वश्रेष्ठ नर्तक ...	६३
भटियारे से बादशाह—बच्चा-सका का आदि-अंत ...	६४
नेपोलियन के संबंध में कुछ मनोरंजक बातें ...	६५
विलियम रैन्डलफ़ हर्स्ट—संसार का सबसे अधिक धनवान और शक्तिमान प्रकाशक ...	६६
जिम ब्रैडी—न्यूयार्क का हारन-उल-रशीद ...	६७
रेमान्ड डिट्मर्स—दुनिया का सबसे बड़ा सँपेरा ...	६९
फ़्लोरेन्ज़ ज़ीगफ़ैल्ड, जिसने आजीवन उत्तर में कभी एक पत्र भी नहीं लिखा ...	७०
चार्ल्स डिक्किन्स—शेक्सपीयर के नाटकों को छोड़ जिसके उपन्यास सबसे अधिक बिक रहे हैं ...	७२
नोबल-पुरस्कार-विजेता सिक्लेअर लुई, जो बिना पढ़े ही अपने अधिकांश पत्रों को चूल्हे में भोंक देता है ...	७४
प्रसिद्ध अभिनेत्री मैरी पिकफ़र्ड, जिसकी आय प्रति घंटा १००० डॉलर रही है ...	७६
प्रसिद्ध अभिनेत्री जोन क्रॉफ़र्ड, जिसका टखना टूट गया था फिर भी वह नाचती ही रही ...	७७
विश्व-विख्यात अभिनेत्री ग्रेटा गाबो, जो सिनेमा-जगत् की सबसे अधिक रहस्यमयी स्त्री है ...	७९
कौन कितने समय में ...	८०
मनुष्य कुल कितना खाता है ...	८२
दुनिया का एक अनोखा विद्यालय ...	८३
रेल से १०० मील की दूरी पर स्टेशन ...	८३
गाड़ी में सवारी के बदले दुम ...	८४

विषय	पृष्ठ
२५० फीट ऊँची सुराही ...	८४
हरिताम्बर-मणि में नक्काशी करके बनाया गया चीनी बौद्ध मंदिर का एक नमूना ...	८५
संसार की सबसे प्राचीन अँगूठी ...	८५
तीन पहिएवाली अनोखी मोटर ...	८६
हवाई ट्रामगाड़ी ...	८६
कुत्ते की शक्ति से चलनेवाली गाड़ी ...	८६
एक विचित्र गिर्जाघर ...	८७
जंजीरों से बँधी हुई बाइबिल ...	८७
समाधि फोड़कर वृक्ष निकल आया ...	८७
जुगनुओं द्वारा प्रकाशित गुफा ...	८८
गानेवाली मूर्ति... ...	८८
एक अद्भुत छतरी ...	८८
संसार के प्राचीनतम नगर ...	८८
आधीरात की दुर्घटना की खबर सुबह से पहले ही सारे संसार में पहुँचाई जा सकती है	८९
अनौखा हौआ ...	८९
न टूटनेवाला लचीला काँच ...	८९
गानेवाली बालू ...	९०
जहाँ पुरुष बुर्का पहनते हैं और स्त्रियाँ मुख खोले रहती हैं ...	९०
संसार का सबसे ऊँचा भरना ...	९०
नयनाभिराम सागर ...	९०
क्या सागर सूख जायेंगे ...	९०
धूप में हिस्सा-बाँट ...	९०
बड़े कुटुम्ब ...	९०
तुलसी-शालग्राम के विवाह का जुलूस ...	९१
कुछ बहुमूल्यवान् पुस्तकें ...	९२
कुछ बहुमूल्यवान् चित्र ...	९२
धूप से मीनार टेढ़ी हो गई ...	९३
चीनी लोगों की अनोखी पतंग ...	९३
मनुष्य की खाल का ढोल ...	९३
पेट्रोल से आग बुझाई जा सकती है ...	९३
१०० वर्ष के भीतर ही अमेरिका रेगिस्तान हो जायगा ...	९४
भूकम्पों द्वारा विनाश ...	९४
अनौखा चाकू ...	९४
वृक्ष या प्याऊ ...	९५
मारकर वापस लौट आनेवाला हथियार ...	९५
सिरके की नदी ...	९५
पत्थर के जंगल ...	९६
एक एकड़ भूमि का भोजन ...	९६
कुछ अनोखी बातें ...	९६

विषय	पृष्ठ
विचित्र जंतुशाला	६७
वृद्धों और लताओं का अद्भुत संसार	६८
संसार का सबसे बड़ा फूल—रैफ़लीज़िया	६८
झुककर प्रणाम करनेवाला खजूर का पेड़	६८
मधुमक्खी को कितनी मेहनत करनी पड़ती है	६८
नवजात द्वीप पर भी हरियाली कैसे हो जाती है	६८
मनुष्य टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता नहीं पसन्द करता	६९
दुनिया का सबसे ऊँचा वृक्ष	६९
एक वृक्ष पर १७ तरह के सेब	६९
यह मनुष्य नहीं, वृक्ष है	१००
क्या यह बचपन है	१००
५०० वर्ष पुराना फिर भी केवल ३ फीट ऊँचा वृक्ष	१००
दो सेर वज़नवाला नींबू	१००
सवा मन का कद्दू	१००
जुड़वाँ नारियल	१०१
पक्षी और पेड़ की लड़ाई में पेड़ ही विजयी हुआ	१०१
बिना काँटे का गुलाब	१०१
इस मुर्गी बेटे दुनिया में सबसे अधिक अंडे दिए	१०२
कुम्भकर्ण का वंशज	१०२
दूध देनेवाला बकरा	१०२
क्या सुअर यों लेटकर समाधि लगाता है	१०२
बिना दुम की बिल्ली	१०२
क्या यह चश्मा लगाए हुए है	१०२
१३॥ फीट ऊँचा घोड़ा	१०३
यह पेड़ का टूट नहीं, दीमक की बाँबी है	१०३
पाँच फीट लम्बा कैबुआ	१०३
मुर्गी मुर्गा बन गई	१०४
दाढ़ीवाला घोड़ा	१०४
बगुले घड़ियालों के दाँत कुरेदते हैं	१०४
एक दिन में एक करोड़ अंडे	१०४
जंगल के राजा सिंह से दिन में जानवरों को कोई भय नहीं	१०५
मनुष्य ने शेर को भी पालतू बना डाला	१०५
चोर चोरी करे, पड़ोसी मारा जाय	१०५
क्या आपको गैंडे के संबंध में ये अद्भुत बातें मालूम हैं	१०६
क्या सचमुच गैंडे की खाल दुर्भेद्य है	१०७
हाँ, उसकी खोपड़ी अवश्य दुर्भेद्य है	१०७
शुद्धमुर्गी का अनोखा भोजन	१०७
देखने में समान पर आचरण में बिपरीत	१०८
बया घोंसले में दिया जलाती है	१०८

विषय	पृष्ठ
उड़नेवाला सॉप	१०८
पेड़ों पर उलटा लटका रहनेवाला भालू	१०९
भालू ने कुआँ खोदकर प्यास बुझाई	१०९
१२ फीट लंबी छिपकली	१०९
मेंढक अपने अंडे पीठ पर लादे रहता है	१०९
बगुले की पंख सँवारने की कंघी	१०९
अनोखा घोंघा	११०
माँसाहारी पौधा	११०
मधुमक्खी और बर्र के डङ्क में अंतर	११०
भृङ्ग और रानी मधुमक्खी की ६००० और १३००० आँखें	११०
जंतु-जगत् की बंदूक	११०
रेशम बनानेवाला कीड़ा	११०
‘ईल’ मछली की अनोखी लंबी यात्रा	१११
चिमगादड़ नहीं, तोते	११२
दर्जिन चिड़िया	११२
शुतुमुर्ग पंजाब-मेल की रफ़्तार से दौड़ता है	११२
समुद्र की लहरों पर दौड़नेवाली अनोखी चिड़िया	११२
तरह-तरह की जिह्वाएँ	११३
मोमबत्ती की तरह जलनेवाली मछली	११४
विद्युत्मयी मछली	११४
एक मछली का अनोखा शस्त्र	११४
पानी की बूँदों द्वारा शिकार	११४
सितारे जैसी मछली	११४
हज़ारों वर्षों से बर्फ़ में कैद आदि-युग का भीमकाय जानवर	११५
हले एक मछली नहीं, स्तनपायी जानवर है	११५
ये भालू के बच्चे नहीं, कुत्ते हैं	११६
कँगारू की अनोखी गोद	११६
अनोखा सुअर	११६
यह मेंढक पीठ पर अंडे सेता है	११६
धरातल पर चलनेवाली मछली	११७
यह मछली अपने अंडे मुँह में लिये रहती है	११७
चोंच से लोहे को भी काट देनेवाली मछली	११७
लुकाछिपी का खेल खेलनेवाली मछली	११७
एक शुक्तिका की पाँच पीढ़ी की संतान परिमाण में पृथ्वी से आठ गुना बड़ी हो सकती है	११७
वैज्ञानिकों का सबसे विचित्र आविष्कार—यंत्रनर	११८
भविष्य के नाम वर्तमान का एक अनोखा संदेश	११९
दृष्टि-भ्रम	१२०

मिश्रित



ईसाई हठयोगी सायमन, जो ६६ वर्ष तक एक ऊँचे खंभे के सिरे पर बैठा रहा

६६ वर्ष तक खंभे के सिरे पर बैठा रहनेवाला हठयोगी !

यदि आपको ग्रीष्म के दोपहर या जाड़े की रात में किसी सुनसान जगह में खुले आसमान के नीचे एक पत्थर के खंभे के सिरे पर बिठा दिया जाय तो कितनी देर आप वहाँ टिक सकेंगे ? निस्संदेह ऐसी बेतुकी परिस्थिति की कल्पना मात्र से आपके रोएँ खड़े हो जायेंगे ! किन्तु आप मानें चाहे न मानें, पाँचवीं और छठी शताब्दी ईस्वी में मिस्र और सीरिया में एक ऐसे अनोखे ईसाई संप्रदाय के तपस्वी पाए जाते थे, जो ईसा के पुनरागमन की प्रतीक्षा में बस्ती से दूर सुनसान रेगिस्तान में ऊँचे खंभों पर चढ़कर जाड़ा, गर्मी, बरसात किसी की परवा न करते हुए बरसों एक ही आसन पर डटे रहते थे, और कभी-कभी तो उम्र-भर धरती पर नहीं उतरते थे ! जो श्रद्धालु दर्शक या भक्तगण उनके पास कभी जा पहुँचते उन्हीं से इन्हें खाने-पीने को कुछ मिल जाया करता । इन विचित्र हठधर्मियों में सबसे उल्लेखनीय हुआ 'संत सायमन', जो एलेक्जेंड्रिया (सिकन्दरिया) के समीप एक संगमरमर के खंभे के सिरे पर पूरे ६६ वर्ष तक अडिग बैठा रहा ! अचरज की बात तो यह थी कि उसके बैठने की जगह कुल तीन फीट व्यास के घेरे में थी—वहीं गर्मी-सर्दी, धूप-बरसात, जवानी-बुढ़ापा, स्वास्थ्य-अस्वास्थ्य, हर दशा में वह आसन जमाए डटा रहा ! उसी की तरह उसी नाम का एक और साधु भी हुआ है, जो ३७ वर्ष तक इसी प्रकार एक खंभे के सिरे पर बैठा रहा था ! इस अनोखे तपस्वी पर कवि टेनिसन ने एक कविता लिखी है ।

६३७ फीट ऊँची इमारत के कंगूरे पर १६ दिन !

उपर जिन असाधारण ईसाई हठयोगियों का जिक्र हमने किया है वे थे आज से डेढ़ हजार वर्ष पहले के प्राणी—उनकी कहानी एक बीते युग की कहानी है, जिस पर संभवतः आप एक-एक विश्वास न करेंगे । किन्तु नीचे अमेरिका के शिकागो नगर के एक दैनिक पत्र से जो उद्धरण हम दे रहे हैं, उसे पढ़कर तो बरबस आपको आश्चर्य से दाँतों-तले उँगली दबाना पड़ेगा, क्योंकि यह तो अपने ही जमाने की बात है—“शिकागो, जुलाई १६—आज 'जो पावर्स' उस ध्वजदंड (इमारत के शिखर पर झंडा फहराने के लिए लगाए गए डंडे) पर से नीचे उतरा, जहाँ वह पिछले कितने ही दिनों से चढ़ा हुआ था । उसका बदन कालिख और धूल से सना था । बाल बुरी तरह उलझे हुए थे । मुँह में से छः दाँत गायब हो चुके थे । पैरों में सूजन आगई थी और जब वह चलने की कोशिश करता तो तलवों में मानों सुइयों चुभने लगती.....किन्तु यह सब होने पर भी उसे अपनी जिन्दगी का पुरस्कार तो मिल ही चुका था—कितनी अमूल्य थी उसके जीवन के उन १६ दिन, २ घंटे और ३० मिनट की असाधारण स्मृति, जिन्हें शहर के मॉरिसन होटल के शिखर पर की मीनार के कंगूरे पर स्थापित ऊँचे ध्वजदण्ड पर गुज़ार कर वह नीचे उतरा था !”

यहाँ यह बता देना अनुपयुक्त न होगा कि जिस ऊँची इमारत के शिखर पर यह अनोखा खिलाड़ी टस से मस हुए बिना पूरे १६ दिनों तक टिका रहा, उसकी धरती से ऊपर तक की ऊँचाई लगभग ६३७ फीट थी !





सिपाही ने मुर्गी के दरबे में बैठकर अंडे से दिए !

किन्तु इन बैठकवाज़ों में सबसे अनोखा किस्सा नेपोलियन की फ़ौज के उस सिपाही का है, जिसने सज़ा के तौर पर मुर्गी के दरबे में बैठकर पूरे तीन भोल अंडे से दिए थे ! इस आदमी का नाम सावॉ था । कहते हैं, जब नेपोलियन की फ़ौज मिश्र में डेरा डाले हुए थी, सावॉ का जी काम से एकदम हट गया, वह कुछ भी करने-धरने से इन्कार कर हाथ-पैर पटककर बैठ गया । नेपोलियन ने जब उससे कैफ़ियत माँगी तो उसने कह दिया—‘मैं इतना कमज़ोर हूँ कि कुछ कर-धर नहीं सकता, केवल बैठा रह सकता हूँ ।’ इस पर सेनापति ने आज्ञा दी कि ‘अच्छा, इसे ऐसा ही काम दिया जाय, जिसमें इसे बैठना ही पड़े’, और वह एक मुर्गी के दरबे में अंडे सँजोकर उन पर बिठा दिया गया ! सावॉ भी था एक ही बैठकवाज़ ! वह बिना हिले-डुले लगातार अपने उस घोंसले में बैठा रहा और पूरे तीन भोल भर अंडे उसने अपने बदन की गर्मी से से दिए !

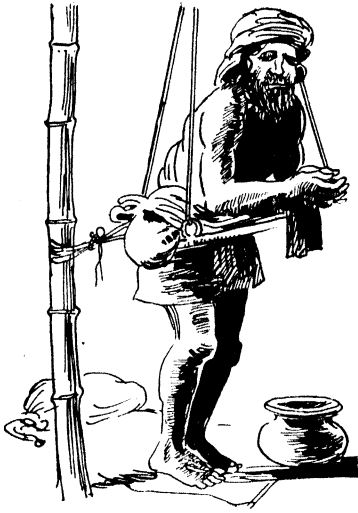
पंद्रह वर्ष तक नित्य सूर्य की ओर एकटक देखता रहा !

अब आइए, स्वयं अपने ही देश पर एक नज़र डालें । कुछ वर्ष हुए, काशी के एक घाट पर एक साधु रहता था । उसका बदन भुलसकर काला पड़ चुका था । टोंगे सूखकर लकड़ी-जैसी हो गई थीं । वह एकटक सूर्य की ओर देखते हुए दिन भर बैठा रहता । कहते हैं, पिछले पंद्रह वर्षों से वह ऐसा ही करता आ रहा था ।

शूल की सेज पर अठारह साल !

इसी तरह एक अमेरिकन यात्री को बनारस में अन्य एक साधु देखने को मिला था, जो एक गाड़ी पर, जिस पर सैकड़ों तीखी कीलें एकदम खड़ी गड़ी थीं, पिछले अठारह वर्षों से आसन जमाए हुए था !





हथेली पर चिड़ियों का घोंसला !

किन्तु ऊर्ध्वबाहु तपस्वियों में भी सबसे अधिक रोचक और आश्चर्यजनक कहानी अगस्त्य नामक उस बंगाली साधु की है, जिसने सन् १९०२ से १९१२ तक लगातार दस वर्ष तक अपना एक हाथ ऊँचा उठाए रखवा, यहाँ तक कि उसे ज्यों-का-त्यों टूट की तरह खड़ा देखकर चिड़ियों के एक जोड़े ने उसकी हथेली पर अपना छोटा-सा घोंसला बना डाला ! इस साधु के उदाहरण को देखते हुए क्या आश्चर्य है, यदि हमारे पुराणों में वर्णित उन अनोखे प्राचीन तपस्वियों संबंधी वे बातें अचरशः सत्य हों कि बरसों एक ही स्थान में बैठे-बैठे तप करते हुए अंत में उनके शरीर पर जंगली लताएँ चढ़ जाती थीं, भाड़ियाँ छा जाती थीं, अथवा जैसा कि महर्षि वाल्मीकि के संबंध में प्रख्यात है, उनके बदन के चारों ओर दीमक आदि जीव अपनी बाँबी बनाकर उन्हें मिट्टी से एक-दम ढँक देते थे ! आज भी इस देश में कुछ ऐसे प्रकार देखने को मिल सकते हैं, जो ज़मीन पर चित लेटकर अपने ओठों पर चुटकी-भर गीली मिट्टी धर लेते हैं और उस मिट्टी में सरसों या राई के कुछ बीज बो दिए जाते हैं। कहते हैं कि जब तक वे बीज अंकुरित हो उग नहीं जाते तब तक ये लोग ज्यों-के-त्यों ज़मीन पर वर्षा, धूप, या सर्दों में पड़े रहते हैं !

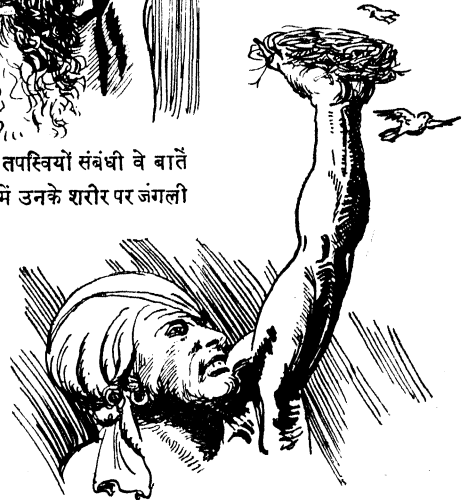
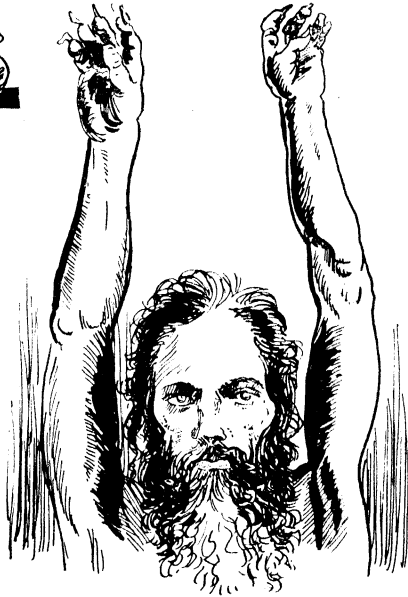
उत्थानपाद या सदैव खड़ा रहनेवाला तपस्वी !

कहते हैं, कलकत्ते के कालीघाट पर एक बार एक ऐसा साधु आया था, जो लगातार दस वर्षों से खड़े-ही-खड़े जीवन बिता रहा था ! वह यह व्रत लिये हुए था कि उम्र भर इसी प्रकार पैरों पर खड़े रहकर तपस्या करता रहेगा। उसने संहारे के लिए दो बाँसों की बल्लियाँ ज़मीन पर खड़ी कर रखी थीं, जिन पर से लटकते हुए एक झूलानुमा पलड़े पर अपने हाथ टिकाए वह खड़ा रहता था, किन्तु किसी भी हालत में वह अपने पैर धरती से ऊँचे नहीं उठने देता था !

लगातार २० वर्ष तक हाथ ऊँचे उठाए रखनेवाला साधु !

शूलशायी और उत्थानपाद वर्ग के तपस्वियों की भाँति एक और जाति के तपस्वी हमारे देश में होते हैं, जो एक निश्चित अवधि तक या जीवन-

भर अपने हाथ ऊँचे उठाये रखने का ही कठोर व्रत लिये रहते हैं। बाईं ओर जिस साधु का चित्र दिया गया है, उसको इस प्रकार अपने हाथ ऊपर उठाए रखते हुए बीस साल हो चुके थे ! ऐसे साधु 'ऊर्ध्वबाहु' कहलाते हैं। सच तो यह है कि वर्षों एक ही स्थिति में अपने हाथों को ऊँचा किए रहने के कारण उनकी पेशियाँ ऐसी जकड़ जाती हैं कि वे चाहें तो भी उन्हें नीचा नहीं कर पाते !





४० दिन तक धरती में गड़ा रहनेवाला योगी

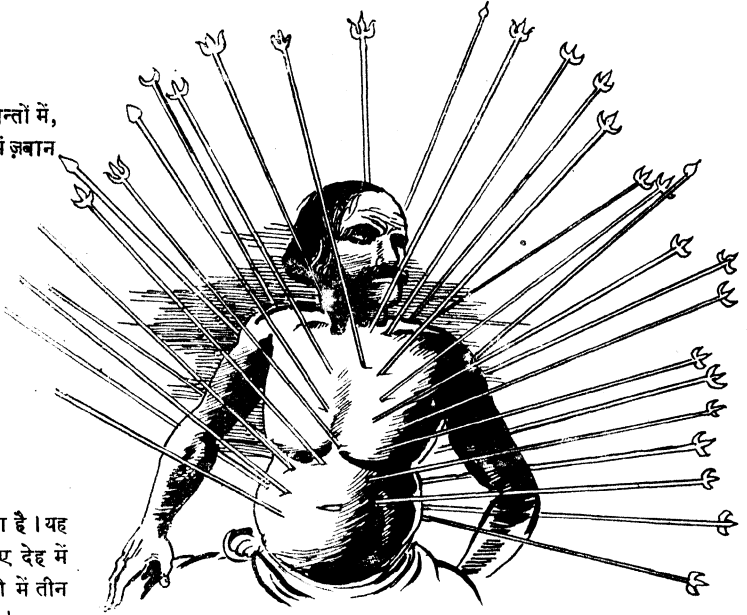
आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व लाहौर में पंजाब-केशरी महाराजा रणजीतसिंह के समक्ष हरिदास नामक एक साधु ने योग की एक अद्भुत करामात दिखाई थी, जिसका चित्र इस पृष्ठ पर दिया गया है। महाराजा की उपस्थिति में हरिदास के नाक-कान में मोम की डाटें लगाकर उसकी इच्छानुसार दोहरे पटवाले एक काठ के सन्दूक में उसे बन्द कर दिया गया और तब मुहरबंद मज़बूत ताला लगाकर वह सन्दूक एक बगीचे के बीच ज़मीन के नीचे बने हुए एक पुराने तहज़ाने में दफ़न कर दिया गया। बगीचे के फाटक को ईंटों से चुनकर बंद कर दिया गया और उस पर सन्तरी रात-दिन पहरा देते रहे। पूरे चालीस दिन बाद महाराजा रणजीतसिंह और जनरल वेंचूरा, कप्तान वारोल तथा डाक्टर मैकग्रेगर नामक तीन योरोपियनों के सामने वह सन्दूक पुनः निकाला गया और उसमें से योगी के शरीर को बाहर निकालकर उसके नाक-कान की मोम की डाटें अलग की गईं। डाक्टर ने नाड़ी देखी तो उसे बिल्कुल बंद पाया। तदुपरांत जब योगी के सिर पर गरम पानी के छींटे डाले गए तो उसने एक गहरी साँस ली और धीरे-धीरे वह होश में आने लगा। इस प्रकार चालीस दिन तक जीवित समाधि लेकर वह साधु पुनः इस प्रकार स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ मानों किसी गहरी लंबी नींद से उठा हो। दाहिनी ओर इस अद्भुत योगी का चित्र प्रदर्शित है।



त्रिशूलवेधी

राजपूताना आदि कुछ प्रान्तों में,
विशेषकर नवरात्रि में ज़बान

में शूल वेधकर, पीठ पर
कोड़े लगवाकर तथा शरीर
को अन्य कई प्रकार से यंत्र-
णाएँ पहुँचाकर देवता को
प्रसन्न करने के कुछ उग्र
तरीक़े काम में लाये जाते हैं।
किन्तु ये सब पूर्वज भारत के
सिंहपुर नामक स्थान के इस
विकट साधक के उदाहरण
के सामने नगण्य-से लगते हैं,
जिसका चित्र यहाँ दिया जा रहा है। यह
देवता को प्रसन्न करने के लिए देह में
पचास त्रिशूल भोंककर दोपहरी में तीन
मील तक पैदल चला गया था।



आँख के कोयों से साँपों की पिटाई उठा ला !

रुम करतब का आँखों-देखा हाल भारतीय सेना के एक अंग्रेज़ अफ़सर ने कई फ़ोटोग्राफ़ों के साथ एक बार प्रकाशित किया था। आइए, उसी के शब्दों में हम इस अविश्वसनीय-जैसी करामात का विवरण आपको सुनाएँ। उसने लिखा है:—

“मैं उन दिनों देवलाली नामक छावनी में टिका था और फ़र्स्ट रायल
आयरिश फ्यूज़ीलियर्स के लेफ़्टिनेण्ट ली मेअर तथा यार्कशायर रेजिमेण्ट
के लेफ़्टिनेण्ट मेकडोनाल्ड के साथ एक ही तंबू में ठहरा था। एक दिन
हमारे पास एक दुबला-पतला स्थानीय नवयुवक आया, जिसके साथ साँपों
की दो पिटारियों और बाजीगरों की सी एक थैली लिये हुए एक दाढ़ीवाला
आदमी भी था। हाथ की सफ़ाई के कुछ साधारण खेल दिखाने के बाद
उसने टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में कहा—‘साहब, दो रुपए दो तो एक अच्छा खेल
दिखाऊँ।’ जब रुपए दिए गए तो बाजीगर ने उन पिटारियों में से बड़ी
पिटारी को, जिसमें एक भारी अजगर बंद था, पोटली की तरह एक कपड़े
में बाँध लिया और उसके सिरे पर तराजू की नाई एक डोरी बाँध दी जिसके
ऊपरी छोर पर सीसे की दो खोखली प्यालियाँ टँकी थीं। इन प्यालियों में से
प्रत्येक को उस आदमी ने अपनी हर आँख के कोए पर इस प्रकार चिपका-
कर लगा लिया, जिससे उनके भीतर की जगह वायुशून्य हो गई। तब उसने
ज़ोर से आँखें मीच लीं और सीधे तनकर आँख के कोयों पर चिपकी हुई
उन प्यालियों से बँधी रस्सी के सहारे सारी पिटारी का वज़न उठा लिया।
जब खेल दिखाया जा चुका तो प्यालियों को आँखों से पृथक् करते समय
हवा के घुसते समय बड़े ज़ोर का शब्द हुआ। मैंने बाजीगर की आँखों की
जाँच की। वे धून चढ़ जाने से भयंकर रूप से लाल हो गई थीं। कुछ देर
तक उसे कुछ भी न दिखाई दिया, किन्तु फिर वह बिल्कुल ठीक हो गया।





कोई भाड़-फ़ानूस लटक रहा हो। वह उस तख्ते पर बैठे

हो मज़े के साथ उलटे लटके हुए चलती थी जैसे ज़मीन पर आदमी चला करते हैं। उस समय उसके बाल नीचे लटक आते और बाहें बाज़ू में फैली रहतीं। अपने इस अद्भुत खेल का रहस्य इस स्त्री ने मरते दम तक किसी को न बताया। लोगों का केवल अनुमान भर था कि वह संभवतः ऐसे विशेष प्रकार के जूते पहनती रही हो जिनके तले में ग्वास तरह से हवा भरी गई हो या ऐसी ही कोई व्यवस्था रही हो। इसी अनुमान के बल पर एक दुस्साहसी आदमी एक बार उसकी नक़ल करने को उतारू हो गया, पर ज्यों ही उसने तख्ते से औंधे लटककर चलने का प्रयास किया, वह धड़ाम से गिर पड़ा और अपनी जान से हाथ धो बैठा। पर मादाम आइमी लगातार हर रात को बिना किसी दुर्घटना के सर्कस में अपना यह खेल दिखाकर दर्शकों को चकित करती रही।

कीलों पर लेटकर घन की चोंट सह लेनेवाली महिला !

दाहिनी ओर जो चित्र प्रदर्शित है, वह कपोलकल्पित नहीं है। वह मार्टा फारी नामक एक जर्मन महिला का है, जो शूल-जैसी तीखी और एकदम खड़ी गड़ी कीलों से युक्त एक तख्ते पर चित लेटकर अपनी छाती पर फ़ौलाद की लगभग चार मन वज़न की एक निहाई रखवा लेती थी। तदनन्तर एक आदमी लोहे के एक भारी घन से उस निहाई पर ज़ोर की कई चोंटें मारता और यह अद्भुत शक्तिशालिनी महिला मुसकराती हुई वे चोंटें सह लेती थी !

अधर में औंधे लटकते हुए चलनेवाली नटी !

सन् १८८० ई० का सबसे अधिक आश्चर्य में डालनेवाला काम था मादाम आइमी नामक एक सरकस की नटी का अधर में लिर नीचे ओर पाँव ऊपर करके मकड़ी या मकड़ी की तरह छत से औंधे लटकते हुए चलने का वह अनूटा करतब, जिसकी नक़ल दुनिया में दूसरा कोई भी व्यक्ति आज तक न कर सका। इस अद्वितीय खेल को कर दिखाने के कारण ही लोगों ने इस महिला को 'मानवीय मक्का' (Human Fly) की उपाधि दे रखी थी। कहते हैं, इस काम के लिए सरकस की छत में एक लंबा तख्ता जड़ दिया जाता था। उस तख्ते की निचली सतह पर अपने पैरों के तलवे जमाकर यह अद्भुत नटी एकदम उलटे लटकते हुए इस प्रकार उस पर चलती थी, मानों किसी कमरे की छत पर कोई मकड़ी या छिपकिली चल रही हो ! किन्तु मकड़ी या छिपकिली तो अपने पैरों के विशेष प्रकार के नाखूनों या रोश्रों से छत की सतह से चिपककर चल पाती हैं, पर यह महिला तो केवल अपने पैरों के तलवे ही उक्त तख्ते से सटाकर इस प्रकार हाथ-पैर छोड़कर औंधी लटक जाया करती थी मानों



बालों से छः मन की चट्टान उठा लेनेवाली वीरबाला !

आधुनिक युग में मनुष्य के शक्ति-प्रदर्शन के जितने भी उदाहरण

हमें मिलते हैं उनमें जगत्विख्यात भारतीय वीर महिला ताराबाई के करतब अपना एक निराला स्थान रखते हैं। ताराबाई का नाम हमारे देश में आज दिन महिलाओं के क्षेत्र में शारीरिकशक्ति-साधना का प्रतीक बन गया है, जैसा कि राममूर्ति का नाम पुरुषों के क्षेत्र में है। इस असाधारण शक्तिसंपन्न महिला को हुए कोई ज्यादा वर्ष नहीं हुए और अभी कई लोग ऐसे मौजूद हैं, जो उसके अद्वितीय करतब स्वयं अपनी आँखों देख चुके हैं। यों तो ताराबाई कई प्रकार के प्रदर्शन करती थी, किन्तु उसके सबसे उल्लेखनीय करतब दो थे— एक तो अपने बालों की लंबी लटों से लगभग छः मन की पत्थर की चट्टान उठाने का खेल और दूसरा अपने ललाट पर एक बल्ले की नोक गड़ाकर उसके ज़ोर से बीस-पचीस आदमियों से लड़ी हुई एक भारी गाड़ी को ठेलने का अद्भुत करतब ! पहले खेल को दिखाते समय वह कुछ आगे को झुकती हुई-सी खड़ी हो जाती और तब प्रत्येक बाजू को दो-दो मोटी गुँथी हुई चोटियों के रूप में लटकते हुए उसके लंबे केशपाश से धरती पर पड़ा हुआ छः मन वज़न का एक भारी पत्थर रस्सियों द्वारा बाँध दिया जाता था। बस, देखते

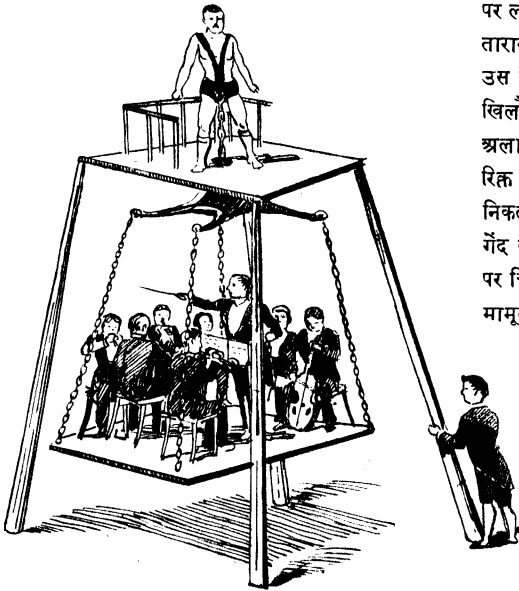
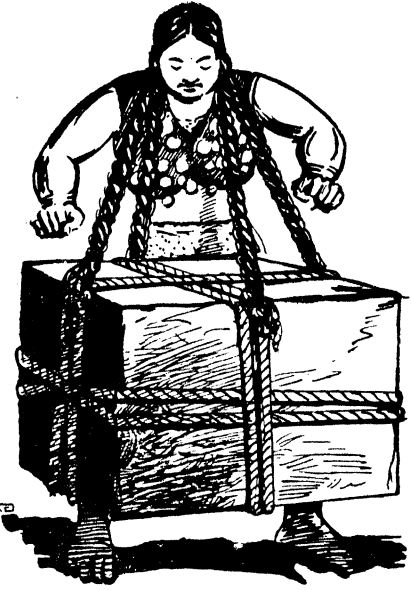
ही देखते वह केवल अपने बालों के ही बल पर उस पत्थर को तौलकर ऊँचे उठा लेती थी और सीधे तनकर खड़ी हो जाती थी ! दूसरा खेल जो और भी अद्भुत था यह था कि एक बड़ी गाड़ी में बीस-पचीस आदमी बिठा दिए जाते और उसके सिरे

पर लंबान की ओर एक बल्ले मज़बूती के साथ लगा दिया जाता था। ताराबाई उसी तीखे बल्ले की नोक पर अपना ललाट टेककर ज़ोर से उस भारी गाड़ी को कई गज़ तक ऐसे ठेले देती थी मानों वह कोई खिलौना हो, और इससे एक कुंकुम की बिंदी जैसे रक्त के चिह्न के अलावा उसके ललाट पर कोई घाव नहीं हो पाता था ! इसके अतिरिक्त ज़मीन पर लेटकर अपनी गरदन या जॉधों पर से भारी हुई गाड़ी निकलवा लेना, सीने पर तीस-चालीस मन का पत्थर रखवाकर उसे गेंद की तरह उछाल देना, धरती में सीधे गड़े हुए तीखे बल्ले की नोक पर चित लेटकर शरीर का वज़न साधना आदि करतब तो उसके मामूली खेलों में से थे !

योरपीय पहलवान का अद्भुत शक्ति-प्रदर्शन !

सर्कस के खेल किसी चालाकी पर निर्भर नहीं होते।

उन्हें कर दिखाने के लिए असाधारण मानसिक तथा शारीरिक बल की आवश्यकता होती है। उदाहरणार्थ, उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दिनों में रस्सो नामक एक योरपीय पहलवान एक ऊँचे प्लेटफ़ॉर्म के बीच से एक छेद करके एक पलङ्गेनुमा दूसरे प्लेटफ़ॉर्म को, जिस पर बाजा बजानेवालों की एक पूरी मंडली रहती थी, अपनी गर्दन में ज़खीर से बाँधकर खड़ा हो जाता था !



प्रो० राममूर्ति के अद्भुत करतब !



आज दिन कौन भारतवासी ऐसा होगा, जिसके लिए महान् शक्तिशाली स्वर्गीय प्रोफ़ेसर राममूर्ति का नाम एक अपरिचित नाम हो ! इस महान् मल्ल को यदि हम इस युग का 'भीम' कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। स्वर्गीय राममूर्ति का सर्कस अपने ज़माने में सारे संसार में अपने दंग का एक ही सर्कस था। यद्यपि बाद में उनके कई खेलों को दूसरे लोगों ने भी दिखाना शुरू किया, किन्तु उनको पहले-पहल कर दिखाने का श्रेय राममूर्ति को ही है। यों तो वे शक्ति-प्रदर्शन के बहुतेरे अनोखे करतब कर दिखाते थे, किन्तु उनमें तीन-चार खेल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनमें पहला था अपनी छाती पर एक बड़े हाथी को खड़ा कर लेने का खेल, जिसे संसार में पहले-पहल राममूर्ति ही ने कर दिखाया। दूसरा था पूरी ताकत के साथ चल रही एक मोटरकार को रोकने का करतब, जिसे दिखाते समय मोटर को उनके शरीर में बँधी हुई एक रस्सी से बाँधकर स्टार्ट किया जाता था और वह वहीं भड़भड़ करती हुई खड़ी रह जाती थी ! कहते हैं, प्रयाग की सुप्रसिद्ध प्रदर्शनी में तो उन्होंने इस प्रकार एक साथ ही दो तरफ़ से दो मोटरों को रोक-कर दर्शकों को दंग कर दिया था ! उनका तीसरा खेल था लोहे की मोटी ज़ंजीर को अपनी भुजाओं और सीने के आसपास लपेटकर इस प्रकार तोड़ देना मानों वह इस्पात की नहीं बल्कि कच्ची मिट्टी की बनी हो ! यों तो कई सर्कसवालों ने बाद में इस तरह ज़ंजीरें तोड़कर दिखाना शुरू किया, परन्तु जितनी मोटी और भारी ज़ंजीर राममूर्ति तोड़ते थे वैसी सिवा उनके एक शिष्य के दूसरा कोई कभी न तोड़ पाया। इसके अलावा वह एक अद्वितीय खेल सौ मन वज़न की एक भारी चट्टान को अपनी पीठ पर उठाकर और उसे अपने ही बल से ऊँची उछालकर तथा अपने बदन के सहारे से थामकर दिखाया करते थे, जो उनके बाद फिर कोई नहीं कर पाया। उनका यह खेल मानवीय शक्ति से परे का कार्य प्रतीत होता था।

प्रो० राममूर्ति के उपर्युक्त आसाधारण शक्ति-प्रदर्शन संबंधी करतबों के साथ-साथ यदि उनके शरीर के नाप के कुछ आँकड़े भी पाठकों की जानकारी के लिए हम यहाँ दे दें तो अनुपयुक्त न होगा। प्रो० राममूर्ति के सीने का घेरा साधारण अवस्था में ४८ इंच रहा करता था, किन्तु फुलाने पर वह ५८ इंच हो जाता था, और सिकोड़ने पर वह ४२ इंच तक घट जाता था ! यह एक उल्लेखनीय बात है कि बचपन में राममूर्ति बहुत ही दुबले-पतले और कमज़ोर थे और उन्होंने केवल अपने हृद् संकल्प और निरंतर अभ्यास के बल पर ही इतना शक्ति-संचय करके अपना बदन कमाया था। वह अपने इन शक्ति के कामों का सारा श्रेय भारतीय व्यायाम-प्रणाली और प्राणायाम को देते थे और उनका कहना था कि किसी भी मनुष्य के लिए अभ्यास द्वारा उन्हीं जैसा स्वास्थ्य प्राप्त करना संभव है।

नटों की अद्भुत कला !

प्रायः भारत के प्रत्येक प्रान्त में ऐसे नट

देखने को मिलते हैं, जिनके करतबों के सामने अच्छे-अच्छे सर्कसवालों के खेल भी फीके जँचते हैं। बाईं ओर का चित्र देखिए। कुछ नट बाँसों के ऊपर अपनी कला दिखा रहे हैं। एक के सिर पर पाँच घड़े रखे हैं और वह ऊँचे बाँस के ऊपर बैठकर तुरही बजा रहा है। उसके सामनेवाला व्यक्ति दूसरे बाँस पर अपने शरीर को साधकर पाँच घड़ों को सिर पर रखे और हाथ फैलाये फिरकनी-सा नाच रहा है ! इन खेलों को दिखाते समय आश्चर्य का अवसर

तो तब आता है जबकि अपने सिर पर के घड़ों को नट एक-एक करके दूसरे व्यक्ति को देता जाता है और स्वयं सिर के बल बाँस से नीचे उतर आता है ! जब तक वह नट ऊपर अपनी कला दिखाता रहता है, नीचे उसका एक साथी अपनी ढोलक बजाता रहता है और होनेवाले करतब की सूचना दर्शकों को देता रहता है। पूर्वकाल में ज़मींदार इन नटों का संरक्षण करते थे। वे नटों को निर्वाह के लिए ज़मीन दे देते थे, कारण ग्रामीण जनता में यह विश्वास जड़ जमाए हुए था कि जितने लम्बे बाँस पर चढ़कर नट करतब दिखाएँगे, उतने ही लम्बे उनके खेत के पौधे होंगे।

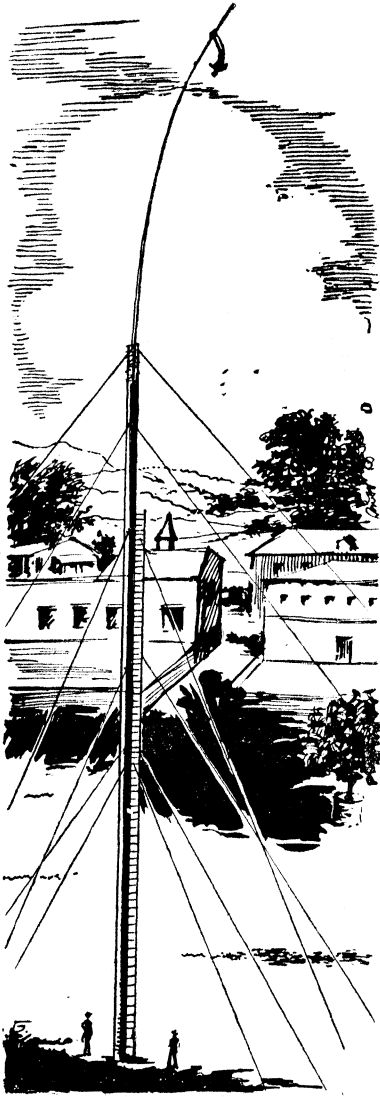
प्रस्तुत चित्र के मध्य भाग के ऊपरी अंश पर भी गौर कीजिए। उसमें एक खड़े

हुए आदमी के सिर पर दो गट्ट एक-दूसरे के ऊपर रखे हैं, जिनके ऊपर एक और घड़ा रख दिया गया है। उस घड़े के ऊपर एक और आदमी हाथ फैलाये खड़ा है। इस संतुलन-क्रिया की चरम सीमा दिखाने के लिए नीचेवाला नाच भी रहा है !

मैक्सिको-वासियों का विचित्र रज्जु-चृत्य !

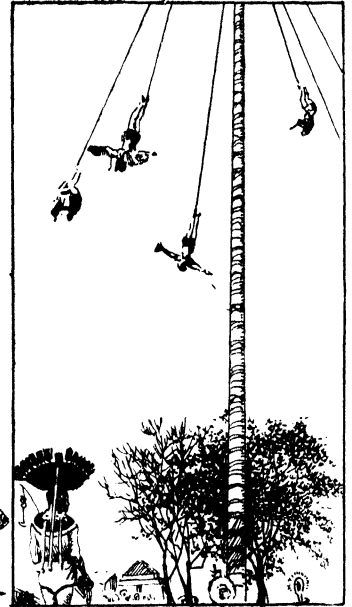
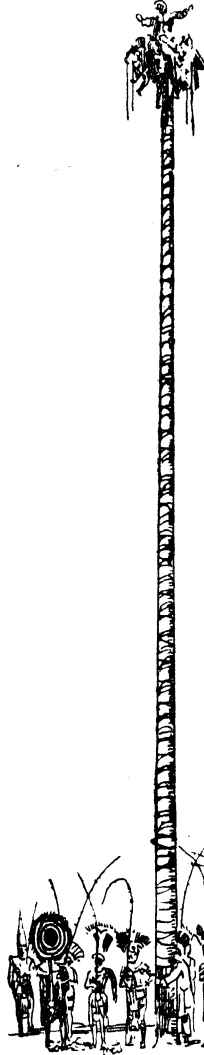
नटों की कला केवल भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं है, अन्य देशों में भी ऊँचे-ऊँचे खंभों, बाँसों आदि पर चढ़कर वहाँ के लोग अपने-अपने ढंग से बड़े अनोखे खेल दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, मैक्सिको-वासियों के इस अद्वितीय करतब पर ही शौर कीजिए जिसका कि चित्र नीचे प्रदर्शित है। यह खेल इस प्रकार होता है कि लगभग पचास फ़ीट ऊँचे एक खंभे के सिरे पर लगे हुए एक घूमते हुए तख्ते पर चढ़कर एक साथ छः नर्तक नाचते हैं।

उनमें एक व्यक्ति तो उस तख्ते के ऊपर खड़ा होकर नाचता है और शेष पाँच उसकी कोर पकड़कर लटकते हुए अपने बदन के झटके से तख्ते को घुमाते हुए चकर काटते हैं। तदुपरांत अपने पैरों में उस खंभे के सिरे पर लिपटी हुई एक रस्सी के छोर बाँधकर वे सब नीचा सिर किए हुए उस तख्ते पर से कूद पड़ते हैं और ज्यों-ज्यों उस रस्सी की गेंडुरी खुलती जाती है त्यों-त्यों खंभे के आसपास वेगपूर्वक चकर खाते हुए सराटे के साथ नीचे ज़मीन पर उतर आते हैं !



१३७ फ़ीट ऊँचे बाँस पर शरीर-संतुलन !

ऊपर के चित्र में फ़्रॉलीन मेयर नामक एक सत्रह-वर्षीय नटी भंडा फहराने के १३७ फ़ीट ऊँचे एक बाँस के सिरे पर अपने आपको उलटा लटकाकर तथा हाथ छोड़कर बदन साध रही है !

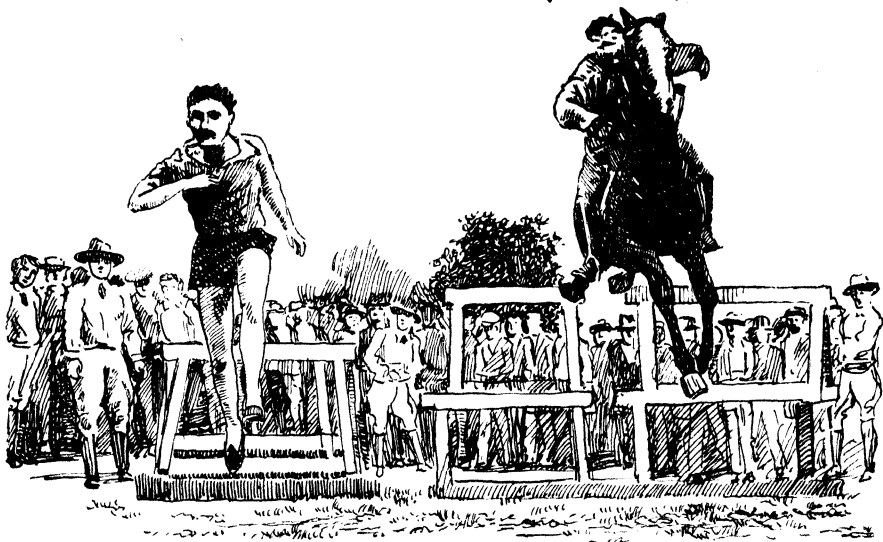


टट्टियों को लॉपकर दौड़ने की होड़ में आदमी ने घोड़े को हरा दिया !

घुड़ दौड़

की

प्रतियोगिता-
ओं के समा-
चार तो आए
दिन आखबारों
में छपते ही रहते
हैं, किन्तु दौड़
में घोड़े और
मनुष्य की होड़
सचमुच ही
एक निराली
घटना कही जा
सकती है।
कुछ ही समय
पहले की बात
है, अमेरिका के



फोर्ट ओगल थार्प नामक स्थान में इस बात का निर्णय करने के लिए १२०
गज़ की एक दौड़ का आयोजन किया गया था कि टट्टियों को लॉपते हुए
दौड़ने में आदमी तेज़ रहता है या घोड़ा। इस अनोखी प्रतिस्पर्धा में टी०
जी० टाउन्स नामक एक मशहूर अमेरिकन दौड़नेवाले तथा अमेरिका
के एक अत्यंत वेगगामी घोड़े ने भाग लिया था। यद्यपि मार्ग में घोड़े के
लॉपने के लिए टट्टियों की संख्या मनुष्य के लॉपने के लिए बनाई गई टट्टियों
की अपेक्षा सिर्फ़ आधी ही थी, फिर भी नतीजा यह रहा कि मनुष्य ही ने
घोड़े को मात किया—वह दौड़ने में घोड़े से छः इंच आगे निकल गया !

तीन घंटे में तीस मील की दौड़ !

उपर्युक्त अद्वितीय प्रदर्शन के अतिरिक्त हमें और भी कितने ही उदा-
हरण मनुष्य की दौड़ने की शक्ति के मिलते हैं, जिनमें सबसे
उल्लेखनीय यूनान की प्रसिद्ध 'मराथान की दौड़' नामक उस ऐतिहासिक
घटना का है, जिसकी स्मृति में आज भी उसी नाम से कई लंबी दौड़ें
दौड़ी जाती हैं। इस दौड़ का सूत्रपात यों हुआ था कि ४८० ईस्वी पूर्व
मराथान के सुप्रसिद्ध युद्ध में यूनानियों द्वारा ईरानियों की पराजय का
समाचार युद्धक्षेत्र से राजधानी तक पहुँचाने के लिए एक संदेशवाहक
लगातार २६ मील तक दौड़ा चला गया था, पर दौड़ के अंत में वह
थकान के मारे गिरकर मर गया। इसके बाद तो उस घटना की स्मृति
में इतने ही फ़ासले की कई दौड़ें दौड़ी गईं, जिनमें अब तक कम से
कम लिया गया समय २ घंटा, ३० मिनट और ५७ सैकंड है। हमारे देश में महाराष्ट्र के एक युवक सदाशिव विश्वनाथ
दातार ने एक बार २ घंटे ५७ मिनट में ३० मील की दौड़ पूरी की थी !





६० दिनों तक एक आँख बंद !

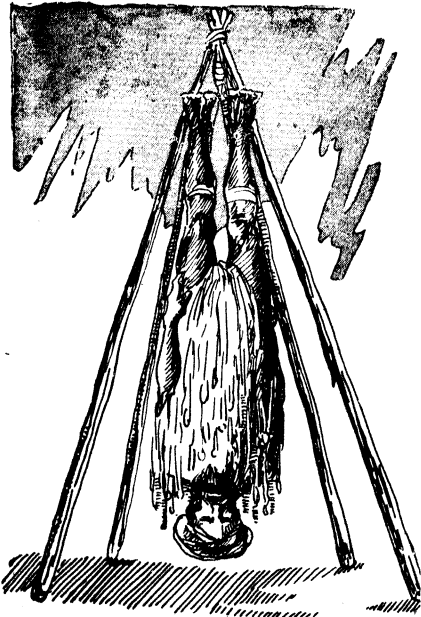
हैर हैलरिक लॉफ़र नामक इस आदमी ने एक बार बिना अनुमति के कहीं भौंक लेने के अपराध के प्रायश्चित्स्वरूप यह संकल्प किया कि अपनी दाहिनी आँख को ३ महीने तक न खोलूँगा ! और उसने अपना यह संकल्प पूरा किया !

मस्तक द्वारा धूम्रपान !

फ्रैंक ब्राउन नामक इस व्यक्ति के ललाट की हड्डी में एक बार दुर्घटनावश ऐसा स्थायी छेद हो गया कि वह उसके द्वारा सिगरेट पी लेता था । वह सिगरेट सुलगाकर अपने मस्तक के उस छेद में लगा देता और कश खींचकर मुँह से धुँआ निकालता रहता था !

क्या उसके हड्डियाँ न थीं ?

सर्कस के खिलाड़ी तरह-तरह के खेल दिखाते हैं, किन्तु जो काम मैरिनेली नामक यह व्यक्ति दिखाता था, वह दूसरा कोई न दिखा सका । वह अपने बदन को तरह-तरह से घुमा-फिराकर ऐसे मोड़ लेता था, मानों उसमें हड्डियाँ ही न हों !



अधोमुखी

बाई और एक

टिकटी पर जो आँधे लटकते हुए साधु महाराज हैं, वह इस प्रकार लगातार नित्य तीन घंटे लटका करते थे ! कई साधु तो इस तरह लटककर धूनी भी तापते हैं !!



जीभ द्वारा ललाट का स्पर्श !

हरिदास नामक इस साधु ने विशेष प्रकार की शल्य-

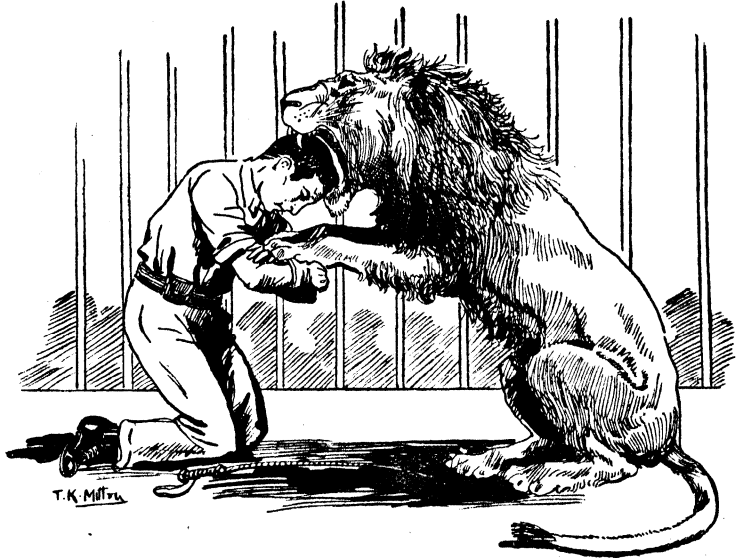
क्रिया और अभ्यास द्वारा अपनी जीभ को ऐसी बना ली थी कि उसे बाहर निकालकर और ऊँचा उठाकर वह उसके सिरे से अपना ललाट छू लेता था !

क्लाइड बीअटो

जिसके जीवन का बीमा
नहीं हो सकता !

बाध उसके शरीर को नखों
से खरोंच चुके हैं और

उसके मांस का स्वाद चख चुके
हैं। सिंह के भी दाँत उसकी
टोंगों की हड्डी तक घुस चुके हैं;
और वह हाथी से भी ज़ख्मी हो
चुका है। यही नहीं, रीछ के पंजों
से भी उसका शरीर क्षत-विक्षत
हो चुका है और तेंदुए तथा
लकड़बग्यों ने भी उसे काटा है।
अपने जीवन में इक़्स बार बुरी
तरह चीथी हुई दशा में वह
अस्पताल भेजा जा चुका है और



अन्तिम बार तो, जबकि उसके सबसे अधिक ज़ख्मवार सिंह नीरो ने उसके लगभग प्राण ही ले लिये होते, उसे पूरे दस सप्ताह तक अस्पताल में रहना पड़ा था और अपनी एक टाँग से वह लगभग हाथ ही धो बैठा था !

निसंदेह क्लाइड बीअटो का काम बहुत ही जान-जोखिम का है। प्रतिदिन दो बार उसे साक्षात् मृत्यु का सामना करना पड़ता है। बीमा-कम्पनियाँ जानती हैं कि किसी भी क्षण पशुओं के नख और पंजे उसे चीरकर फेंक दे सकते हैं। इसीलिए तो वे उसके जीवन का बीमा नहीं करतीं। दुनिया भर के सर्कसवालों में वही एक ऐसा खिलाड़ी है, जिसके जीवन का बीमा नहीं हो सकता !

वह कभी-कभी सर्कस के काम को छोड़ने की इच्छा भी करता है, किन्तु मुनाबत तो यह है कि और कोई कार्य उसे पसन्द भी तो नहीं ! उसका कहना है कि यदि उसने कोई दूसरा काम किया भी तो उसमें उसका जी न लगेगा और वह कुछ ही दिन में मर जायगा ! और जब मरना ही है तो मन के प्रतिकूल काम करके मरने की अपेक्षा अपने मन का काम करते हुए मरना कहीं अच्छा है !

सर्कस में काम करते हुए क्लाइड बीअटो का लगभग आधा जीवन बीत चुका है। उसका जन्म अमेरिका के ओहिओ प्रदेश में हुआ था। और जब वह एक छोटा बालक ही था तभी से सर्कस के पीछे वह पागल था।

एक दिन की बात है। बार्नम और बेली का सुप्रसिद्ध सर्कस उसके नगर में आया हुआ था। एक धोबी ने अपनी दुकान में उसका एक पोस्टर लगा रखा था। बहुत ही सुन्दर पोस्टर था वह—पीले, बैंगनी और लाल रङ्गों में छपा हुआ। उसमें एक बड़ा पिंजरा बना हुआ था, जिसमें अफ्रीका के अनेक दहाड़ते और गुर्राते हुए शेरों और चीतों को एक वीर खिलाड़ी अपने कोड़े से वश में किये हुए था ! बीअटो भागकर धोबी की दुकान में घुस गया और उससे वह पोस्टर उसने माँगा। दुकानदार ने कहा, 'पोस्टर तो मैं तुम्हें दे सकता है, किन्तु एक शर्त पर। तुम्हें एक सप्ताह तक मेरा काम करना होगा।' बीअटो ने यह शर्त स्वीकार कर ली।

उस समय बीअटो की आयु केवल बारह वर्ष की थी। परन्तु तब भी उसके पास अपने कुछ दहाड़नेवाले, गुर्रातेवाले जन्तु थे। कम-से-कम वह तो उन्हें ऐसा ही समझता था। ये थे उसके पाँच कुत्ते, जिनको उसने बैठना, भीख माँगना, कलामंडी खाना और पिछली टाँगों पर चलना सिखाया था ! कभी-कभी वह उस दुकानदार से पाया हुआ वह रङ्ग-बिरङ्गा पोस्टर लगाकर पड़ौस के बच्चों को सर्कस की तरह अपने कुत्तों के खेल दिखाया करता था। उसके पश्चात्

प्रतिवर्ष ही जब नगर में कोई सर्कस आता तो वह वहाँ काम पाने की आशा में जाता। किन्तु सदैव उसको यही उत्तर मिलता, “तुम अभी बहुत छोटे हो।”

अंत में एक बार ग्रीष्म ऋतु में जब एक सर्कस नगर छोड़कर जाने लगा तो क्लाइड बीअट्री भी उसके साथ हो लिया। उसका हृदय एक नए उल्लास से धड़क रहा था। तीन दिन तक उसके माता-पिता पागलों की भाँति उसकी खोज करते रहे और उसकी मा ने रोते-रोते इसके बाद भी अनेक रातें बिताईं। तब एक पत्र आया। उसमें लिखा था कि उसको सर्कस में पिंजरा साफ़ करने का काम मिल गया है। उस समय वह केवल १५ वर्ष का था और उसको प्रतिमास पाँच डालर वेतन मिलता था।

दस वर्ष के भीतर ही ओहियो के इस बालक की ख्याति सारे अमेरिका में फैल गई और यह माना जाने लगा कि सर्कस के इतिहास में उस जैसा जन्तुओं को बस में करनेवाला कोई दूसरा खिलाड़ी न हुआ। उसने एक बार ऐसे साहस का एक खेल दिखाने की सूचना दी कि सर्कसवाले तक उसको असम्भव बताने लगे। और जब उन्होंने स्वयं अपनी आँखों के सामने उस खेल को होते देखा तो उन्होंने बीअट्री को पागल समझा और कहा कि अब उसके जीवन का मूल्य फूटी कौड़ी के बराबर भी नहीं रहा। उसने किया क्या था? उसने चालीस क्रोधी शेरों और बाघों को एक ही पिंजरे में बन्द कर दिया था और कोड़े के बल जो भी खेल उनको सिखाये गये थे, वे सब उसने उनसे खिलाए। कोई आश्चर्य नहीं कि सर्कसवालों में बड़ी हलचल मची, क्योंकि सिंह और बाघ वस्तुतः एक दूसरे के घोर शत्रु होते हैं। वे देखते ही लड़ मरते हैं। पर बीअट्री ने कई बार इन रक्त के प्यासे जन्तुओं से भरे पिंजरे में घुसकर उनसे सब खेल खिलाए हैं।

क्लाइड बीअट्री का कहना है कि सिंहों और बाघों को वश में रखना कुछ भी कठिन नहीं, ये इतने भयानक नहीं होते। वह सिंह, बाघ, चीते, रीछ, लकड़बग्घा और हाथी सबको पड़ताल चुका है और उसका अनुभव यह है कि इनमें सबसे अधिक खतरनाक जन्तु उत्तरी ध्रुवनिवासी रीछ है। और सबसे अधिक कठिन खेल है हाथी की पीठ पर बाघ की सवारी कराने का खेल। एक दिन यह खेल दिखाते समय वह हाथी द्वारा मरते-मरते बचा।

आपने यह सुना होगा कि अनेक खिलाड़ी जन्तुओं को उनकी आँख में आँख गड़ाकर वश में कर लेते हैं। पर बीअट्री का कहना है कि यह नितान्त भ्रूट है। वह तो उनकी आँखों में आँखें गड़ाकर केवल यही खोजता है कि वे चाहते क्या हैं और करेंगे क्या।

बीअट्री का यह भी कहना है कि किसी भी खिलाड़ी ने कभी अपना सिर सिंह के मुख में नहीं रखा है, वास्तव में देखनेवालों को केवल ऐसा भास होता है। और ऐसा काम तो केवल कोई पागल ही भले करे, क्योंकि खतरे के अलावा सिंहों के मुखों से ऐसी दुर्गन्ध निकलती है कि बिना गैस-मास्क पहने ऐसा करना असम्भव है।

जन-साधारण में यह भी भ्रान्ति फैल गई है कि लाल ताते चिमटों से क्रोधी जन्तुओं को वश में किया जा सकता है। बीअट्री का कहना है कि यदि कोई खिलाड़ी ऐसा करने का दुस्साहस करे तो उसे प्राणों से ही हाथ धोना पड़ेगा। वस्तुतः केवल कुर्सी, कोड़ा, और बिना कारतूस के रिवाल्वर से ही काम लेना पड़ता है।

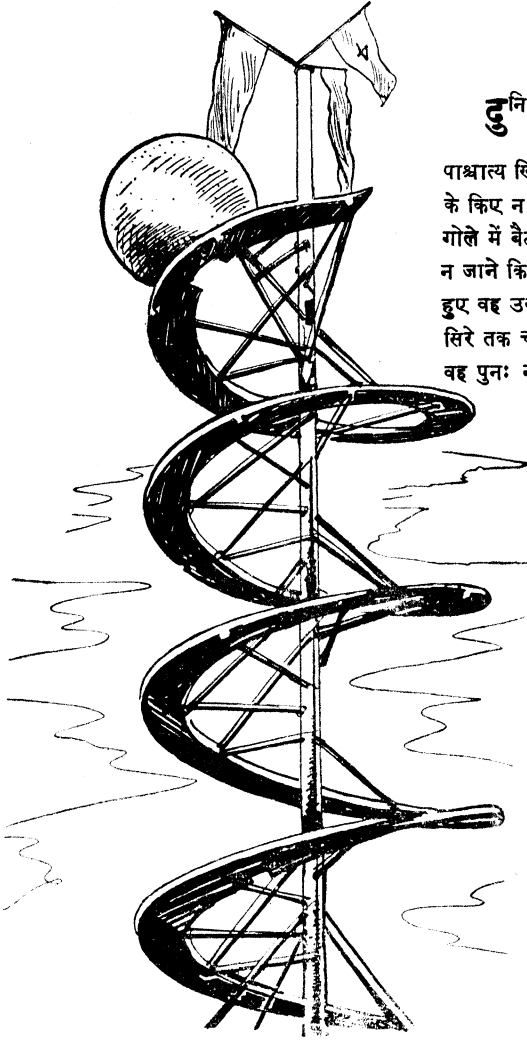
जब बीअट्री लोगों को यह कहते हुए सुनता है कि उसके सिंह पालतू हैं तो उसे बहुत दुःख होता है। वस्तुतः न उसके सिंह ही पालतू हैं, और न बाघ ही। वे एकदम जङ्गली हैं।

क्लाइड बीअट्री का एक अत्यन्त मनोरञ्जक खेल है रीछ को कलामुंडी खिलाना। उसने इस खेल का खिलाना एक बार अकस्मात् ही जान लिया था। बात यह थी कि एक दिन वह पिंजरे के भीतर था, जब एक रीछ दाँत निकाले, पक्षों को कसे और क्रोध से उन्मत्त होकर उस पर झपटता हुआ लपका। यह रीछ उसे मार डालने को आया था और उसका आक्रमण इतना आकस्मिक और भयानक था कि बीअट्री को उस क्षण केवल एक ही काम करने की सूझी। उसने एक ओर हटकर रीछ की नाक पर तानकर घूँसा मारा। बस घूँसा पड़ते ही रीछ उछला और तुरंत कलामुंडी खा गया। बीअट्री ने यह देख लिया और एक नया खेल उसकी समझ में आ गया। उसके बाद से तो वह केवल अपने चाबुक से ही धीरे से रीछ की नाक पर चोट करता है और रीछ महाशय एकदम कलामुंडी का खेल दिखा देते हैं।

जन्तुओं के सम्बन्ध में जितना ज्ञान क्लाइड बीअट्री को है, उतना संसार भर में किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं है। और यदि आप पूछें कि जन्तुओं में वह किसे सबसे अधिक चाहता है तो ऐसा पशु केवल एक ही है—वह है कुत्ता।

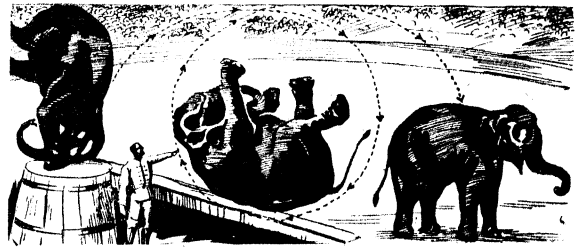
सर्कस का एक अनोखा खेल !

दुनिया में सर्कस के खिलाड़ियों द्वारा तरह-तरह के आश्चर्यजनक खेल दिखाए जाते हैं, परन्तु जो खेल 'लां रोशे' नामक एक पाश्चात्य खिलाड़ी दिखाया करता था उसका अनुकरण फिर और किसी के किए न हो पाया ! वह धातु के बने हुए एक बड़े गैदनुमा खोखले गोले में बैठकर उसका मुँह दक्कन से बंद करवा लेता था और तब न जाने किस तरह से भीतर ही भीतर अपने शरीर को हिलाते-डुलाते हुए वह उस गोले को एक चक्करदार ज़ीने के रास्ते एक ऊँचे खंभे के सिरे तक चढ़ाता था ! इसी प्रकार वापस तेज़ी से लुढ़काते हुए उसे वह पुनः नीचे भी ले आता था ! उस गोले की दीवार में बहुतरे छेद बने रहते थे, जिससे भीतर बंद होने पर लां रोशे को साँस लेने में कठिनाई नहीं होती थी । इस खेल को बाद में कई लोगों ने कर दिखाने की कोशिश की, पर सिवा लां रोशे के और कोई उसे कभी भी न कर सका !



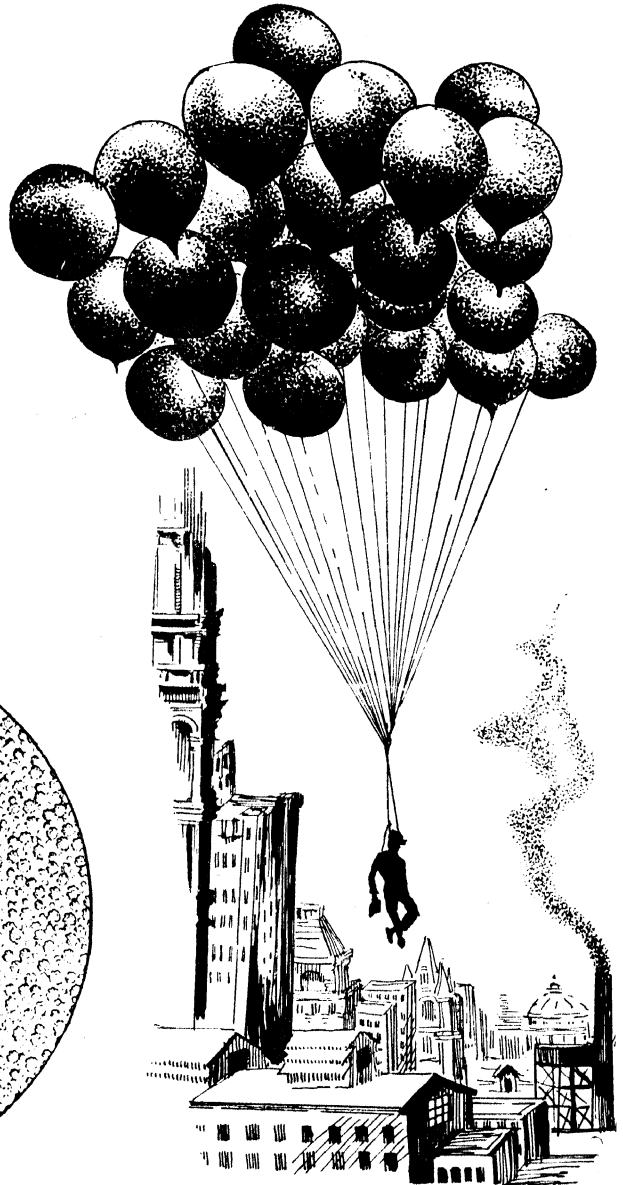
हथिनी की कलामुंडी !

हुमाइम टॉमसन नामक एक नीग्रो प्रदर्शक ने अपने सर्कस की एक हथिनी को बड़ी चतुराई से कलामुंडी खा लेने का खेल सिखा दिया था । उसकी हथिनी पहले एक टब पर चढ़कर अपने सिर के बल खड़े होकर एकदम 'शीर्षासन' करती और तब एक ढालू तख्ते पर कुलौट लेते हुए कलामुंडी खाकर भरती पर खड़ी हो जाती थी ! प्रस्तुत चित्र में हथिनी की तीनों स्थितियाँ प्रदर्शित हैं !



फोटोग्राफर की अनोखी उड़ान !

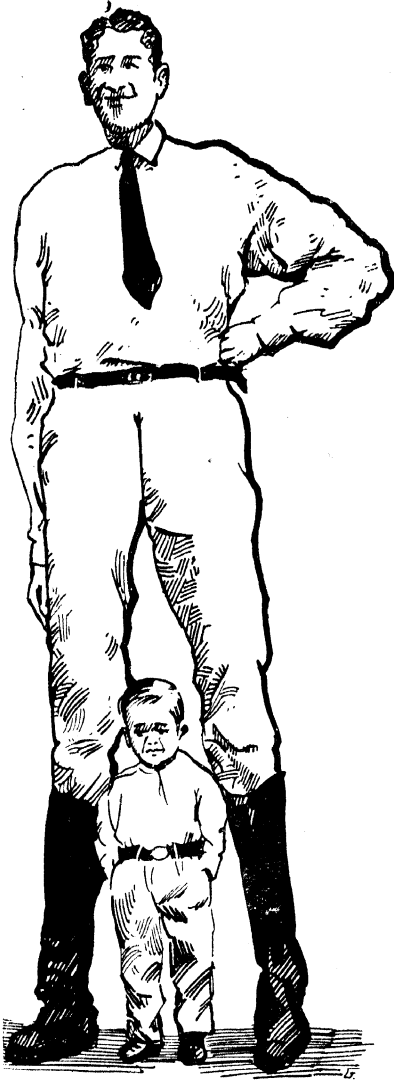
न्यूयॉर्क का एल मिज़लोन नामक एक साहसिक फोटोग्राफर एक बार विशेष प्रकार के फोटो लेने के इरादे से एक रस्ती में बँधे हुए तथा गैस से भरे बहुत-से छोटे-छोटे गुब्बारों के सहारे आसमान में ऊँचे उठा, किन्तु एकाएक उन गुब्बारों की नीचेवाली रस्ती टूट गई और वह कटी पतंग की तरह उड़ चढ़ा। यदि इसी समय जेम्स मुलन नामक एक पादरी ने उसकी रक्षा के लिए दौड़कर गुब्बारों को ताक-ताककर बंदूक के निशानों से फोड़ न दिया होता तो पता नहीं उसकी क्या दशा होती ! पर पादरी के प्रयत्न से वह सकुशल वापस ज़मीन पर उतर आया।



६ मन १३ सेर वजनवाली खी !

कैलिफ़ोर्निया की कुमारी मित्रिन (जिसका चित्र बाईं ओर दिया जा रहा है) तेल में केवल ६ मन १३ सेर है ! वह छोटी पैरगाड़ी पर इसीलिए चढ़ती है कि इस पर से गिरने का खतरा नहीं !

आपका तौल केवल ६ मन
१५ सेर है !



लीजिए, अमृतसर-निवासी
इन महाशय ने तो
मोटोपे और तौल में कैलिफ़ोर्निया
की उन कुमारीजी को भी मात कर
दिया, जिनका उल्लेख पिछले पृष्ठ
पर किया जा चुका है ! आपका
वज़न है ६ मन १५ सेर ! इन्हें
अपने भारी-भरकम शरीर का विशेष
गर्व है और इनके इष्ट-मित्र काफ़ी
सोच-विचार के बाद ही इन्हें भोज
का निमंत्रण देते होंगे !



बताइए, इन दोनों में कौन
बड़ा है ?

बाई और के चित्र में जो

दो व्यक्ति खड़े दि-
खाई दे रहे हैं, वे मंगलोर-
निवासी नम्बूद्री जाति के हैं और
सहोदर भाई हैं। क्या कोई
इन्हें देखकर बता सकेगा कि
इनमें उम्र के लिहाज़ से कौन
बड़ा और कौन छोटा है ? आप
संभवतः पीछे खड़े हुए व्यक्ति
को ही बड़ा भाई और आगे-
वाले को उसका अनुज कहेंगे।
परन्तु बात दरअसल इसके
बिल्कुल उल्टी है ! वास्तव
में आगे खड़ा बौना ही इन
दोनों भाइयों में उम्र में बड़ा
है। यद्यपि उसका क्रद सिर्फ़ २
फ़ीट ६ इंच है और वज़न है
केवल ११ सेर, फिर भी उसकी
उम्र २६ साल से अधिक है
और वह ज्योतिष और वैद्यक
का पंडित है !



सबसे लंबा और सबसे ठिगना आदमी !

दुनिया भर में सबसे लंबा आदमी 'जेक अर्ल'
है, जिसकी ऊँचाई ८ फ़ीट ७ इंच है, और
सबसे ठिगना आदमी है 'मेजर माइट', जिसका क्रद
केवल २ फ़ीट २ इंच है, गोफ़ि उसकी आयु ३०
वर्ष है ! दोनों के चित्र प्रस्तुत हैं।

जिराफ़ की-सी गर्दनवाली महिलाएँ !



मनुष्य के सौन्दर्य-विषयक पैमाने भी अलग-अलग देशों में अलग-अलग हैं। चीन में औरतों के पैर जितने छोटे हों उतने ही अधिक सुन्दर माने जाते रहे हैं तो उसी के पड़ोसी बर्मा के पड़ोझ नामक स्थान विशेष में स्त्रियों की सुन्दरता का मानदण्ड उनकी लंबी गर्दन है। और सौन्दर्य के इन विचित्र आदर्शों की पूर्ति के लिए मनुष्य केवल प्रकृति की ही कृपा पर निर्भर नहीं रहता बरन् अपनी ओर से भी वह तरह-तरह की तरकीबें और तदबीरें काम में लाता है। जिस प्रकार चीन में स्त्रियों के पाँव अधिक से अधिक छोटे बनाने के उद्देश्य से बचपन ही से उन्हें काठ के तंग जूते पहना देने का रिवाज रहा है, उसी तरह बर्मा के पड़ोझ नामक इस स्थान की ऊपर उल्लिखित औरतें बचपन ही से गर्दन लंबी करने के लिए उसमें पीतल के कई सँकड़े कालरनुमा छड़े या कड़े पहन लेती हैं, जिनकी संख्या वे ज्यों-ज्यों गर्दन लंबी होती जाती है, त्यों-त्यों बढ़ाती जाती हैं। कहते हैं, इस प्रकार उनकी गर्दन चौरह-पंद्रह इंच तक लंबी हो जाती हैं, जिनमें हँसली की हड्डी से ठुड्डी तक २१ से २५ तक ऐसे पीतल के कालर वे पहने रहती हैं। ये जिराफ़ की-सी गर्दनवाली बर्मा स्त्रियाँ वहाँ की बोली में 'किवाङ्गडू' कहलाती हैं। यदि कोई परिवार ज़्यादा समृद्ध होता है तो उसमें स्त्रियों गर्दन के अलावा पैरों और हाथों में भी ऐसे कई कड़े डाल लेती हैं, और तारीफ़ तो यह है कि इस तरह पीतल से जकड़ी रहने पर भी वे घरों और खेतों में मज़े से काम करती और सदैव प्रसन्न रहती हैं।

लंबकण्ठों का दादा !



संसार की प्रायः सभी मनुष्य-जातियों में स्त्रियों और कभी-कभी पुरुषों के भी कान की लौर छिदवाकर उनमें तरह-तरह के आभूषण पहनने का रिवाज़ पाया जाता है, किन्तु आप यह जानकर अचरज करेंगे कि कुछ मनुष्य-जातियाँ ऐसी भी रही हैं, जिनमें केवल कानों में आभूषण पहनना ही पर्याप्त नहीं समझा गया, बल्कि और अधिक सौन्दर्य के लिए यह भी आवश्यक समझा गया कि वज़नी गहने पहनकर उन कानों की लौर अधिक से अधिक बढ़ाई जाय ! इस अजीब क़ैशन की पराकाष्ठा हमें दक्षिणी अमेरिका के पीरू प्रदेश में किसी ज़माने में अपने साम्राज्य का भंडा फहरानेवाली इन्का जाति के लोगों में मिलता है, जिनके एक राजा—अताहुल्लपा—का चित्र बाईं ओर प्रदर्शित है ! कहते हैं, इस प्रकार बढ़ाए हुए इसके कानों की लंबाई १५ इंच के लगभग थी ! संभव है कि सभी इन्का लोगों में इसी तरह कान की लौर बढ़ाने का रिवाज़ रहा हो ! इन इन्का लोगों का तो दुनिया से अब नाम ही उठ गया है, परन्तु यह बात नहीं है कि उनके साथ ही लंबकण्ठों की भी परंपरा मिट गई हो। उदाहरण के लिए बोर्नियो की डॉक नामक एक जंगली जाति में कान की लौरें इतनी अधिक बढ़ाने का रिवाज़ है कि वे लोग उनमें लट्टुनुमा लकड़ी के मोटे गट्टे पहने रहते हैं !

यह किसी पक्षी की चोंच नहीं, आदमी का मुँह है !

आदमी भी एक बड़ा विचित्र जीव है—वह अपने सौन्दर्य के अनोखे आदर्शों की पूर्ति करने की धुन में जो कुछ भी कर डाले सो ही कम है ! ज़रा अफ्रीका के चाड झीलवाले इलाक़े की सारस-जिगी नामक जंगली जाति की इस स्त्री के इन अनोखे होठों पर ग़ौर कीजिए, जो इन लोगों में सुन्दरता की चरम सीमा समझे जाते हैं ! ये अनोखे होठ क्रुदरत की देन नहीं, बल्कि इन लोगों द्वारा एक विशेष कष्टप्रद तरीक़े से बंदाकर इस हद तक लंबे किए जाते हैं ! इसके लिए चार-



पौंच वर्ष की आयु ही में लड़कियों के दोनों होठों को चाकू से छेदकर उनमें लकड़ी के थालीनुमा टुकड़े पहना दिए जाते हैं, जिन्हें आयुवृद्धि के साथ-साथ ये लगातार बढ़े करते रहते हैं। जब लड़की पूर्ण युवावस्था की अवस्था को पहुँचती है, तब तक वे इतने बड़े हो जाते हैं कि १४ इंच व्यास की एक-एक थाली उनमें समा जाय ! कहने की ज़रूरत नहीं कि ये बेचारी स्त्रियाँ इतने लंबे होठों को लिये हुए न तो ठीक से बोल ही पाती हैं, न खाना ही चबा पाती हैं। प्रायः उन्हें इनके कारण केवल तरल पेय पदार्थ ही खाना पड़ता है।

सिकोड़ा और सुखाया गया कपाल-रहित नरमुंड !

यह भयावनी-सी वस्तु दक्षिणी अमेरिका के पिरू प्रदेश की 'जिवारो' नामक जंगली जाति के एक योद्धा का सिर है, जिसे उसके किसी दुश्मन ने काटकर सुरक्षित

रखने के लिए एक विशेष तरीक़े से सिकोड़ लिया है। ऐसे सिकोड़े और सुखाए गए नरमुंड इन जंगली जातियों द्वारा एक शोभा की वस्तु के रूप में प्रायः बाज़ारों में बेचे-खरीदे जाते हैं और उन्हीं को ज्ञात एक गुप्त विधि द्वारा कपाल की हड्डियाँ बाहर निकालकर तथा खाली चमड़ी के ऊपरी आवरण को सुखाकर तथा सिकोड़कर ये तैयार किए जाते हैं ! कहते

हैं, ये लोग इस प्रकार मृतक के सारे शरीर को ही सिकोड़कर उसकी मोमियाई बना लेने की पद्धति जानते हैं और ऐसे सिकोड़े हुए एक-दो शरीर अमेरिका के कुछ अजायबघरों में देखे भी जा सकते हैं !

पौने तेईस इंच लंबे नख !

भारतवर्ष के साधु-फकीरों में कई ऐसे हठधर्मी देखने को मिल सकते हैं, जो अपने नाखून बढ़ाए रहते हैं। परन्तु शंघाई के इस चीनी पुजारी के-से लंबे नाखून तो यहाँ भी शायद ही किसी को देखने को मिले होंगे ! इस आदमी के नख पौने तेईस इंच लंबे हैं और यह इसकी २७ वर्ष की कमाई है !



खोपड़ी को शमादान बना लिया !

चीन

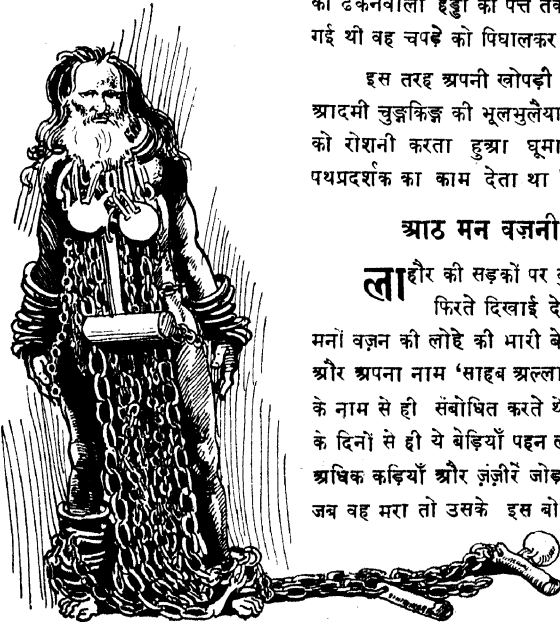
के शेचुवान प्रान्त के प्रमुख नगर चुङ्किङ्ग में, जो आजकल राष्ट्रीय चीन की अस्थायी राजधानी है, कुछ वर्ष पूर्व एक आदमी रात को सुनसान गलियों में घूमता-फिरता दिखाई देता था, जिसके माथे पर लगभग सात-आठ इञ्च लंबी एक जलती हुई मोमबत्ती लगी रहती थी ! आप कहेंगे कि यह मोमबत्ती उसने किस प्रकार अपने माथे पर टिकाई होगी ! यही तो खास बात है, जो हम यहाँ बताना चाहते हैं । आपको यह जानकर अचरज होगा कि उस अजीब आदमी ने जहाँ द्वारा अपनी खोपड़ी के सिरे पर की हड्डी में एक गोल गड्ढा कुरेदवा लिया था, जिसकी गहराई और परिधि इतनी काफ़ी थी कि उसमें एक मोमबत्ती बड़े मज़े से टिकी रहती ! इस बात की केवेनी नामक एक डाक्टर ने बाकायदा जाँच की थी और नीचे हम उसकी रिपोर्ट दे रहे हैं :—

“मैंने जाँच करने पर यह पाया कि उसकी खोपड़ी के ऊपर की पर्त को काटकर एक भद्दा-सा ऑपरेशन किया गया था, जिसके द्वारा कपाल की ऊपरी ठोस सतह के भीतर एक ऐसे आकार का गड्ढा कुरेद लिया गया था, जिसमें आसानी से एक मोमबत्ती फँसाई जा सके । इस गड्ढे का तला नीचे मस्तिष्क के आवरण को ढकनेवाली हड्डी की पर्त तक जा पहुँचा था । इस गड्ढे में जो मोमबत्ती लगाई गई थी वह चपड़े को पिघालकर चपकाकर खड़ी की गई थी !”

इस तरह अपनी खोपड़ी को एक चलता-फिरता शमादान बनाकर यह अजीब आदमी चुङ्किङ्ग की भूलभुलैया-जैसी टेढ़ी-मेढ़ी और ऊबड़-खाबड़ गलियों में रात को रोशनी करता हुआ घूमा करता और प्रायः अजनबी यात्रियों के लिए एक पथप्रदर्शक का काम देता था !

आठ मन वज़नी बेड़ियाँ पहने रहनेवाला फ़कीर !

लाहौर की सड़कों पर कुछ वर्ष पूर्व एक अजीब आदमी घसितते हुए चलते फिरते दिखाई देता था, जिसने अपने हाथ, पैर, कमर और गले में मनो वज़न की लोहे की भारी बेड़ियाँ पहन रखी थीं । यह एक मुसलमान फ़कीर था और अपना नाम ‘साहब अल्लाह शाह’ बतलाता था । पर लोग उसे ‘साँकलवाला’ के नाम से ही संबोधित करते थे । कहते हैं, इस अनोखे आदमी ने अपनी जवानी के दिनों से ही ये बेड़ियाँ पहन ली थीं और क्रमशः वह उनमें दिन-पर-दिन और भी अधिक कड़ियाँ और ज़ंजीरें जोड़-जोड़कर उनका वज़न बढ़ाता रहा था, यहाँ तक कि जब वह मरा तो उसके इस बोझ का पूरा तौल आठ मन से भी अधिक था । इस प्रकार पूरे तेरह वर्ष तक उसने अपनी ही इच्छा से पहनी गई ये भारी लोहे की बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ धारण की थीं ।





शाहदौला का चूहा !

पंजाब प्रान्त के गुजरात नामक स्थान में शाहदौला नाम के किसी एक सुसलमान संत का मज़ार है। इस मज़ार पर अनेक दम्पति संतान की मनौती के लिए आते हैं। कहते हैं, ऐसी मनौती के फलस्वरूप जो पहली संतान होती है, वह बहुत ही छोटे सिर-वाली तथा बज्रमूर्ख होती है। उसे माता-पिता मज़ार पर ही छोड़ आते हैं, जिसके बाद उनके बच्चे जीने लगते हैं ! ये बालक भीख माँगकर बड़े हो जाते हैं और अपनी भौंडी शकल के कारण 'शाहदौला के चूहे' कहे जाते हैं !

दुम्बारी—एक फौजी फकीर !

जब दुम्बारी आता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई सार्जेंट मेजर परेड कराते हुए चला आ रहा है ! भारतवर्ष में अनेक फकीर हैं, पर दुम्बारी का उनमें अपना एक विशेष स्थान है। वास्तव में उसको 'फकीर' कहकर सम्बोधन करने में हिचक होती है। दुम्बारी एक दुबला-पतला लम्बे कूद का आदमी है। उसकी दाढ़ी एकदम सफ़ेद है; किन्तु इतना वृद्ध होने पर भी वह सदैव सीधा तना रहता है और उसकी आँखों में युवकों-जैसी चमक है। दुम्बारी को स्वयं नहीं मालूम कि उसकी आयु क्या है। परन्तु यह निश्चित है कि गत २० वर्षों में उसकी आकृति में लेशमात्र भी अन्तर नहीं आया है।

गर्मी, जाड़ा, बरसात—सभी ऋतुओं में दुम्बारी छावनी-छावनी घूमता है और आफ़िसरों और सैनिकों से अपनी भिक्षा—जिसे वह अपना 'वेतन' कहता है—बटोरता फिरता है। भिक्षा मिल जाने पर दुम्बारी धन्यवाद नहीं देता। वह इस संबंध में अपनी कृतज्ञता दाता को कोई उच्च उपाधि प्रदान करके प्रदर्शित करता है। यदि कोई सबआल्टर्न उसे अठनी देता है तो तुरन्त ही दुम्बारी कह देता है, "साहब, आप मेजर हो गया है !" और केवल दो रुपये देकर कोई भी कर्नल उसके द्वारा लार्ड बना दिया जाता है !

दुम्बारी के साथ सदैव एक लकड़ी की तलवार और बन्दूक रहती है। उसकी पुरानी वर्दी और इन इथियारों में भारतवर्ष भर की पल्टनों के बैज (सैनिक चिह्नसूचक तमगें) लगे हुए हैं। इतने अधिक बैज उसके ऊपर लदे रहते हैं कि कोट के भारी हो जाने के कारण उसका पहनना उसके लिए कठिन होता है। इसीलिए वह उसके एक शिष्य के कन्धों पर टँगा रहता है। नए और पुराने सभी रेंजिमेंटों के बैज और क्रैस्ट दुम्बारी के पास मिलेंगे। साथ ही एक बड़े टीन के गोल डिब्बे में उसके पास सैकड़ों ही पत्र और साटॉफ़िक्रेट हैं, जिनके लेखकों में से अनेक तो फ़ील्ड मार्शल बन गए हैं और बहुत-से परलोक सिंघार चुके हैं ! पर इन सबकी स्मृति दुम्बारी के पास सुरक्षित है। स्वयं उसी के कथनानुसार अब तक दुम्बारी दो लाख रुपये 'वेतन' के रूप में पा चुका है। पञ्जाब भर में एक भी छावनी ऐसी नहीं, जहाँ उसे कोई न जानता हो !





पौने नौ फीट लंबी मूँछें !

इस आदमी की मूँछें संसार भर में सबसे लंबी थीं—उनका नाप १०४ इंच अर्थात् पौने नौ फीट के लगभग था। यह रहनेवाला था हमारे ही देश के काठियावाड़ प्रदेश का और इसका नाम था देसुर अर्जुन डाँगर। यह मुछंदरनाथ अमेरिका में होनेवाली प्रदर्शनी में शरीक हुए थे और वहाँ इन्होंने काफ़ी पैसा बटोरा था !



एक और मुछंदरनाथ !

आप हैं मलाया-निवासी श्रीयुत ए० मलयाङ्गियार। आपकी मूँछें ६४ इंच लम्बी हैं। आपको धूम्रपान का व्यसन है, अतएव आपको सदैव भय रहता है कि कहीं आपकी मूँछें भी सिगरेट के संसर्ग से किसी दिन सहसा धुआँ न बन जायें। इसीलिए आपने इनका दाईं हजार रुपये का बीमा करा रक्खा है ! एक दिन आपको आज्ञा मिली कि या तो मूँछों पर उस्तरा फिराओ या नौकरी से त्यागपत्र दो। आपने मूँछों के ज्वातिर तुरंत त्यागपत्र दे दिया !

इस युग का एक महान् आश्चर्य—हैलिन कैलर

जिसने बहरी, गूंगी और अन्धी होने पर भी जीवन को अपनाया !



हैलिन कैलर बीसवीं शताब्दी के महान् आश्चर्यों में से एक है। निपट अन्धी होने पर भी उसने अनेक दृष्टियुक्त मनुष्यों की अपेक्षा अधिक किताबें पढ़ी हैं। कदाचित् उसने एक साधारण मनुष्य की अपेक्षा सौ गुना अधिक पुस्तकें पढ़ी होंगी ! और यही नहीं

बल्कि स्वयं उसने भी सात पुस्तकें लिखी हैं ! उसके जीवन का एक सिनेमा चल-चित्र बनाया गया था और उसमें उसने सफलतापूर्वक भाग लिया था ! वह निपट बहरी है, फिर भी अनेक मनुष्यों की अपेक्षा, जो भली-भाँति सुन सकते हैं, उसको संगीत में कहीं अधिक आनन्द आता है। अपने जीवन में पूरे नौ वर्षों तक वह गूंगी रही, इस पर भी उसने संयुक्तराज्य भर में व्याख्यान दिए हैं ! चार वर्षों तक तो उसने 'बोद्विल' या नौटंकी जैसे एक तरह के पाश्चात्य नाटक में, जिसमें सङ्गीत और नृत्य का प्राधान्य रहता है, प्रमुख अभिनेत्री का काम किया है और इस सिलसिले में उसने योरप के इस छोर से उस छोर तक की यात्रा की है !

पैदा होने के डेढ़ वर्ष बाद तक अन्य बालकों की भाँति हैलिन कैलर भी सुनती थी, बोल सकती थी और भली भाँति देख भी सकती थी। तब एक दिन अकस्मात् ही उसको दुर्भाग्य ने आ दबोचा। वह बीमार पड़ी और उस बीमारी के कारण उसके

शेष जीवन का ढाँचा ही उलट गया। अब जो भी वस्तु उसको अन्छी नहीं लगती, उसे वह तोड़-फोड़ डालती। दोनों हाथों से वह अपने मुँह में भोजन टूँस लेती और जब कोई उसको ठीक प्रकार से भोजन करना सिखलाता तो वह हाथ-पैर पटकती और चीखती-चिल्लाती ! कारण यह था कि वह एकदम अंधी, बहरी और गूंगी हो गई थी।

निराश होकर उसके माता-पिता ने बोस्टन के एक अन्धों के विद्यालय में उसके लिए एक शिक्षक के लिए प्रार्थनापत्र भेजा। वहाँ से ऐन मैन्सफील्ड सलीवान नामक एक महिला ने हैलिन के अन्धकारपूर्ण जीवन में प्रकाश की रेखा की भाँति प्रवेश किया। जब कुमारी सलीवान ने बोस्टन के अन्धों के विद्यालय को छोड़ा और हैलिन-कैलर का शिक्षाभार ग्रहण किया, तब उसकी अवस्था केवल २० वर्ष की थी। कुमारी सलीवान जानती थी कि उसका कार्य कठिन था, परन्तु उसने साहस से काम लिया। यहाँ इने-गिने शब्दों में यह बताना कठिन है कि ऐन सलीवान ने हैलिन कैलर के जीवन में कितना अद्भुत परिवर्तन कर दिया। केवल यही कहना पर्याप्त होगा कि एक मास के भीतर ही उसने नितान्त अन्धकार और शून्यता में निवास करनेवाली बालिका हैलिन से बातचीत करने में सफलता प्राप्त कर ली ! इसका पूर्ण विवरण तो हैलिन कैलर द्वारा लिखित आत्मकथा को पढ़कर ही जाना जा सकता है। जिसने उस आत्मकथा को पढ़ा है वही भली भाँति जानता है कि उस बहरी, गूंगी और अन्धी बालिका को उस दिन कितनी प्रसन्नता हुई होगी जिस दिन उसे यह ज्ञान हुआ होगा कि संसार में भाषा नाम की भी कोई अद्भुत वस्तु होती है ! हैलिन का कथन है कि "मैं समझती हूँ, कदाचित् ही किसी बालिका को वैसा नसीब मिला होगा जैसा कि उस दिन मुझे मिला था जब मैं अपने बिस्तरे में पड़ी हुई दिन भर की उन बातों को, जिनसे मुझे प्रसन्नता प्राप्त हुई थी, स्मरण कर रही थी और जीवन में प्रथम बार यह कामना कर रही थी कि कब दूसरा दिन आए और मैं कुछ नवीन बातें सीखूँ !"

बीस वर्ष की उम्र तक तो हैलिन ने इतनी अधिक योग्यता प्राप्त कर ली थी कि सुप्रसिद्ध रैडक्लिफ़ कॉलेज में उसका नाम लिखा दिया गया था और वहाँ वह न केवल एक विद्यार्थिनी ही थी बल्कि अध्यापिका भी बना दी गई थी। अब वह कॉलेज के अन्य विद्यार्थियों की भाँति न केवल पढ़-लिख ही लेती थी, प्रत्युत उसकी बातचीत करने की शक्ति भी फिर से लौट रही थी। “मैं अब गूंगी नहीं हूँ”—यह प्रथम वाक्य था, जो वह अब उच्चारण करने लगी थी ! उल्लास के मारे पुलक-पुलककर वह बारम्बार कहा करती थी—“मैं अब गूंगी नहीं हूँ !”

इसके बाद तो उसने न जाने कितनी पुस्तकें लिख डालीं, कितने ही व्याख्यान दिए, अभिनय किया और अपनी अद्वितीय प्रतिभा से संसार को चकित कर दिया ! वह अपनी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाओं के लेख अंशों के लिए ईजाद किए गए ‘ब्रेल टाइप’ के टाइपराइटर पर सुगमता से लिख लेती। यदि कभी उन्हें शुद्ध करने की आवश्यकता होती तो इसके लिए वह एक किनारे पर पिन द्वारा छोटे-छोटे छेद करके निशान लगा लेती !

अब वह न्यूयॉर्क शहर के फारेस्ट हिल्स मोहल्ले में रहती है और कभी-कभी वह अपने उद्यान में अपने कुत्ते के साथ वायुसेवन करते हुए दिखाई देती है। उस समय वह बहुधा अपने आप से ही बातें करती रहती है। वह हमारी तरह होठों को नहीं हिलाती, प्रत्युत अपनी उँगलियों को चलाते हुए संकेत-भाषा में ही बातें करती है। बेचारी कैलर को दिशा-ज्ञान कुछ भी नहीं है। वह अपने ही घर में प्रायः रास्ता भूल जाती है, और यदि उसकी मेज़, कुर्सी, अल्मारी, चारपाई आदि नियत स्थान से हटाकर अन्य कहीं रख दी जाय तब तो वह पूर्ण रूप से अपने को असहाय अनुभव करती है।

बहुतेरे लोगों का विचार है कि अन्धे होने के कारण उसके पास अवश्य ही कोई गुप्त छुटवीं इन्द्रिय भी होगी, जिससे उसे अपने सब कार्य करने में सुविधा होती है, परन्तु वैज्ञानिकों ने परीक्षा द्वारा सिद्ध कर दिया है कि ऐसी कोई इन्द्रिय उसके पास नहीं है और उसका स्पर्श, स्वाद एवं सूँघने का ज्ञान हमारी और आपकी तरह ही है। हाँ, इतना अवश्य है कि उसका स्पर्श-ज्ञान साधारण मनुष्यों की अपेक्षा अधिक है। अपनी उँगलियों को अपने मित्रों के होठों पर रखकर केवल स्पर्श द्वारा ही वह बतला देती है कि वे क्या कह रहे हैं और इसी प्रकार पित्रानो अथवा बेले पर केवल हाथ रखकर ही वह सङ्गीत का आनन्द उठा लेती है। इसी तरह रेडियो पर भी केवल अपनी उँगलियाँ रखकर यह बहरी स्त्री न जाने कैसे उसके नाद का अनुभव कर लेती है ! गायकों के भी गले पर धीरे से उँगलियाँ रखकर वह उनका गायन सुन लेती है। किन्तु स्वयं वह न गा सकती है, न गुनगुना ही सकती है।

यदि हैलिन कैलर किसी से एक दिन हाथ मिलाए और पाँच वर्ष के बाद फिर से वह उसी व्यक्ति से मिले तो वह उस व्यक्ति के हाथ मिलाने के दङ्ग से ही यह जान लेगी कि वह कौन व्यक्ति है, साथ ही वह रंजीदा है अथवा हँसमुख !

वह नाव खेलेती है, तैर लेती है और जङ्गल में घुड़सवारी भी कर लेती है। विशेष प्रकार से बनाए गए शतरंज आदि के खेल भी वह सफलतापूर्वक खेल लेती है।

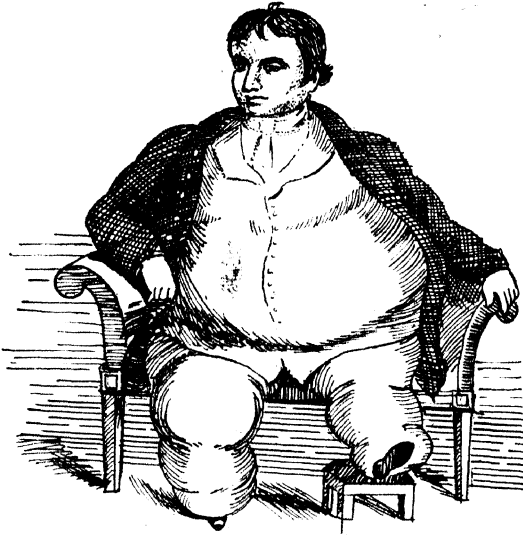
बहुतेरे सोचते होंगे कि कदाचित् सबसे अधिक दुर्भाग्य की बात जो संसार में हो सकती है, वह चक्षु-विहीन होना है। परन्तु हैलिन कैलर का कहना है कि अन्धा होना इतना दुःखदायी नहीं है जितना कि बहरा होना, क्योंकि अपने घोर अन्धकार की एकाकी निस्तब्धता में उसके जीवन में जिस वस्तु का अभाव उसे सबसे अधिक खटकता है, वह है मानव की स्नेहमिचित्त बोली का मधुर स्वर !

हैलिन कैलर के इस परिचय के साथ-साथ यदि उसकी महान् शिक्षिका कुमारी सलीवान के बारे में भी यहाँ कुछ पंक्तियाँ हम आपकी जानकारी के लिए दे दें तो अनुपयुक्त न होगा, क्योंकि हैलिन को इस अवस्था तक पहुँचाने का श्रेय सलीवान को ही है। स्वयं सलीवान का भी जीवन बहुत ही दुःखमय रहा, इसीसे वह दूसरों का दुःख-दर्द समझने योग्य हो सकी। जब वह दस वर्ष की थी, तब उसे और उसके छोटे भाई को एक अनाथालय में रहना पड़ता था ! उस अनाथालय में इतनी अधिक भीड़ रहती थी कि भाई-बहन को विश्राम के लिए पास के एक ‘मुर्दाघर’ में जाना पड़ता था, जिसमें दफ़नाने से पूर्व मुर्दे लाकर रखे जाते थे ! उसका छोटा भाई रोगग्रस्त था और छः मास के उपरान्त ही वह सदा के लिए बहन को अकेली छोड़कर इस संसार से चला गया। इधर स्वयं ऐन भी जब वह केवल १४ वर्ष की थी, अपनी आँखों की ज्योति खो बैठी और इतनी अन्धी हो चली कि उसे उँगलियों से पढ़ना सीखने के लिए बोस्टन के अन्धों के विद्यालय में जाना पड़ा। पर वह निपट अन्धी नहीं हुई थी। अन्धों के विद्यालय में जाकर उसकी दृष्टि पुनः सुधर चली। हाँ, ५० वर्ष पार करने पर और मृत्यु के थोड़ा पहले उसे कुछ भी न सँभ पड़ता था।



छंगामल नहीं, चौबीसाचंद !

जिस आदमी के किसी हाथ या पैर की उँगलियों की संख्या जन्म से ही पाँच के बजाय छः होती है, वह प्रायः हमारे देश में 'छंगामल' या 'छौआ' के नाम से पुकारा जाता है। ऐसे आदमी अंधविश्वासियों द्वारा भाग्यवान् समझे जाते हैं। इस हिसाब से तो बाईं ओर के चित्र में प्रदर्शित यह महाशय चौगुने अधिक भाग्यशाली कहे जा सकते हैं, क्योंकि इनके तो दोनों हाथों और दोनों पैरों में छः-छः उँगलियाँ हैं ! इनका उपयुक्त नाम तो छंगामल नहीं, बल्कि चौबीसाचंद ही हो सकता है !



संसार भर में सबसे मोटा आदमी !

डेनियल लैम्बर्ट नामक यह व्यक्ति शायद संसार भर में सबसे मोटा आदमी हुआ है ! इसका जन्म इंग्लैण्ड के लीस्टर नामक स्थान में सन् १७७० ई० में हुआ था। जब वह १२ वर्ष का था तभी उसका तौल ५ मन २८ सेर तक पहुँच चुका था। ३६ वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते तो वह परलोक को सिधार गया, किन्तु उस समय तक उसका वजन ६ मन ४ सेर के लगभग बढ़ चुका था ! उसकी मोटाई का यह हाल था कि उसका एक वेस्ट-कोट, जो एक अजायबघर में अब भी सुरक्षित है, कमर की जगह १०२ इंच या ८॥ फीट चौड़ा है !



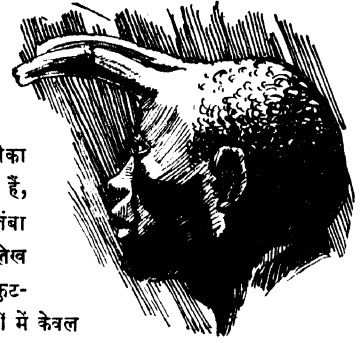
प्रत्येक आँख में दो-दो पुतलियाँ !

ल्यु जुङ्ग या ल्यु मिन नामक इस चीनी की प्रत्येक आँख में जन्म से ही दो-दो पुतलियाँ थीं ! यह दसवीं शताब्दी में हुआ था और अपनी कार्यकुशलता तथा प्रतिभा के बल पर चीन के शान्सी नामक प्रान्त का गवर्नर बन गया था। बाद में वह चीन का राजमंत्री बन गया और कूटनीति द्वारा सम्राज्ञी से मिलकर उसने अपने ही पुत्र को चीनी साम्राज्य का उत्तराधिकारी घोषित करा दिया ! संभवतः उसकी आँखों की खोट ही उसके लिए असाधारण सौभाग्य का कारण बन गई हो !

मनुष्य के सींग निकल आए !

सींग न केवल गाय-भैंस, भेड़-बकरी, या हिरन आदि चौपायों के ही होते

हैं, बल्कि कभी-कभी शायद मज़ाक करने के लिए प्रकृति दो पैरों-वाले मनुष्यों को भी सींग उगा देती है ! दाहिनी ओर का चित्र देखिए—अफ्रीका की काफ़िर जाति के इस पुरुष के सिर पर दो लंबे सींग उभर आए हैं ! कहते हैं, तिब्बत के लाशा नगर में भी एक आदमी ऐसा है जिसके ललाट पर तेरह इंच लंबा एक सींग है ! एक योरोपीय लेखक ने एक ऐसे असाधारण मनुष्य का भी उल्लेख किया है जिसके सिर पर सामने की ओर नहीं, बल्कि दोनों पेशानियों की ओर फुट-फुट भर लंबे दो सींग उग आए थे ! मनुष्य के इन सींगों और जानवरों के सींगों में केवल अंतर यही होता है कि इनमें हड्डी का अभाव रहता है, ये केवल चमड़ी से ढके हुए मांस-पिण्ड होते हैं और डाक्टरों के कथनानुसार वे विशेष प्रकार के चर्मरोग के कारण ही उग आते हैं ! कहते हैं, ऐसे सींग हमारे बदन में कहीं भी निकल आ सकते हैं ! अगले पृष्ठ पर हमारे ही देश के एक ऐसे आदमी का चित्र दिया गया है, जिसकी पीठ पर ऐसा ही सींग उग आया था !



इस व्यक्ति को दोपहर को तारे दिखाई देते थे !

कास्पर हाउज़र नामक यह जर्मन युवक, जिसके बारे में पाश्चात्य लेखकों ने अनेक रहस्यमय बातें लिखी हैं, जर्मनी की बादन नामक रियासत का उत्तराधिकारी था । कुछ लोगों ने षडयंत्र करके शोशावस्था में ही उसे चुराकर एक अंधेरी कोठरी में गुप्त रूप से कैद कर दिया, जहाँ वह १८ वर्ष तक बंद रहा । तब एकाएक वह किसी प्रकार वहाँ से बाहर निकल आया । उस समय पूर्ण वयस्क होने पर भी उसका मानसिक अवस्था दो वर्ष के बालक-जैसी थी ! साथ ही एक विचित्रता उसमें यह थी कि उसकी आँखें कुछ ऐसी हो गई थीं कि दिन-दोपहर ही में आसमान में उसे तारे दिखाई देते थे !



साँप की तरह दो जीभवाली सुन्दरी !

फ्रैंकफ़र्ट की ग्रेटेल मेयर नामक इस महिला की जीभ साँप या विषखपरे जैसी दो भागों में विभाजित थी ! पर इसका दुर्भाग्य देखिए कि एक नहीं दो ज़बान पाकर भी वह बेचारी एक शब्द भी नहीं बोल पाती थी !





सात वर्ष का वृद्ध !

चार्ल्स चार्ल्सवर्थ नामक इस अजीब व्यक्ति का जन्म इंग्लैण्ड के स्टेफर्डशायर नामक ज़िले में मार्च १४, १८२६, को हुआ था। प्रकृति की विचित्रता देखिए कि चार वर्ष का होने पर ही इस बालक में युवावस्था के लक्षण प्रकट होने लगे, उसके दाढ़ी-मूँछें निकल आईं और इसके बाद वह तेज़ी से बुढ़ा होने लगा। सात वर्ष का होने पर उसके बाल सफ़ेद हो गए और वह मर गया।



मनुष्य की पीठ में सींग !

काठियावाड़ के भावनगर राज्य के सर तख्तसिंहजी हॉस्पिटल में इस व्यक्ति की पीठ में से यह सींग डाक्टरों ने ऑपरेशन द्वारा निकाला था। कहते हैं, इस सींग की परिधि ६॥ इंच थी और लंबाई ३॥ इंच ! पिछले वृष्ट पर हम एक ऐसे मनुष्य का हाल लिख चुके हैं, जिसके सिर में जानवरों की तरह सींग निकल आए थे !

दुर्गंगी आँखें !

अमेरिका के डब्ल्यू० जी० ब्रासार्ड नामक इन महा-शाय की एक आँख नीली है और दूसरी भूरी ! देखिए, दाहिनी ओर का चित्र।

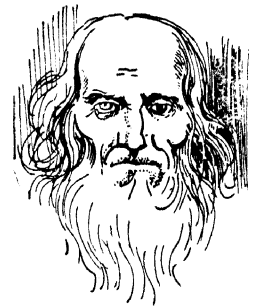
इसे केवल रात को दिखाई देता है !

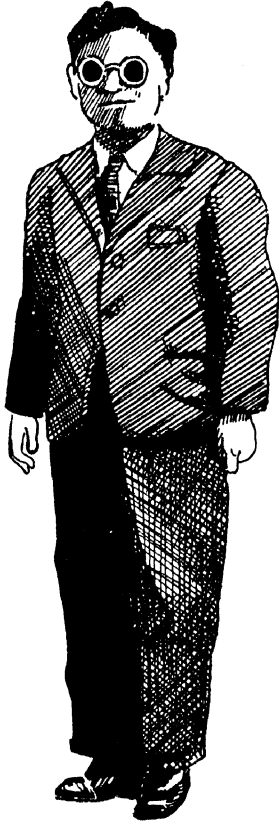
गिओवानी गालान्ती नामक इस इटैलियन लड़के को किसी रोग के कारण उल्लू की तरह केवल रात को ही दिखाई देता था, दिन में नहीं ! देखिए, बाई ओर का चित्र।



अर्द्धाङ्गिनी !

स्त्री को हमारे यहाँ अर्द्धाङ्गिनी कहा गया है—जिसका अर्थ यह है कि वह पुरुष के आघे अंग जैसी है—न पुरुष के बिना उसका जीवन पूर्ण है न उसके बिना पुरुष का जीवन ही ! किन्तु 'बायोलेट्टा' नामक यह जर्मन महिला तो बेचारी अपने शरीर ही से अर्द्धाङ्गिनी है—जन्म से ही उसके न तो भुजाएँ हैं न टाँगें ही ! फिर भी वह अपने सब काम कर लेती है !





दृष्टि-विहीन भारतीय स्लीडर !

श्रीसुबोधचन्द्र राय कलकत्ता हाइकोर्ट के एक नामी वकील हैं, और सफलतापूर्वक अपनी प्रैक्टिस करते हैं, यद्यपि जब वह आठ वर्ष के थे तभी से अपनी आँखों की ज्योति खो चुके हैं। ११ वर्ष की आयु में आप कलकत्ते के अंध-विद्यालय में शिक्षा के लिए भरती हुए और सम्मान-सहित मैट्रिक की परीक्षा पास की। तदनंतर विश्वविद्यालय से आपने अंग्रेज़ी में आनर्स के साथ बी० ए० तथा दर्शन-शास्त्र में एम० ए० किया। इन दोनों परीक्षाओं में आप अपने कोलेज में सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए थे। इसके बाद कानून पढ़कर आपने वकालत शुरू कर दी। इन्हें दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय ने इन्हें अधिक शिक्षा पाने के लिए विदेश भेजा और अमेरिका की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी से एम० ए० की डिग्री लेकर यह लौटे। अब यह बड़ी सफलतापूर्वक हाइकोर्ट में प्रैक्टिस कर रहे हैं।



जन्मांध डाकिया !

आपका नाम है बिल मोंटगुमरी। आप जन्मांध हैं। फिर भी ३५ वर्षों तक आपने एक डाकिये का काम किया किया है और घर-घर जाकर चिट्ठियाँ बाँटी हैं। इस बीच कभी भी आपने एक भी पत्र ग़लत पते पर नहीं दिया। क्या इनकी गणना संसार के आश्चर्यों में करने योग्य नहीं है ?

अनोखा टोकरीवाला !

जिम नामक यह टोकरीवाला इसी तरह सिर पर एक के ऊपर एक बीस टोकरियाँ रखकर मोटर, ट्राम, आदि की भीड़ में से रास्ता काटते हुए बेचड़क लंदन की सड़कों पर घूमता-फिरता रहता है। इस काम में वह नटों को भी मात करता है। देखिए, बाईं ओर का चित्र।

बुढ़िया से बालिका !

कल्पना कीजिए कि आप बूढ़े हो चुके हैं और शनैः-शनैः पुनः बुढ़ापे से प्रौढ़ावस्था की ओर, प्रौढ़ावस्था से युवावस्था की ओर, और युवावस्था से फिर बालकपन की ओर लौट रहे हैं ! आपको कितना आश्चर्य होगा ! और यदि यह कल्पना वास्तविक हो जाय, तब तो आपके लिए तो यह जिन्दगी का सबसे अनोखा अनुभव होगा ही, साथ ही संसार के लिए भी यह सबसे अद्भुत बात होगी !

अमेरिका के वैज्ञानिकों के सामने हाल ही में एक ऐसी ही विचित्र समस्या उपस्थित हुई थी, जिसने उनको चक्कर में डाल दिया और जिसका वे कोई भी कारण न खोज सके । उन्हें यह सूचना मिली कि एक वृद्ध महिला अकस्मात् ही पलटकर मानों अपने अतीत की ओर वापस लौटने लगी ! उसका मानसिक दृष्टिकोण प्रतिदिन अल्पायुवालों जैसा होने लगा । द्रुत-वेग से वह बुढ़िया से पुनः प्रौढ़ा बन गई, प्रौढ़ा से नवयुवती बन गई, और लड़कियों की तरह प्रेम-कहानियाँ सुन-पढ़कर मुँह दबाकर हँसने लग गई ! यदि कोई नवयुवक उसे देख लेता तो शीघ्र ही वह लज्जा जाती !

तत्पश्चात् उसने बालकों की पुस्तकें पढ़ना प्रारम्भ किया और खिलौनों से खेलना भी ! यद्यपि शरीर उसका वृद्धों-जैसा ही था, परन्तु बच्चों की तरह वह अपने हाथों और घुटनों के बल घूमा-फिरा करती, अपनी उँगलियाँ पपोरा करती और बच्चों की तरह तुतलाया करती । अन्त में वह उस स्थिति में पड़ी रहने लगी जिसमें कि एकदम दुधमुँहे छोटे बच्चे पड़े रहते हैं ! यह बात नहीं थी कि उसका शरीर ही पुनः बुढ़ापे से जवान और जवानी से बच्चों जैसा हो गया हो ! नहीं, बात यह नहीं थी । शरीर तो उसका बूढ़ों जैसा ही था, केवल उसकी मानसिक अवस्था में ही इस तरह का आश्चर्यजनक परिवर्तन हो रहा था ! इसी तरह एक दिन उसने अपना शरीर त्याग दिया ।

ऐसे ही विचित्र और भी अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध है टैरेज़े न्यूमन नामक एक स्त्री का । इस ३६ वर्षीया जर्मन किसान महिला के हाथों, पाँवों और बगल में वैसे ही ब्रण हैं, जैसे क्रूस पर चढ़ने के बाद ईसा के हो गए थे, और वे किसी प्रकार भी अच्छे नहीं होते हैं ! १५ वर्षों से उसने कुछ भी नहीं खाया है ! दस वर्षों से उसने कुछ भी पिया नहीं है ! वह औरों के कंधों को अपने ऊपर ले लेती है । उम्र में वह कभी भी २५ वर्ष से अधिक की नहीं जँचती । वैज्ञानिकों ने उसके बारे में बहुत छानबीन की कि कहीं उसकी ये बातें धोखा या छल न हों, परन्तु ऐसी कोई बात उन्हें न मिली । निस्सन्देह वह, संसार की एक 'अद्भुत' महिला है !

एक दूसरा विचित्र उदाहरण अमेरिका की जोआकिन विएना का है । सात वर्ष पूर्व उसकी लम्बाई ५ फीट ४ इञ्च थी । अब वह घटकर ४ फीट १० इञ्च हो गई है और निरंतर उसका क्रुद छोटा हो होता जा रहा है ! घटने पर भी उसके शरीर का अनुपात बिल्कुल ठीक है अर्थात् उसके शरीर के सभी अङ्ग एक समान घटे हैं । वैज्ञानिक असहाय की भोंति साश्चर्य देखते रहते हैं कि वह कितना और घटेगा !

एक गाड़ीवान की भी कथा ऐसी ही है । उसको सब 'ऑप्सा पुरुष' (Upside-down Man) कहते हैं । उसके शरीर के भीतरी अङ्ग सब उलटी ओर को हैं । उदाहरणार्थ उसका 'हृदय' बाईं ओर के बजाय दाहिनी ओर है ! इस पर भी वह स्वास्थ्य की दृष्टि से पूर्ण दृष्ट-पुष्ट है और एक दिन भी कभी बीमार नहीं पड़ा ।

अनेक मनुष्य ऐसे देखे गए हैं, जिनकी खाँसी कभी बन्द नहीं होती और खाँसते-खाँसते ही वे यमलोक सिधार जाते हैं । कई व्यक्ति ऐसे भी देखे गए हैं, जिनको लगातार हिचकी आया करती है । कितने ही मनुष्यों ने हँसते-हँसते अपने प्राण त्याग दिए हैं ! किन्तु फ्लोरिडा के एक कृषक, हॉवर्ड स्टिलमैन, का उदाहरण अद्वितीय है, जिसने कि अपने आपसे बातें करते-करते ही स्वर्ग की राह ली ! वह नींद में भी ४१८ घंटों तक निरंतर बातें करता रहा ! समय बीते वह दुर्बल होता गया और उसका ज्वर भी उत्तरोत्तर बढ़ता गया, परन्तु किसी प्रकार भी उसका बातें करना बन्द न हुआ । केवल मृत्यु ही उसका मुख बन्द कर पाई !

रुमानिया में एक ऐसा मनुष्य है, जो १६ वर्षों से नहीं सोया है । इसका नाम है कैरोल ग्रेन । एक बम के लगने से वह अचेत हो गया था । तभी से उसे नींद नहीं आती । इसके विरुद्ध कैनेडा-निवासी श्रीयुत जोज़ेफ़ लैज़न को १६३५ के मार्च मास में एक दिन ऐसी आँख लगी कि जून १६३६ में पुनः उनकी नींद टूटी !

जुड़वाँ भाई और बहनें !

प्रकृति भी मनुष्य के साथ कभी-कभी मानों मज़ाक कर बैठती है ! आए दिन अखबारों में ऐसे समाचार छपते ही रहते हैं कि अमुक गाँव में ऐसा एक बच्चा पैदा हुआ, जिसके धड़ तो एक था पर सिर दो थे, अथवा सिर एक था और हाथ-पैर आठ थे ! किन्तु ऐसे अमानुषिक बालक या तो मरे हुए ही पैदा होते हैं या पैदा होकर शीघ्र ही मर जाते हैं—वे ज़िन्दा रहते नहीं देखे गए । हाँ, साथ-साथ पैदा हुए कई एक ऐसे यमज या जुड़वाँ बच्चों के काफ़ी उम्र तक ज़िन्दा रहने के उदाहरण पाए जाते हैं, जिनके शरीर यों तो एकदम हमारे-आपके जैसे सामान्य और पूर्ण-रूप से विकसित होते हैं, किन्तु कुदरत की ज़रा-सा भूल के कारण जो गर्भ से ही छाती या कमर के पास एक-दूसरे से जुड़े हुए पैदा होते हैं । ऐसे जुड़वाँ बालकों में सबसे मशहूर स्याम देश के दो यमज हुए हैं, जिनके बारे में संसार भर की पत्र-पत्रिकाओं में बहुत-कुछ लिखा जा चुका है और अमेरिका तथा योरोप के विभिन्न देशों में पहुँचकर तथा स्थान-स्थान में अपना प्रदर्शन कर जो काफ़ी धूम मचा चुके हैं । इन जुड़वाँ लड़कों के नाम थे 'चॉग' और 'ऐंग' और उनका जन्म सन् १८११ ई० में स्याम की राजधानी बैंकाक से कुछ ही दूर मेंकांग नदी के तटवर्त्ती एक छोटे-से गाँव में हुआ था ।

उनका पिता चीनी और माता मिश्रित स्यामी-चीनी नस्ल की थी। ये दोनों लड़के देखने में हमारे जैसे ही सामान्य और स्वस्थ थे और उनके सभी अंग अलग-अलग थे एवं पूर्ण रूप से विकसित थे । केवल मही एक विशेषता उनमें थी कि सामने की और छाती के पास पेट से ऊपर उन दोनों के शरीर लगभग ३॥ इंच लंबी और ८ १/२ इंच परिधि की एक चमड़े की नलिकाकार लच-कीली पट्टी से जुड़े हुए थे । इसके कारण वे एक-दूसरे से बँध गए थे (दे० इसी पृष्ठ का चित्र) । साथ-साथ ही उन्हें उठना-बैठना पड़ता, कदम-से-कदम मिलाकर साथ-साथ ही चलना पड़ता और सोते समय एक-दूसरे के आमने-सामने मुँह करके ही लेटने को विवश होना पड़ता था । किन्तु इन सब बातों का उन्हें इतना अधिक अभ्यास हो गया था कि अपने इस अनोखे गठबंधन के कारण न तो उनके शारीरिक और मानसिक विकास ही में किसी प्रकार की बाधा पड़ती दिखाई देती थी, न उनको अपने दैनिक जीवन में ही किसी प्रकार की अड़चन हो पाती थी ।

यों बाहरी संसार शायद ही इस अनोखी जोड़ी के बारे में कभी जान पाता, किंतु दैवयोग से एक अमेरिकन जहाज़ के कप्तान ने एक बार जब बैंकाक के बंदरगाह में लंगर डाला तो वहाँ उसकी निगाह अनायास ही इन जुड़वाँ भाइयों पर जा लगी । उसने किसी तरह इन्हें अपने साथ अमेरिका चलने को राज़ी कर लिया । उस समय इन दोनों भाइयों की उम्र १८ वर्ष की थी । अमेरिका में जब पहले-पहल ये बोस्टन नगर में उतरे, तो वहाँ इनको देखकर एक सनसनी फैल गई । क्रमशः अपने संरक्षक के साथ इन्होंने अमेरिका के विभिन्न प्रान्तों के अलावा योरोप की भी यात्रा की और अकेले ब्रिटेन ही में लगभग ढाई हज़ार मील की प्रदर्शन-यात्रा उन्होंने की होगी ! उन्हें देखने के लिए जगह-जगह दर्शकों की भीड़ लग जाती और साथ ही रुपयों का ढेर भी ! परन्तु इन बेचारों को उस रक़म में से कुछ भी न मिला—उनका वह ग़ोरा संरक्षक ही सारी आमदनी बटोरकर चलता बना । अंत में जब योरोप से लौटकर वे वापिस अमेरिका आए तो वहाँ के महान् सरकारी प्रदर्शक बार्नम के साथ उनका संबंध हो गया और उसके तत्त्वावधान में अकेले न्यूयार्क शहर ही में पाँच वर्ष तक वे अपना प्रदर्शन करते रहे, जिससे कालान्तर में उनके पास लगभग दो लाख रुपए की सम्पत्ति हो गई ।



आपको यह जानकर विस्मय होगा कि ये दोनों जुड़वाँ भाई ६३ वर्ष की उम्र तक ज़िन्दा रहे और उन्होंने अपने अलग-अलग विवाह भी किए, जिनसे उनके कुल मिलाकर २२ बच्चे पैदा हुए ! उनकी प्रणय-कथा बड़ी मनोरंजक साथ ही काफ़ी समस्यापूर्ण भी थी, जैसा कि उनके अजीब शारीरिक गठबंधन के कारण होना अनिवार्य था ! यही नहीं, उनके जीवन की और भी कई ग़ुत्थियाँ ऐसी थीं, जिनका समाधान सरल न था । उदाहरण के लिए, बड़े-बड़े अमेरिकन और ब्रिटिश डॉक्टरों ने काफ़ी ज़ोर देकर इन जुड़वाँ बन्धुओं के बारे में यह निश्चित मत प्रकट किया था कि उन दोनों के शरीर यद्यपि एक-दूसरे से जुड़े हुए थे, किन्तु उनके व्यक्तित्व एकदम अलग-अलग थे—वे दो पृथक् व्यक्तित्व थे । तो फिर प्रश्न यह था कि यदि उनमें से कोई एक अपराध करता तो क़ानून के अनुसार यद्यपि वही अकेला दण्ड का पात्र हो सकता था, किन्तु उसे कोई भी सज़ा देते समय दूसरे को कैसे उस सज़ा से मुक्त रखा जा सकता था ? इसी तरह संपत्ति के मामले में भी यह निश्चित करना एक ठेढ़ा प्रश्न था कि किसी भी जायदाद पर यदि उनमें से एक का ही स्वामित्व हां तो दूसरे को उस पर अधिकार रखने से कैसे वंचित किया जाय ? परन्तु दूसरी ओर यह भी समस्या प्रस्तुत होती थी कि यद्यपि डॉक्टरों ने उन्हें दो विभिन्न व्यक्ति घोषित कर दिया था फिर भी उनकी कई बातें ऐसी भी थीं कि वे 'दो शरीर एक प्राण से युक्त' ही प्रतीत होते थे । उदाहरण के लिए, उन्हें सदैव साथ-साथ ही नोद आती, साथ-साथ वे जगते और साथ-साथ ही उन्हें भूख लगती ! यदि एक को सिगरेट पीने का मन होता तो दूसरे को भी अवश्य होता था, यदि एक की तबीयत खराब होती तो दूसरे का भी निश्चय ही वही हाल होता ! बचपन में एक बार जब उन्हें चेचक और खसरे की बीमारी हुई थी तो दोनों को साथ ही साथ हूई थी और अंत में जब उनकी मृत्यु भी हुई तो साथ-साथ ही ! सब से अजीब बात तो यह थी कि वे दोनों शायद ही कभी आपस में बातचीत करते थे ! इसका कारण वे यह बतलाते थे कि किसी भी क्षण किसी भी बात की उन दोनों को एक साथ ही समान अनुभूति होती थी और तत्संबंधी एक-साँ भाव उनके मन में जगता था । अतएव एक-दूसरे से विवाद करने की उन्हें कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी ! इसी कारण वे शतरंज जैसे खेल आपस में कभी नहीं खेलते थे, यद्यपि दूसरों के साथ वे बड़े मज़े में ऐसे खेल खेला करते । इसका कारण बतलाते हुए वे कहते कि हम दोनों का आपस में खेलना तो वैसा ही है जैसा कि बाएँ हाथ का दाहिने हाथ के साथ खेलना ! जब वे किसी विषय पर किसी दूसरे आदमी से बातचीत करते तो सदैव एक समय में एक ही विषय पर उन दोनों से बात की जा सकती थी—यह कभी नहीं होता था कि उनमें से एक किसी एक विषय पर बात कर रहा हो और दूसरा दूसरे विषय पर । प्रायः बातचीत में एक का अधूरा वाक्य दूसरा पूरा कर देता था, मानों दो मुँह से एक ही आदमी बात कर रहा हो ! किन्तु इतना सब-कुछ होने पर भी कभी-कभी वे परस्पर कई बातों में घोर मतभेद भी प्रकट करते थे । उदाहरण के लिए, १८४७ में एक राजनीतिक चुनाव के अवसर पर दोनों ने दो विभिन्न उम्मीदवारों को वोट दिए थे !

डॉक्टरों ने कई बार सोचा कि ज़रूरी ही द्वारा उनके उस गठबंधन को काटकर उन्हें एक-दूसरे से अलग कर दें, परन्तु ऐसा इसलिए नहीं किया गया कि इससे संभवतः उनकी जान पर आ बनती । ६३ वर्ष बाद उनके मरने पर जब उनकी शव-परीक्षा की गई तो डॉक्टरों की इस धारणा का पूरी तरह समर्थन हो गया कि यदि उनका यह मार्मिक बंधन काट दिया जाता तो वे अवश्य ही मर जाते !

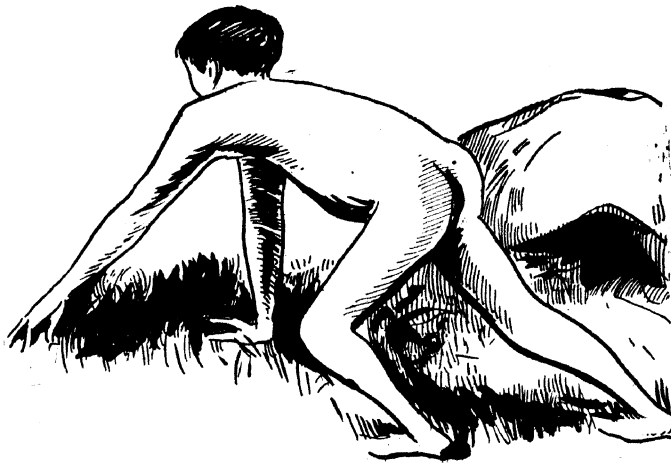
जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, इन जुड़वाँ भाइयों की जीवनकथा का सबसे मनोरंजक, साथ ही सबसे अधिक समस्यापूर्ण अंश उनकी प्रेम-कहानी है । कहते हैं, जब वह लंदन में थे उन दिनों वहाँ के एक कुलीन घराने की एक लड़की, कुमारी सोफ़िया, की उन दोनों के प्रति प्रगाढ़ आसक्ति हो गई ! परन्तु उन दोनों के साथ संबंध रखने का अर्थ था क़ानून की दृष्टि में एक घोर दण्डनीय अपराध करना ! और भी दूसरी कई अड़चनें सामने थीं ! अंत में बेचारी लड़की मन मारकर रह गई । किन्तु इन जुड़वाँ बंधुओं की प्रणय-कथा वहीं समाप्त नहीं हो गई । आगे चलकर अमेरिका में पुनः दो बहनें उन पर आसक्त हो गईं और अप्रैल १, १८४३, को उन दोनों ने इन दोनों भाइयों से विवाह कर लिया—'एडलेड ईट्स' ने चॉंग से और 'सारा एन' ने एंग से ! कुछ दिन तक तो ये सब मिलकर साथ-साथ रहे, किन्तु अंत में नित्य गृह-कलह होने लगा, क्योंकि दोनों बहनों की आपस में नहीं बनती थी । अंत में यह तय पाया कि दोनों भाई लगभग तीन मील के अंतर पर अपनी-अपनी पत्नी के लिए पृथक्-पृथक् दो मकान बनवाएँ और प्रत्येक घर में वे बारी-बारी से तीन-तीन दिन रहें ! इस प्रकार उन्होंने अपने विवाहित जीवन के लगभग ३० वर्ष बिताए । इस बीच चॉंग के ७ लड़कियाँ और ३ लड़के तथा एंग के ७ लड़के और ५ लड़कियाँ हुईं । अंत में १८७४ ई० की जनवरी की २३ वीं तारीख के दिन उनके दीर्घ जीवन के अंतिम पटाक्षेप की भी

घड़ी आ पहुँची। उस दिन चाँग को कड़ी सर्दी लग गई थी और फलतः दोनों भाई विश्राम के लिए एक कमरे में चले गए और बिस्तरे पर लेट गए। आधीरात को वे उठे और कुर्सी पर बैठकर तापने लगे। ऎंग मझे में था और उसे नींद आ रही थी। पर चाँग ने कहा कि लेटते हुए उसकी छाती में दर्द होता है। अंत में वे पुनः बिस्तरे पर जा लेते और ऎंग को गहरी नींद लग गई। जब वह जगा तो उसने अपने लड़के से पूछा—“तुम्हारे चाचा चाँग की तबीयत कैसी है ?” लड़के ने कहा, “वह तो एकदम ठंडे पड़ चुके हैं—वह मर गए !” इस पर ऎंग रोने-चीखने लगा और उसने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा, “अब मेरी भी अंतिम घड़ी आ पहुँची है !” वह तड़पने लगा और दो घंटे में उसके भी प्राण निकल गए, यद्यपि जब वह सोने गया था तब एकदम स्वस्थ था !

इसके बाद अमेरिका और दूसरे कई देशों में भी ऐसे कई जुड़वाँ यमलों की जोड़ियों का पता लगा जिनमें कई जोड़ियाँ बहनों की थीं। ऐसी ही एक जोड़ी का चित्र दाहिनी ओर प्रदर्शित है। इन बहनों का नाम है मेरी और मारजरी गिब्ज़, और ये कूल्वे की जगह एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं ! भारतवर्ष में भी लगभग पचीस-तीस वर्ष पूर्व दक्षिण की ऐसी ही जुड़वाँ बहनों की एक जोड़ी स्थान-स्थान पर घूमकर प्रदर्शन करती फिरती थीं। क्या ही मनो-मंजक बात होती यदि उपर्युक्त स्थानीय जुड़वाँ भाइयों का विवाह ऐसी ही जुड़वाँ बहनों की किसी जोड़ी से होता !



मेड़ियों द्वारा पाले गए मनुष्य के बच्चे !



किंसी एक जाति के जानवर

द्वारा दूसरी जाति के जानवर के बच्चों के पाले-पोसे जाने के उदाहरणों की प्रकृति में कमी नहीं है। इसका सबसे मशहूर उदाहरण है कोयल और कौए का। सभी कोई जानते हैं कि कोयल स्वयं अपना अंडा नहीं सेती, वह चालाकी से उसे कौए के घोंसले में रख आती है और उससे जो बच्चा पैदा होता है वह जब तक उड़ने लायक नहीं हो जाता तब तक कौए द्वारा ही पाला-पोसा जाता है। इसी तरह और जानवरों के बारे में

भी कई मिसालें मिलती हैं। एक भारतीय पादरी ने एक बार एक ऐसी बँदरिया का हाल लिखा था, जो चूहे के बच्चों को गोद में लेकर लाड़-प्यार से खेलाया करती थी और जिसने एक बार गीदड़ का एक बच्चा पाल लिया था ! बिल्ली द्वारा कुत्ते के बच्चों के पाले जाने के तो कई उदाहरण मिलते हैं। कहते हैं, एक बार एक हथिनी ने एक गैंडे के बच्चे को स्तन-पान कराकर बड़ा किया था और बबून नामक एक बंदर ने इसी तरह बिल्ली के कुछ बच्चों का पालन किया था। तो फिर क्या आश्चर्य है, यदि कुछ जंगली जानवरों द्वारा मनुष्य के बच्चों के पाले जाने की कथाएँ भी, जो आए दिन काफ़ी सुनने में आती हैं, अचरशः सत्य हों ! ऐसी कहानियाँ अत्यन्त प्राचीन काल से देश-देश में प्रचलित हैं, जिनमें संभवतः सबसे मशहूर कहानी रोमूलस और रोमस नामक उन दो भाइयों की है, जो एक मादा भेड़िया द्वारा पाले-पोसे गए थे और जिनके नाम पर रोम नगर बसा है ! ईरानी संत ज़रथुश्त्र के संबंध में भी यह प्रसिद्ध है कि बचपन में वह कुछ शत्रुओं द्वारा चुराकर भेड़ियों के भिटे में छोड़ दिए गए थे। किन्तु भेड़ियों ने उन्हें मारा नहीं और उन्हें पाला-पोसा ! यूनानियों में कई ऐसी प्राचीन कथाएँ प्रचलित रही हैं, जिनमें गिद्धों द्वारा मनुष्य के बच्चों के पालने-पोसने के उदाहरण मिलते हैं।

आधुनिक युग में भेड़ियों द्वारा पाले गए मनुष्य के बच्चों के सबसे अधिक उदाहरण भारतवर्ष ने प्रस्तुत किए हैं और नवंबर सन् १९२० में श्री० जे० एल० सिंह नामक एक भारतीय ईसाई पादरी द्वारा मिदनापुर के एक अत्यन्त घने जंगल में भेड़िए के एक भिटे से इसी प्रकार पाली गई दो लड़कियों की प्राप्ति के बाद से तो इस विषय में अब ज़रा भी शंका नहीं रह गई है कि सचमुच ही कभी-कभी भेड़िए मनुष्य के बच्चों को उठा ले जाते हैं और उन्हें पाल लेते हैं। उपर्युक्त दोनों लड़कियाँ जिस समय मि० सिंह को मिली थीं, उस समय वे भेड़ियों की ही तरह चारों हाथ-पैरों के बल चलती थीं (दे० पिछले पृष्ठ का निचला चित्र), गुराँती थीं, और नित्य तीन बार एक खास ढंग से वे भूँका करती थीं ! उनकी यह आदत कई दिन तक जारी रही। बड़ी मुश्किल से उक्त पादरी साहब और उनकी दयालु पत्नी के अथक परिश्रम, धैर्य और बुद्धिमानी द्वारा इन पशुतुल्य बालिकाओं को आदमी की तरह कुछ-कुछ पैरों पर खड़े होकर चलना, निरामिष आहार ग्रहण करना, कपड़े पहनना और बोलना



सिखाया गया। इन लड़कियों का नाम 'कमला' और 'अमला' रखा गया था। मानव-समाज से भटककर भेड़ियों के भिटे में जा पहुँचनेवाली ये अभागी बालिकाएँ सिवाय अपने शरीर के और किसी भी बात में मनुष्य नहीं कही जा सकती थीं। उनमें अन्य लड़के-लड़कियों के साथ खेलने या उनसे जान-पहचान करने का ज़रा भी भुकाव नहीं पाया जाता था। वे प्रायः जंगली जानवरों के बच्चों की ओर ही अधिक आकृष्ट पाई जाती थीं। वे कच्चा मांस खाने की सबसे अधिक शौकीन थीं और जब उन्हें कोई भी चीज़ खाने-पीने को दी जाती तो वे कुत्ते-बिल्ली की तरह भुक्ककर अपने मुँह से लपलपाकर या ज़बान से चाटकर ही खाना खाती थीं ! कपड़ों से उन्हें इतनी अधिक चिढ़ थी कि आरंभ में जब भी उन्हें कोई वस्त्र पहनाए जाते तो वे उन्हें चीर-फाड़कर फेंक देती। रात को कंबल वगैरह ओढ़ाने पर भी वे उसी तरह उन्हें फाड़ डालतीं। चाहे जितनी भी सर्द होती, वे कभी भी काँपती न थीं। उनकी बोली केवल भोंकने और गुराँते तक ही सीमित थी, पर मि० सिंह और उनकी पत्नी के प्रयत्न से धीरे-धीरे वे पुनः मानवता की ओर लौटने लगीं। इसके लिए उन्हें तरह-तरह के अनाखे ढंग से शिक्षा दी जाती थी। पर दुर्भाग्य से वर्ष भर बाद ही अमला बीमार होकर मर गई और केवल एक ही लड़की बची रह गई। कहते हैं, अमला की मृत्यु होने पर उसके विछोह में कमला की हालत भी बहुत ही शोचनीय हो गई थी। वह एकांत में बैठकर शोक से आँसू टपकाया करती। दो दिन तक उसने कुछ न खाया-पिखा था और बड़ी कठिनाई से उसका वह शोक भुलाया जा सका था !

भेड़ियों द्वारा पाले गए इन मनुष्य-बालकों के आलावा मनुष्य के कुछ ऐसे बच्चों का भी पता लगा है जिन्हें बचपन ही से रीछ उठा ले गए थे और उन्हीं के द्वारा पाले-पोसे जाकर जो बड़े हुए थे। ऐसे ही एक बालक का चित्र बाई और दिया गया है। यह अमेरिका के जंगलों में से मिला था।



पाँच बहनें, जिनका जन्म एक साथ हुआ !

कुछ वर्ष पूर्व की बात है। उत्तरी कैनेडा के कैलैन्डर नामक नगर में एक छोटे-से घर में पाँच बालिकाओं का एक साथ जन्म हुआ था। जन्म के क्षण से ही उनकी चर्चा प्रत्येक दैनिक और साप्ताहिक पत्र में बड़ी धूम-धाम के साथ होने लगी। जिसको देखिए वही उन बालिकाओं के सम्बन्ध में पूछताछ करता—सब कोई उन्हें देखने को उत्सुक रहते। तब से आज तक उनके सम्बन्ध में किसी भी चल-चित्र की अभिनेत्री अथवा राजकन्या की अपेक्षा अधिक

विष्र क्षापे जा चुके हैं और लेख लिखे जा चुके हैं। इन बालिकाओं के नाम हैं—सैमिल, मैरी, वाईवान, ऐनैट और ऐमिली। ये संसार भर में सबसे अधिक प्रसिद्ध बालिकाएँ हैं, फिर भी इन्होंने सबसे कम यात्रा की है ! इनके संरक्षक हैं स्वयं सम्राट् जार्ज। १९३९ में जब सम्राट् कैनेडा गए थे, तब सब बहनों ने इन्हें 'पापा' कहकर सम्बोधित किया था।

आज ये पाँचों बहनें खूब स्वस्थ हैं, सुखी हैं, और मस्त हैं। अन्य बालकों की भाँति अनेक बातें उन्हें अच्छी लगती हैं और अनेक बुरी लगती हैं, किन्तु सबको एक वस्तु बहुत प्रिय है—वह है ग्रामोफोन। हर रात्रि को सोने से पहले उनकी नर्स उन्हें ईसा की प्रार्थना का रैकर्ड सुनाती है। उस समय सब बहनें आँखें बन्द कर और हाथ जोड़कर अपनी-अपनी चारपाइयों के पास घुटने टेककर बैठ जाती हैं और अपनी नर्स के साथ वह प्रार्थना गाती हैं।

लगभग तीन वर्ष हुए होंगे जब प्रथम बार ये पाँचों बहनें गिरजाघर गई थीं। उनके जीवन में वह एक महत्त्वपूर्ण दिन था, क्योंकि उसी दिन रोमन कैथलिक चर्च ने इस बात की अपनी स्वीकृति घोषित की थी कि इन बालिकाओं में विवेक ने जन्म ले लिया है।

वे आठ मास की थीं तब से कभी डैफ्रो अस्पताल से वे बाहर नहीं गई हैं और न उन्होंने अभी तक अपने जन्म-स्थान के ही दर्शन किए हैं। अपने महल में—जिसकी वे स्वामिनी हैं—उनका वैज्ञानिक दङ्ग से लालन-पालन हो रहा है, जिससे कि वे आदर्श नागरिक बनें। उन्हें देखने के लिए लोगों की भीड़ लगी रहती है।

यात्रा के दिनों में पाँचों बहनों को खेलते हुए देखने के लिए सहस्रों की संख्या में जनता उनके गाँव में उमड़ पड़ती है। सगे-सम्बन्धियों, पड़ोसियों और स्वयं उन्हें उस समय धन एकत्रित करने का बड़ा सुन्दर अवसर मिलता है। इस प्रकार पाँचों बहनों के नाम बैंक में २ लाख पौण्ड जमा हो गए हैं !

इन बालिकाओं की देखभाल में प्रतिवर्ष ११,००० पौण्ड व्यय हो जाता है।

अभी तक ये अपने घरवालों से बहुत-कम सम्पर्क में आई हैं। केवल एक ही बार उन्होंने अपने घर के अहाते के बाहर आने का साहस किया है और सो भी सम्राट् और सम्राज्ञी के स्वागत के लिए।

इस बात की बहुत देखभाल रखी जाती है कि कहीं कोई उच्छ्का इन बालिकाओं को चुराकर न ले जाए। एक अवसर पर एक नर्स बहुत ही धवरा गई थी। वह उनके सोने के कमरे में जाकर जब एक पर्दा हटाने लगी तो उसकी दृष्टि मैरी के पलंग पर गई। वह झाली था। नर्स बहुत ही भयभीत हो गई। बच्चे चुरानेवालों ने कई बार इन पाँचों बहनों को चुरा ले जान की धमकी दी थी। तो क्या वे मैरी को वास्तव में चुराकर ले गए ? शीघ्र ही अस्पताल भर में खोज कराई गई, पर मैरी का पता न लगा। सहसा एक चौकीदार ने सोने के कमरे में से जाते समय वाईवान के पलंग पर एक रठा हुआ कुब्बड़-सा देखा। उसने नर्स को बुलाया। कुब्बड़ हटाने पर मैरी दिखाई पड़ी, वह वाईवान से ठंड के कारण चिपटी पड़ी थी।

विशेषज्ञों की सम्मति में सैसिल सबसे अधिक सुगमता-पूर्वक अपना पाठ याद कर लेती है, किन्तु उसका जी शीघ्र ही उचट जाता है; वाईवान में नेतृत्व ग्रहण करने के विशेष लक्षण हैं; पाँचों बहनों में मैरी सबसे अधिक सुस्त है; ऐनैट सबसे अच्छा गाती है; ऐमिली का वाम हस्त बहुत चलता है और उसे छेड़खानी करना अच्छा लगता है।



नड	ईनोक	सैम	डन	जो
९६ वर्ष	९४ वर्ष	९१ वर्ष	८३ वर्ष	७९ वर्ष

पाँचों भाई दीर्घजीवी हुए !

ये पाँचों व्यक्ति सहायक भाई हैं और इनमें से प्रत्येक को दीर्घायु पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जैसा कि प्रत्येक के चित्र के नीचे सूचित आया से ज्ञात होता है। यदि हम इन सबकी आयु के वर्ष जोड़ें तो उनका योग ४४३ वर्ष होगा !



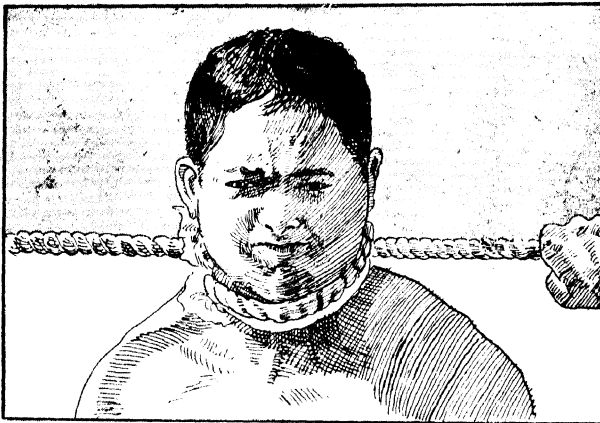
असाधारण गणितज्ञ !

शङ्कर नदक रंगा नामक यह दक्षिण

भारतीय महाशय तीन मिनिट के भीतर ही बिना कागज़-पेंसिल की सहायता के, केवल अपने दिमाग में ही हिसाब लगाकर, छः संख्याओंवाली रकम में उतनी ही संख्याओं की दूसरी रकम का गुणा करके ठीक-ठीक गुणनफल बता देते हैं ! वह कारवार नामक स्थान के रहनेवाले हैं । जिस प्रकार कई लोग असाधारण स्मरण-शक्ति से संपन्न होते हैं, उसी तरह बहुतेरों को प्रकृति से असाधारण गणित-बुद्धि के रूप में वरदान मिला रहता है ।

हवाई छतरी से उतरते हुए चुरट सुलगा लेनेवाला उड़ाका

हैराल्ड पार्कहर्स्ट नामक यह उड़ाका ५००० फीट की ऊँचाई से हवाई छतरी द्वारा उतरते हुए बीच आसमान में चुरट सुलगा लेता है ।



सर्पभक्षी

ऊपर जिन महाशय की तस्वीर दी जा रही है, यह जाति के इटैलियन हैं और इनका नाम है 'पाज़ोनी' । आपकी खूबी यह है कि आप साँपों को पकड़कर उन्हें ज़िन्दा ही निगलकर खा जाते हैं, चाहे वे कितने ही ज़हरीले क्यों न हों !

इसे फाँसी का डर नहीं !

पूना के न्यू हाईस्कूल के गुर्दु नामक इस सत्रह-वर्षीय विद्यार्थी की

गर्दन इतनी मज़बूत थी कि उसके आसपास रस्सी का फंदा डालकर प्रत्येक बाज़ू में छः-छः आदमियों से पूरी ताकत के साथ खिचवाने पर भी उस पर कोई दबाव नहीं पड़ता था ! अब भला बताइए कि इस अद्भुत आदमी के लिए फाँसी का फंदा क्योंकर खतरनाक कहा जा सकता है ! कहते हैं, उसकी यह विशेषता कोई ईश्वरीय देन नहीं थी, बल्कि उसने विशेष प्रकार के अभ्यास और व्यायाम द्वारा ही अपनी गरदन को इस दर्जे तक मजबूत बनाया था ! काश कि वह अपना गुर उन लोगों को बता दे जिन्हें फाँसी की सज़ा दी गई हो !

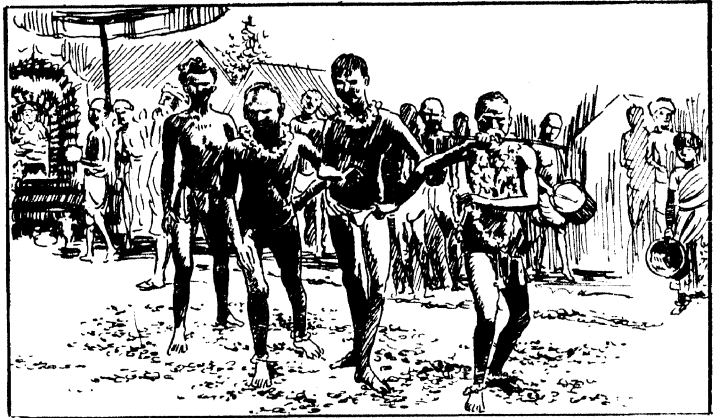
(दाहिनी ओर) लंदन
में आग पर चलते हुए
खुदाबख्श ! (नीचे)
डॉक्टर द्वारा खुदाबख्श
के पैरों की जाँच !



दहकते हुए अंगारों पर नंगे पाँव चलनेवाले !

प्रचण्ड आग पर नंगे पाँव चलने की बात भारतवर्ष के लिए कोई अनदेखी या अनसुनी जैसी बात नहीं है, क्योंकि आज भी यहाँ के देहातों में कई लोग विशेष मनौती पूरी करने के लिए अथवा कोई धार्मिक रस्म मनाने के लिए दहकते हुए अंगारों पर चलते देखे जाते हैं और ऐसा करते समय उनको ज़रा भी आँच नहीं लगती ! किन्तु योरप-अमेरिकावालों की निगाह में तो यह बात कदापि न मानी जा सकनेवाली एक असंभव-सी घटना है । यदि उन्हें कहा जाय कि भारतवर्ष ही में नहीं, बल्कि प्रशान्त महासागर के फ़िज़ी आदि द्वीपों में भी कई जातियों के लोग अपनी विशेष धार्मिक रस्मों को मनाते समय जलते हुए कोयलों या अंगारों पर चलते हैं तो वे या तो इन बातों को निरी कपोलकल्पित कहकर खिल्ली उड़ाने लगेंगे या फिर यही कहेंगे कि अवश्य ही ऐसा करनेवाले किसी छल-कपट से काम लेते होंगे ! परन्तु कुछ वर्ष हुए, भारतवर्ष के एक पढ़े-लिखे काश्मीरी मुसलमान मि० खुदाबख्श ने (जो प्रोफेसर के० बी० ड्यूक के नाम से भी मशहूर हैं) विलायत में लंदन विश्व-विद्यालय की मनोवैज्ञानिक अनुसंधान-समिति के तत्त्वावधान में चुने हुए वैज्ञानिकों और डॉक्टरों के सामने इसी तरह दहकती हुई आग पर कई बार नंगे पाँव चलने का प्रदर्शन करके न केवल वहाँ की जनता में ही तहलका मचा दिया था, बल्कि विज्ञान की दुनिया में भी मानों एक नई गुत्थी पैदा कर दी थी । प्रस्तुत पृष्ठ पर उसी प्रदर्शन-संबंधी कुछ चित्र दिए गए हैं । इस प्रदर्शन के समय एक लंबी खाई खोदकर उसमें कई मन लकड़ी भरी गई और जलाने पर जब उसके दहकते हुए कोयले बन गए, तब खुदाबख्श अपने पैरों में से जूते और मोज़े निकालकर नंगे पाँव उन कोयलों पर चलने के लिए अग्रसर हुए । उस समय एक डॉक्टर ने उनके पैरों की अच्छी तरह से परीक्षा की ताकि मालूम हो जाय कि उन्होंने कहीं कोई रासायनिक दवा आदि तो न लगा ली थी ! परन्तु डॉक्टर को कोई भी शिकायत न मिली । खुदाबख्श ने खाई के एक

सिरे पर खड़े होकर पहले अपने मज़हब के सुताबिक कुरान की आयतें पढ़ीं और तब बड़े इत्मीनान के साथ वह अंगारों पर पैर रखते हुए उस खाई के इस सिरे से उस सिरे तक चले गए। ऐसा उन्होंने कई बार किया और प्रत्येक बार चार-चार क़दम उन्होंने रखे। जब वह चल चुके तो पुनः डॉक्टर ने उनके पैरों के तलवों की जाँच की, पर उसे कोई भी अंतर न दिखाई पड़ा। सब दर्शक दंग रह गए। इस पर



भी दर्शकों में से एक मि० डिग्बी मोयनाड को विश्वास न हुआ और वह स्वयं जाँच करने के लिए अपने जूते और मोज़े उतारकर बड़े साहस के साथ उन अंगारों पर उतरे, परन्तु एक-दो क़दम चलने पर ही उनके पाँव बुरी तरह जलकर झुलस गए और उन्हें बाहर कूद जाना पड़ा। उपस्थित वैज्ञानिकों के अनुसार उस आँच का तापमान ४२० डिग्री शतांश से कम न था, और वे सब यह देखकर दंग थे कि खुदाबख़्श पर ऐसी भीषण आँच का ज़रा भी असर क्यों नहीं हुआ। स्वयं खुदाबख़्श का कहना यह था कि यह सब केवल हृदय भागिक भ्रमा के बल पर किया जाता है।

इसी पृष्ठ पर ऊपर दाहिनी ओर के चित्र में दक्षिण भारत के कुछ ग्रामवासी इसी प्रकार आग पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं। इस तरह आग पर चलने का रिवाज़ राजपूताने और मध्य भारत में बहुत है और वहाँ इसे “चूल चलना” कहते हैं।



अग्निभक्षक !

यह पंजाबी तीन मिनट तक अपने मुँह में जलते हुए कोयले रख सकने का सामर्थ्य रखता है। उसके मुँह में दहकते हुए कोयले की आँच दिखाई दे रही है !



लास अंगारे की तरह तपी हुई तलवार को चूम लेनेवाला !

सीलोन (लंका) का यह आदमी अपनी तलवार को भट्टी में लाज अंगारे की तरह तपाकर उसे ओठों से चूम लेता था !

एक साथ ही पाँच वाचन शब्द लिख देनेवाली महिला !

यिआ एल्बा नामक यह योरपीय महिला एक ही बार में एक साथ ही पाँच विभिन्न शब्द, चाहे वे किसी भी भाषा के क्यों न हों, लिखने का सामर्थ्य रखती थी ! आप कहेंगे कि यह कैसे संभव हो सकता है—आश्चर्य लिखती तो होगी वह एक ही कलम से ! किन्तु यही तो यिआ एल्बा के उस आश्चर्यजनक करतब की श्रुती थी कि वह एक कलम से नहीं बल्कि एक साथ ही पाँच कलम से लिखा करती थी—वह पहली और दूसरी कलम तो अपने प्रत्येक हाथ में साधारण ढंग से पकड़े रहती, और तीसरी व चौथी कलमों को उन दोनों हाथों की तर्जनी उँगलियों द्वारा

विशेष प्रकार से पकड़ लेती थी । अब रही पाँचवीं कलम, सो इतनी लंबी रहती थी कि उसे वह अपने मुँह में थाम लेती थी । बस, सामने कोई बड़ा-सा तख्ता रखकर वह सरपट अपनी पाँचों कलमों को दौड़ाने लगती और एक साथ ही पाँच शब्द का पाँच वाक्य लिख डालती ।

उसके इस करतब में जो आश्चर्य की बात थी वह दर-असल उसकी उँगलियों के संचालन में नहीं बल्कि इस बात में थी कि एक साथ ही उसका दिमाग पाँच अलग-अलग विषयों पर किस प्रकार ध्यान दे लेता था, क्योंकि वस्तुतः हम एक क्षण में एक ही बात पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं !

पाँव की उँगलियों द्वारा लिखाई !

काठियावाड़ के सदाशिवगढ़ नामक स्थान के यह महादेव हाथ के बजाय अपने पाँव की उँगलियों से ही कलम पकड़कर लिख लेते हैं !





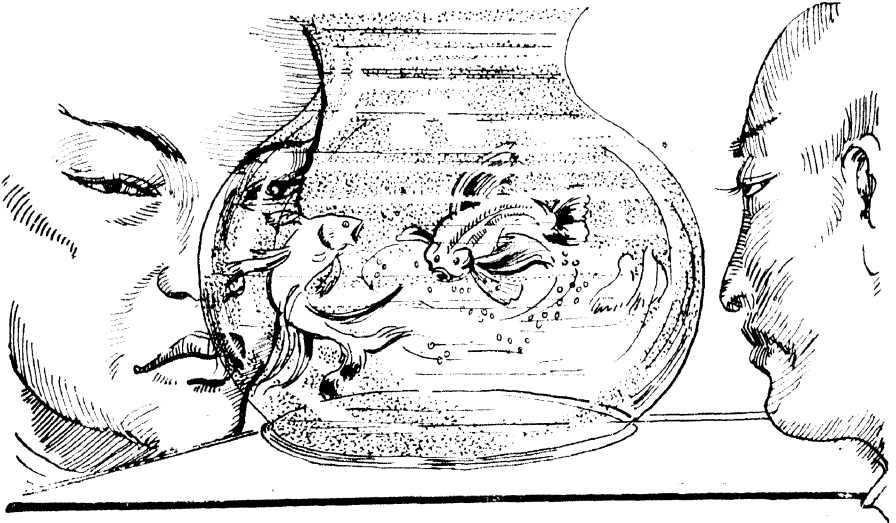
भैंसा-पल्टन !

दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों में अपने-अपने वातावरण के अनुकूल अनेकों प्रकार की सवारियाँ काम में लाई जाती हैं। उदाहरण के लिए अरब के रेगिस्तानों में ऊँट का बोलबाला है तो तिब्बत के बर्फीले पठारों पर याक का और बर्मा के जंगलों में हाथी का। हमारे अपने देश में ही राजपूताने के कुछ रेतीले हिस्सों में, जहाँ घोड़ों की दाल नहीं गलती वहाँ ऊँट का ही सहारा लेकर लोग मरुभूमि की यात्रा तय करते हैं। यही नहीं, बोकानेर, जैसलमेर आदि रियासतों में हाथी-घोड़ों के साथ-साथ बाक्त्रायदा ऊँटों के भी सशस्त्र रिसाले हैं। पर क्या आप यह भी विश्वास करेंगे कि दुनिया का एक प्रदेश ऐसा है, जहाँ की फ़ौजों का वाहन न तो घोड़ा है, न हाथी है, न ऊँट ही, बल्कि भैंसा है ! यह प्रदेश है उत्तरी बोर्निओ, जहाँ सड़कों के अभाव तथा घोड़ों के लिए चलने के योग्य ज़मीन न होने के कारण फ़ौज़ी सैनिक भैंसों पर ही चढ़कर यहाँ से वहाँ जाते हैं। कैसी अजीब दिखाई देती होगी वह भैंसा-पल्टन !

मनुष्य की खोपड़ी से फुटबाल का खेल खेला गया !



दुनिया में कहीं-कहीं ऐसी विचित्र बातें होती हैं कि न केवल उन्हें देख-सुनकर हमें दंग ही रह जाना पड़ता है, बल्कि मनुष्य की अनोखी सूरत पर हँसी भी आती है। उदाहरण के लिए पश्चिमी अफ्रीका की मातानी नामक एक जंगली जाति की एक विचित्र घटना का ही उदाहरण लीजिए। कहते हैं, उक्त जाति के दो फिरकों में किसी विषय पर मतभेद होने पर आपस में यह तय पाया गया कि दोनों पक्ष फुटबाल का खेल खेलें और जो जीत जाय उसकी ही बात मानी जाय। परन्तु वहाँ फुटबाल कहाँ से मिल सकता था ! अतएव वे उठा ले आए मनुष्य की एक खोपड़ी और उससे ही उन्होंने अपना खेल खेला !



जुआँ खेलने का सबसे अनोखा ढंग !

घुड़दौड़, कुत्तों की दौड़ आदि द्वारा बाज़ी बदकर जुआँ खेलने का रिवाज़ तो अब प्रायः सभी देशों में प्रचलित हो गया है, परन्तु स्याम देश के लोगों का जुआँ खेलने का ढंग दुनिया में सबसे निराला है। वहाँ एक शीशे के बरतन में पानी भरकर उसमें एक जाति की छोटी-छोटी मछलियाँ लड़ाई जाती हैं, जो ऐसा पराक्रम दिखाते हुए लड़ती हैं कि प्रतिस्पर्द्धी का प्राण लेकर ही पिंड छोड़ती हैं। और वहाँ के निवासी इन मछलियों की लड़ाई पर ऐसी बाज़ी बदते हैं कि अपना सर्वस्व तक दाँव पर लगा देते हैं !

अल्यूमीनियम, काँच, लकड़ी, और कागज के वस्त्र

आज का वैज्ञानिक जो भी चमत्कार कर दिखाए, सो ही कम है ! जब मनुष्य के मन में

पहले-पहल अपने शरीर को ढकने की कामना जगी थी तब संभवतः उसने पेड़ों की छाल, पत्तों और शिकार में मारे गए जानवरों की खालों का ही आसरा लिया था । कालान्तर में उसने रुई, ऊन, रेशम, सन आदि को बुनकर कपड़े बनाना सीख लिया और पिछले हज़ारों वर्षों से इन्हीं से बनाए गए वस्त्र हम सब पहनते चले आ रहे हैं । किन्तु विज्ञान की कुंजी पाकर अब मनुष्य इन्हीं चीज़ों से संतुष्ट नहीं रह सकता—उसने एक क़दम आगे बढ़ाकर अल्यूमीनियम, तौबा, आदि धातुओं, तरह-तरह की लकड़ियों, और कागज़ तथा काँच तक के वस्त्र बनाकर पहनना शुरू कर दिया है ! दाहिनी ओर के चित्र में यह महिला जो गाउन पहने हुए है तथा बाईं ओर

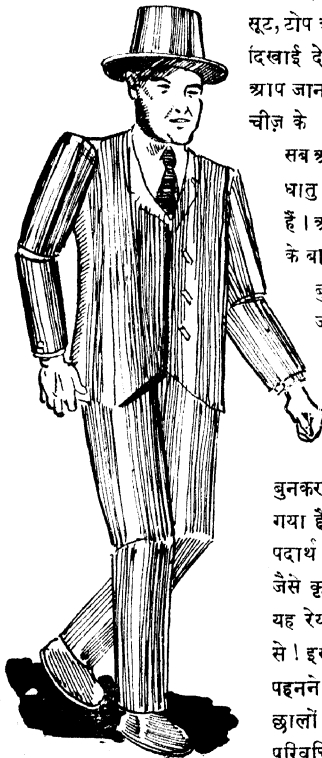
अन्य एक व्यक्ति जो सूट, टोप और जूते पहने दिखाई दे रहा है, क्या आप जानते हैं ये किस चीज़ के बने हैं ? ये

सब अल्यूमीनियम धातु के बने हुए हैं । अल्यूमीनियम के बारीक तारों को बुनकर बनाए जानेवाले ऐसे गाउन अब



आम तौर पर अमेरिका में पहने जाने लगे हैं ।

यही क्यों, काँच को भी एक वास तरीक़े से लचीला बनाकर और उसके बारीक तंतुओं को बुनकर उनसे महीन वस्त्र बनाने में भी मनुष्य सफल हो गया है ! इसी तरह आजकल 'रेयॉन' नामक एक कृत्रिम पदार्थ द्वारा बहुत अधिक मात्रा में तरह-तरह के रेशमी-जैसे कृत्रिम वस्त्र बनने लगे हैं—क्या आप जानते हैं कि यह रेयॉन किन चीज़ों से बनता है ? यह बनता है लकड़ी से ! इस प्रकार मनुष्य फिर से एक प्रकार के 'वलकल-वसन' पहनने लगा है—सिर्फ़ अंतर इतना ही है कि वह पेड़ों की छालों के बजाय लकड़ी के तंतुओं को वैज्ञानिक रीति से परिवर्तित करके अपने वस्त्र बुनता है !



दुनिया का सबसे अद्भुत टोप !

जर्मनी के बेवेरिया प्रान्त के कुछ गाँवों में विशेष त्यों-हारों के मौक़े पर इस प्रकार के विचित्र टोप पहनने का रिवाज़ है, जिन पर शिकार में मारे गए पक्षियों और दूसरी कई चीज़ों की एक नुमाइश-सी लगी रहती है ! इस मौक़े पर जिसका जितना ऊँचा टोप होता है, उतना ही अधिक महत्त्व उसे दिया जाता है !



डूबने का भय न रहा !

मि० अलबर्ट समर्स
नामक एक

अमेरिकन आविष्कारक ने

तेरते वस्तु पहनने की एक ऐसी पोशाक तैयार की है, जिसे पहनकर बिना डूबने के भय के बेखटके गहरे पानी में नहाया जा सकता है। यह पोशाक बहुत हल्की होती है और इसके अस्तर में बहुत-सी सैल्यूलाइड की छोटी-छोटी थैलियाँ रहती हैं, जिनमें हवा भरी रहती है। साथ ही कार्क से आठगुना हल्का एक वनस्पति-पदार्थ भी इसमें भरा रहता है, जो इस पोशाक को पहनने-वाले को पानी में डूबने नहीं देता। ऊपर दाहिनी ओर एक युवती इस पोशाक को पहनकर तेरते दिखाई दे रही है। किन्तु इससे भी विचित्र तो फिलिस्तीन का सुप्रसिद्ध 'मृत सागर' (Dead Sea) नामक झील है, जिसका पानी बेहद खारा होने के कारण इतना अधिक भारी है कि उसमें आदमी तैरे नहीं फिर भी डूबता नहीं, जैसा कि नीचे के चित्र में प्रदर्शित है !



न्यूगिनी के सरदार का

अनोखा ताज !

यह न्यूगिनी द्वीप की एक खूँछवार

जंगली जाति का सरदार है, किन्तु परो और पत्तो से सुसज्जित उसके इस दर्शनीय टोप से तो यही भूलकता है कि उसकी जाति जंगली होने पर भी बहुत अधिक कलाप्रेमी है।



दलाई-लामा—तिब्बत का विचित्र महंत !

तिब्बत के प्रधान पुरोहित और शासक 'दलाई-लामा' की गणना दुनिया के गिने-चुने आश्चर्यों में की जा सकती है। 'दलाई-लामा' शब्द का अर्थ है 'महा-समुद्र', अर्थात् जिसके पास सर्वाधिक ज्ञान और शक्ति हो। वह 'अवलोकितेश्वर' नामक बौद्ध देवता का अवतार माना जाता है। एक दलाई-लामा के मर जाने पर दूसरे का चुनाव बड़े विचित्र ढंग से होता है। उसकी सारे देश में खोज की जाती है। दलाई-लामा के देहान्त के समय देश भर में जो भी बालक पैदा होते हैं, उन सबकी विभिन्न प्रकार से परीक्षा की जाती है और उनमें से जिस बालक में दलाई-लामा के पद के योग्य सर्वाधिक गुण अथवा लक्षण मिल जाते हैं, उसी को वह गौरवपद मिल जाता है। एक विशेष परीक्षा यह होती है कि दिवंगत दलाई-लामा की कोई एक वस्तु अनेक वस्तुओं के साथ मिलाकर रखी जाती है और उन बालकों से उनमें से कोई चीज़ उठाने को कहते हैं। जो बालक उस विशेष वस्तु

को चुन लेता है, उसी को नया दलाई - लामा बना दिया जाता है !

पिछले दलाई-लामा की मृत्यु १९३३ में हुई

थी। उसके उत्तराधिकारी के लिए खोजते-खोजते कहीं सन् १९३६ में एक बालक मिला, जो उस उच्च पद के योग्य पाया गया ! उसका चित्र ऊपर दाहिनी ओर प्रदर्शित है। लाशा में दलाई-लामा का पोटांला नामक एक भव्य प्रासाद है, जिसमें अतुल धनराशि भरी हुई है।



न्यूयार्क का सबसे अजीब कुटुम्ब—वैन्डेल घराना

अब से कुछ ही वर्ष पूर्व तक जिस घर की न्यूयार्क भर में सबसे अधिक चर्चा होती थी वह था वहाँ के सुप्रसिद्ध विप्रथ एविन्यू और उन्तालीसवीं गली के नुकड़ पर स्थित 'वैन्डेल-निवास'। बीस वर्षों तक सब की दृष्टि में वह रहस्यपूर्ण बना रहा, यहाँ तक कि उसका नाम ही 'रहस्य-घर' पड़ गया। उसके सम्बन्ध में न जाने कितनी जासूसी कहानियाँ रची गईं, कितने लेख, नाटक और चल-चित्र लिखे और बनाए गए। वर्षों तक पचास हजार लोग नित्य उसके बन्द द्वार के पास से आते-जाते रहे, फिर भी किसी ने यह न जाना कि उसको बन्द खिड़कियों के पीछे क्या हो रहा है !

जो कोई भी कभी उधर से निकलता था, उसका ध्यान 'वैन्डेल-निवास' की ओर अवश्य ही दिलाया जाता था। इस घर में

रहने वाले कुटुम्ब की गणना सबसे अधिक धानक घरानों में होती थी। उसकी जायदाद का वास्तविक मूल्य दस करोड़ डॉलर कृता जाता था। इस घराने की मुख्य विशेषता यह थी कि उसे प्राचीनता से अत्यधिक स्नेह था। उस विचित्र घराने का एक कुमार और उसकी कुमारी बहन इस बीसवीं शताब्दी में भी न्यूयार्क जैसी नगरी में उस ज़माने के बने हुए घर में बस रहे थे, जब कि अब्राहम लिङ्गन इलीनोइस प्रान्त में एक साधारण वकील थे। जब यह घर गिराया गया तो उसमें से जस्ते के बने हुए नहाने के टब और सङ्गमरमर के हाथ धोने के बर्तन निकले जो कि अमेरिका में दासता के काल के बने हुए थे।

वैन्डेल-घराने के लोग बिजली के स्थान में अब भी गैस की रोशनी ही काम में लाते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि ऐसा करने से दृष्टि के कमज़ोर होने की कम सम्भावना थी। उन्हें न तो रेडियो ही भाते थे, न बिजली के यंत्र। न उन्हें एलीक्ट्रो और मोटरों की ही आवश्यकता थी। उस घर में आधुनिक आविष्कारों का केवल एक ही प्रतिनिधि था और वह था टेलीफोन ! पर वह भी इस घराने के अन्तिम व्यक्ति की मृत्यु के दो दिन पूर्व ही लगाया गया था, जिससे कि उस समय नर्स डाक्टर को बुला सके !

वैन्डेल-निवास की इमारत का मूल्य केवल छः सहस्र डॉलर ही कृता गया था और प्रायः वकील उसके मालिक से कहा करता था कि उस छः सहस्र डॉलर के घर में रहने के लिए तुम लगभग एक सहस्र डॉलर नित्य का अपव्यय क्यों कर रहे हो ? बात दरअसल ठीक थी, क्योंकि जिस भूमि पर वह घर बना हुआ था उसका मूल्य अब चालीस लाख डॉलर से कम न था। और इसका व्याज आदि जोड़ने पर औसतन एक सहस्र डॉलर प्रतिदिन की हानि हो रही थी !

इतना धन होने पर भी उस घरवाले अभी भूतकाल में ही बस रहे थे !

इस घराने के अन्तिम प्रतिनिधि जौन गौटलीब वैन्डेल की मृत्यु १९१४ में हुई थी और मृत्यु के समय तक उसने अपने कपड़े उसी काट के पहने थे जैसे कि अमेरिकन सिविल वार के अन्तिम दिनों में पहने जाते थे। वे कपड़े उसी बक्स में रखे जाते थे, जिसमें रखकर चालीस वर्ष पूर्व वे उस घर में लाये गए थे। वैसे अठारह जोड़े उसने एक बार में बनवाये थे। रंगे हुए वस्त्र उसने कभी नहीं पहने—यदि उसे काले वस्त्र पहनने की आवश्यकता पड़ती तो इसके लिए श्वास तौर से स्काटलैण्ड की एक फ़र्म से काली भेड़ों के ऊन का कपड़ा मँगाया जाता था !

वर्षा हो या धूप, जाड़ा हो या गर्मी, वह सदैव अपने साथ एक छाता ज़रूर रखता था।

उसके पास पास का बना हुआ सिर्फ़ एक ही टोप था, जिसे उसने तब तक बराबर पहना जब तक कि वह एकदम नष्ट न हो गया। प्रति वर्ष के प्रारम्भ में वह उस पर काली चमकीली वार्निश करवा लेता था।

जब कभी मित्रों को जलपान के लिए उसके यहाँ से निमन्त्रण दिया जाता तो निमन्त्रणपत्र लातीनी भाषा में लिखकर भेजा जाता था। उसका विश्वास था कि सब भौति की बीमारियाँ पैरों से ही प्रवेश करती हैं। इसीलिए उसके जूते के तले एक इञ्च मोटे गृष्टापाचा के बने होते थे, जिससे कि रोग के कीटाणु या कृमि उसके पाँव में न घुस जायँ !

यह व्यक्ति अपने समय का न्यूयार्क का सबसे अधिक सम्पत्तिवान् ज़मींदार था और इतना धनवान् वह केवल इसीलिए हो गया था कि बिना हिले-डुले वह एक ही स्थान पर जमा रहा जब कि उसके चारों ओर नगर-विस्तार होता रहा।

जौन गौटलीब की सात बहनें थीं और उसने अपनी शक्ति भर उद्योग किया कि उनका विवाह न हो। उसको भय था कि यदि वे विवाह कर लेंगी और उनके बाल-बच्चे होंगे तो उसकी जायदाद विभाजित होकर नष्ट हो जायगी। केवल उसका एक ही बहन रैबेका ने विवाह किया था, परन्तु वह भी ६० वर्ष की आयु होने पर ! बाकी सब बेचारी कुंवारी ही वृद्धा होकर मरीं।

एक-एक करके जैसे-जैसे उसकी बहनें मरती गईं, उनके कमरों में ताले डाल दिए गए और उनकी खिड़कियाँ बन्द कर दी गईं। अन्त में सातवीं बहन कुमारी ऐला ही वर्षों तक अकेली उस चालीस कमरोंवाले भूत-ग्रह में इने-गिने सेवकों और अपने फ्रांसीसी कुत्ते टोबी के साथ पढ़ी रहती। टोबी अपनी स्वामिनी ऐला की ही भौति उसके कमरे में एक पलङ्ग पर सोता था। और वह अपने बिस्कुट और मांस के टुकड़े एक विशेष पीतल की मेज़ पर, जिस पर एक मालमल का कपड़ा बिछा रहता था, खाता था !

जौन गौटलीब वैन्डेल अपनी कोई वसीयत नहीं लिख गया था, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसकी सम्पत्ति में से वकीलों को एक सेंट भी मिले। परन्तु दरअसल हुआ यह कि २५० वकीलों ने उसकी संपत्ति के निबटारे के मामले में धन बटोरा !



स्वयं अपनी ही हत्या
करने के अपराध में
प्राणदण्ड !

पाल ह्यू बर्ट नामक इस
फ्रान्सिसी को

बोर्डों नगर की अदालत द्वारा

हत्या के अपराध में फाँसी की सज़ा सुनाई गई, जो बाद में आ-
जन्म कैद की सज़ा में बदल दी गई। पूरे २१ वर्ष तक कैद में
रहने के बाद जब एक दिन फ्रान्स की सर्वोच्च अदालत को
पता लगा कि उस पर जिस व्यक्ति की हत्या करने का ज़ुर्म
लगाया गया वह स्वयं वही था तब वह छोड़ दिया गया !

सभापति के आसन पर नरककाल !

सन् १८३२ ई० से आज तक लंदन के यूनिवर्सिटी कालेज हॉस्पिटल के बोर्ड की हर

मीटिंग में सभापति के पद पर जेरेमी बैन्थेम नामक एक व्यक्ति का यह नर-
ककाल उसकी ही पोशाक में सजाकर विराजमान है ! इसका
कारण यह है कि जेरेमी अपनी सारी सम्पत्ति इस कालेज के
नाम इसी शर्तपरदान के रूप में छोड़ गया था कि मृत्यु के बाद
उसका कंकाल बोर्ड की प्रत्येक मीटिंग में सभापति के आसन

पर विद्यमान रहे। इस पुतले की
टाँगों के बीच बैन्थेम की असली
खोपड़ी रखी है।

**नेपोलियन ने घोड़े पर चढ़कर
लालसागर पार किया था !**

आप मानें या न मानें,

पर नेपोलियन ने
मिस्र के युद्ध के समय लाल-
सागर को घोड़े पर चढ़कर
पार किया था ! कारण, जहाँ

वह पार उतरा था, उस जगह सागर केवल मील भर चौड़ा और काफी खिड़ला था।



एक ही आदमी पाँच देशों का नौसेनापति रहा !

टॉमस

कॉर्केन नामक यह स्कॉटलैण्डवासी अपने जीवन-
काल में क्रमशः पाँच देशों की नौसेना का सेनापति

बना— ब्रिटेन का, यूनान का, त्रेज़िल का, चिली का और पेरू का !





सम्राज्ञी या कैदी ?

जापान के 'येदो' नामक स्थान में हरे रंग से

रंगा हुआ एक विशाल राजमहल एकान्त में खड़ा है, और उसके लंबे-चौड़े हाते के चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें बनी हैं। कोई भी अपरिचित अथवा परदेसी आदमी इस हाते के भीतर नहीं जा सकता। यदि कोई ऐसा करने का साहस भी करे तो असम्भव है, क्योंकि पाँच मील की दूरी से ही राजदरबान उसकी चौकसी करते रहते हैं। यह सब जापान की सम्राज्ञी 'नागाको' को बाहरी दुनिया के संपर्क से एकदम पृथक् रखने के लिए किया जाता है !

जहाँ एक ओर जापानी युवतियाँ वायुयानों में उड़ती फिरती हैं, समाचार-पत्र और फैशन की पत्रिकाएँ पढ़ती हैं, सिनेमा देखती हैं, और कल-कारखानों या दूकानों में काम करती हैं, वहाँ दूसरी ओर जापान की सम्राज्ञी की ४० परिचारिकाएँ रात-दिन इस बात की चौकसी रखती हैं कि उनकी सम्राज्ञी संसार की घटनाओं से पूर्ण अपरिचित रहे—कहीं वह बाहर का कुछ हाल न जान ले !

वस्तुतः सम्राज्ञी से केवल एक ही आदमी मिल सकता है और वह है उसका पति हिरो-हितो। अपने पति के अतिरिक्त केवल अन्य पाँच विषयों में वह दिलचस्पी दिखा सकती है और

वे हैं सूर्य, सङ्गीत, सुमन, पत्नी और सुगन्ध। और कुछ जानने की उसे आवश्यकता नहीं और न अन्य किसी विषय पर कोई उससे बातचीत ही कर सकता है !

केवल सम्राट् ही उससे सम्बोधन कर सकता है। जब तक वह प्रथम न बोल ले औरों का मौन रहना ही परमावश्यक समझा जाता है। उससे भेंट करने का अधिकार केवल ऐसे घरानेवालों को ही है, जो २००० वर्ष पुराने हैं।

सम्राज्ञी के निकट कोई भी समाचार-पत्र अथवा पत्रिका नहीं जा सकती। उसने आज तक न कभी टेलीफ़ोन के दर्शन किए हैं, न रेडियो ही सुना है।

उसका देश युद्ध में फँसा है, परन्तु नागाको को इसका पता भी नहीं कि संसार में क्या हो रहा है—उसे इसकी हवा भी नहीं लगने दी जाती।

सम्राट्, युवराज, उच्च पदाधिकारी, परिचारिकाएँ सभी इस बात का काफ़ी ध्यान रखते हैं कि राज-प्रासाद की वायु कहीं बाह्य संसार की घटनाओं से दूषित न हो जाय। बस, वर्ष में केवल तीन बार सम्राज्ञी राज-प्रासाद से बाहर जाती है—पहली बार अपने जन्म-दिवस के अवसर पर सम्राट् का स्वागत करने के लिए, दूसरी बार ग्रीष्म की छुट्टियाँ मनाने के लिए, और तीसरी बार जाड़े की छुट्टियाँ मनाने के लिए।

वस्तुतः उसे ऐसे बंधन और अज्ञान में रहना पड़ता है, जैसा कि कैदी ही को रखा जाता है। पिछले अस्सी वर्षों में जापान ने पश्चिम से बहुत-कुछ सीखा है और बहुत-कुछ पचाया भी है। किन्तु जो बातें नागाको की गरीब-से-गरीब प्रजा तक को मालूम हैं, वे उसे स्वयं नहीं मालूम। वह आज भी शताब्दियों पूर्व के प्राचीन युग ही में मानों बस रही है।

इवैज़लिन बूथ

७० वर्ष की वृद्धा होने पर भी जिसके विवाह के प्रस्ताव चले आ रहे हैं !

हज़ारों पुरुषों ने उससे विवाह करने के लिए प्रस्ताव किए—क्या करोड़पति, क्या मल्लुए, क्या किसान, क्या भिखारी सभी ने उसका द्वार खटखटाया, किन्तु सबको उसने निराश किया। योरप के एक बहुत ही प्रसिद्ध राजघराने का एक राजकुमार भी महीनों उसके पीछे-पीछे घूमता रहा और उससे विवाह करने के लिए गिड़गिड़ाता रहा, परन्तु उसके भी प्रस्ताव को उसने ठुकरा दिया। और आज भी यद्यपि वह ७० वर्ष की वृद्धा हो गई है, उसके पास डाक से बराबर इतने अधिक विवाह-प्रस्ताव आते रहते हैं कि उसकी सैक्रेटरी उन्हें उसे दिखाने का भी कष्ट नहीं उठाती।

इस सुन्दरी का नाम इवैज़लिन बूथ है और वह संसार भर में सबसे बड़े स्वयंसेवक-दल—‘मुक्ति-सेना’—की अध्यक्ष है, जिसमें तीस सदस्य तो केवल ऑफ़िसर ही हैं, और जो संसार के ८६ विभिन्न देशों में भूखों को भोजन कराते और ८० विभिन्न भाषाओं में अपना प्रेम का सन्देश सुनाते हैं।

यद्यपि इवैज़लिन वृद्धा हो गई है और अब वह दादी के पद की अधिकारिणी है, किन्तु उसके केश अभी लाल ही बने हुए हैं, शायद ही कहीं-कहीं उसका एकाध केश श्वेत हुआ होगा। उसमें एक असीम उत्साह का भाव है और असाधारण उल्लासजनक स्फूर्ति है।



लोग कहा करते हैं कि वास्तविक जीवन चालीस वर्ष की आयु में ही प्रारम्भ होता है ! परन्तु यदि आप इस महिला को एक अत्यन्त वेगवान् अश्व पर, जिसको दो पुरुष पकड़े रहते हैं, सवारी करते हुए देख लें, तब तो आप कह उठेंगे कि वाह, जीवन का वास्तविक प्रारम्भ तो ७० वर्ष की अवस्था से ही होना चाहिए !

इवैज़लिन ने बहुत सस्ते दामों में इस घोड़े को खरीदा था, क्योंकि उसका मालिक उस पर सवारी करते भय खाता था। इस अश्व का नाम है 'स्वर्ण-हृदय' (Golden Heart), और जब इवैज़लिन 'स्वर्ण-हृदय' को एड़ लगाती है, तब वह ऐसा नाटक खेलता है, ऐसा 'फैल' मचाता है, ऐसा बिखरता है कि उसको रास्ते पर लाने में पर्याप्त समय लग जाता है ! और केवल इवैज़लिन ही उसे बश में कर सकती है, अन्य किसी को तो वह पुटु पर हाथ ही नहीं धरने देता। वह प्रति दिन प्रातःकाल एक घंटे तक पुड़सवारी करती है—उस समय उसके एक हाथ में रास होती है, तो दूसरे में अपने किसी भाषण की प्रति।

प्रत्येक ग्रीष्म ऋतु में जब इवैज़लिन अमेरिका में होती है, तब वह जार्ज भील में कभी हंस की भाँति तो कभी कच्छप की भाँति तैरा करती है। और सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि इतनी अधिक आयु में भी वह चार घंटों में ही जार्ज भील के इस पार से उस पार तैर जाती है !

प्रत्येक रात्रि को वह अपने सिरहाने पत्र लिखने का एक पैड लेकर सोती है और प्रायः अर्द्धरात्रि में ही उठकर वह लिखने लग जाती है। उसके साथ उसकी तीन महिला सैक्रेटरी भी रहती हैं, जिन्हें कभी-कभी वह रात को २ बजे ही जगा देती है और कार्य प्रारम्भ कर देती है।

उसको अपने घर से दफ़्तर तक मोटर द्वारा पहुँचने में एक घंटा लग जाता है। उस समय भी मोटर में चलते-चलते वह प्रायः लिखाया ही करती है।

इवैज़लिन वृथ के जीवन में एक सबसे अधिक विचित्र अनुभव अमेरिका के यूकॉन नामक प्रदेश में हुआ था। वहाँ उन दिनों पहले-वहल स्वर्ण की खदानों का पता लगा था, इसलिए बड़ी भेड़ें वहाँ पहुँची थीं और देश भर में उत्साह की लहर दौड़ गई थी। उस सुदूर उत्तरी प्रदेश की और लाखों की संख्या में जनता उमड़ रही थी। इवैज़लिन ने सोचा कि इन लोगों की सेवा करने के लिए उसकी सेना की वहाँ आवश्यकता होगी ही, अतएव दो शिस्तित नर्सों और तीन-चार सहायकों के साथ वह भी यूकॉन की ओर चल दी। जब वह स्कागवे नामक स्थान पर पहुँची तब वहाँ महंगाई का यह हाल था कि एक अंडे का मूल्य २५ सेंट था, और मक्खन तीन डॉलर का एक पौण्ड मिल रहा था ! फलतः अनेक व्यक्ति भूखों मर रहे थे। वह जहाँ जाती सभी जगह क्लौन्डाइक के हत्यारे 'सोपी' स्मिथ नामक एक व्यक्ति के अत्याचारों की चर्चा सुनती। 'सोपी' स्मिथ और उसके आदमी सोने की खानों से लौटनेवाले आदिमियों को प्रायः मार्ग में गोली से मारकर उनके धन को लूट लेते थे। इस डाकू को मार डालने के लिए संयुक्तराज्य के अधिकारियों ने प्रौज का एक दस्ता भेजा, परन्तु 'सोपी' ने उन सबको गोलीयों से मार डाला और भाग गया !

स्कागवे बहुत ही बुरी जगह थी। पौंच हत्याएँ तो वहाँ उभी दिन हुई थीं, जिस दिन इवैज़लिन वहाँ पहुँची थी !

उसी रात को इवैज़लिन ने यूकॉन नदी के तट पर एक धार्मिक सभा की और २५,००० स्त्री-पुरुषों को उसने उपदेश दिया ! तब सबने एक स्वर से अपने बचपन के गीतों का गायन—उन धार्मिक गीतों का, जिन्हें उनकी माताएँ उनको गाकर सुनाया करती थीं।

आर्कटिक प्रदेश की वह रात्रि अत्यधिक ठंढी थी। सब ठिठुर रहे थे। परन्तु जब इवैज़लिन गा रही थी, तो एक अजनबी पुरुष ने आकर उसको एक कम्बल ओढ़ा दिया।

वह अथार भेड़ रात के एक बजे तक इसी प्रकार ठिठुरती हुई कीर्तन करती रही। तदुपरान्त इवैज़लिन और उसके साथी सभी ही चीड़ के वृक्षों के वन में भूमि पर ही सो गए।

इन लोगों ने तापन को आग जलाई ही थी और अगो कोको बनाने की तैयारी हो रही थी कि एकाएक पौंच आदमी बन्दूकें लिये हुए वहाँ आ पहुँचे और उनमें से एक व्यक्ति टोप उतारकर बोला—“मेरा नाम 'सोपी' स्मिथ है और मैं आपसे यह निवेदन करने आया हूँ कि मुझे आपके कीर्तन से असोम आनन्द मिला है। मैंने ही आपके लिए वह कम्बल भेजा था, जब आप गाने में लीन थीं।” वस्तुतः एक कम्बल किसी को दे देना कोई बड़ी बात नहीं प्रतीत होती, परन्तु उस कड़ाके के जाड़े में, जहाँ अनेक ठंड से मर रहे थे, वह कितनी अमूल्य भेंट थी, यह वे लोग ही जानते थे !

इवैज़लिन ने पूछा—“यहाँ स्कागवे में हमें कोई इतरा तो नहीं है ?” उत्तर मिला—“जब तक मैं यहाँ हूँ, कोई भय की बात नहीं है। मैं आपकी रक्षा करूँगा।”

उस भुव-प्रदेश की अर्धरात्रि में वह तीन घंटे तक उस डाकू से बातें करती रही। वह बोली—“मैं लोगों को जीवन देती हूँ, पर तुम जीवन का हरण करते हो। यह तो ठीक नहीं। इसमें तुम्हारी ही हार होगी। देर-सवेर वे तुम्हें मार डालेंगे।” वह उससे उसके बचपन और उसकी माता की याद दिलाने लगी और ‘सोपी’ ने बताया कि वह अपनी दादी के साथ कभी मुक्ति-सेना की सभाओं में जाया करता था और ताली बजा-बजाकर धर्म-गीत गाया करता था।

इसके पश्चात् कुमारी बूथ और ‘सोपी’ स्मिथ दोनों ने घुटने टेककर प्रार्थना की और उन चीड़ के वृक्षों के तले वे गद्गद हो अश्रु बहाते रहे। इनमें एक थी मुक्ति-सेना की अध्यक्षता, तो दूसरा था उत्तर प्रदेश को भयभीत करनेवाला सबसे बड़ा डाकू। ‘सोपी’ के कपोलों पर अश्रु बह रहे थे और वह उसके सामने प्रतिज्ञा कर रहा था कि अब मैं लूटमार बन्द कर दूँगा और अपने को अधिकारियों के हाथों सौंप दूँगा।

जब ‘सोपी’ वहाँ से गया, उस समय प्रातःकाल के चार बजे होंगे। दिन चढ़ने पर नौ बजे के लगभग उसने अपने एक सहचर के हाथों इवैज़लिन के लिए ताज़ी सिंकी हुई कुल्ल रोटियाँ, मिठाई और आधा सेर मक्खन भेजा। स्मरण रहे कि ये सब पदार्थ उस प्रदेश में सोने से भी अधिक अमूल्य थे।

और इसके दो दिन के पीछे ही यह बात सुनाई पड़ी कि किसी ने ‘सोपी’ स्मिथ को गोली से मार दिया था।

धनकुबेर रॉकफ़ैलर

जिसने ७५ करोड़ डॉलर दान में दिए।

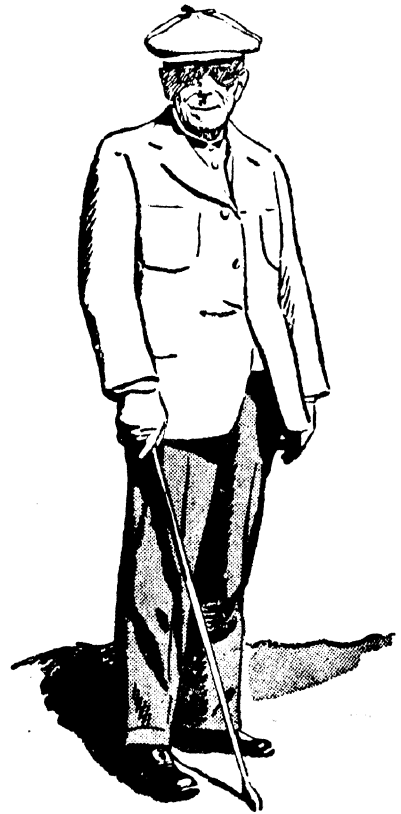
जॉन डी० रॉकफ़ैलर ने तीन आश्चर्यजनक काम किए—

प्रथम, उसने संसार भर में सबसे अधिक धन बटोरा। जीवन के प्रारम्भ में वह प्रचण्ड धूप में प्रति दिन चार सेंट प्रति घंटा के हिसाब से खेत में मज़दूरी करके आलू खोदा करता था, पर आगे चलकर अपने ही जीवन में जॉन डी० ने अरबों की सम्पत्ति उपार्जन की। इस पर भी जो पहली युवती उसके संसर्ग में आई, उसने उसके विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। कारण? युवती की मा ने उससे कह दिया कि वह अपनी विद्या को जॉन डी० रॉकफ़ैलर सरीखे ‘दरिद्री’ के गले कदापि न मढ़ेगी।

दूसरी अद्भुत बात जो उसने की वह यह थी कि संसार भर में सबसे अधिक धन उसने दान में दे डाला। उसने ७५ करोड़ डॉलर (अर्थात् लगभग सवा दो अरब रुपए) दान कर डाले। इसका अर्थ यों कहिए कि यदि उसकी उम्र २५०० वर्ष की होती तो कहा जा सकता था कि प्रति दिन ६०० डॉलर उसने दान में दिये हैं।

और तीसरी अद्भुत बात जो रॉकफ़ैलर ने की, वह यह थी कि वह पूरे ६७ वर्षों तक जीवित रहा। अमेरिका भर में अनेक लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। मार डालने की धमकी से भरे हुए सहस्रों ही पत्र उसके पास आते थे और सशस्त्र अंगरक्षक उसकी दिन-रात रखवाली करते थे। उसका व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था और उसी को उसका सारा प्रबन्ध भी करना पड़ता था। फिर भी उसने सारे भार को वहन किया और इतनी आयु तक वह जीवित रहा। यह सचमुच ही एक अचंचले की बात थी।

व्यापार के भार से धनकुबेर हैरीमन (जिसने रेल की पटरियाँ



बनाकर और बेचकर अतुल सम्पत्ति इकट्ठा की थी) ६१ वर्ष की आयु में ही परलोक को सिधार गया !

व्यापार के भार से धनकुबेर तुलवर्थ (जिसने पाँच-पाच, दस-दस सैंट के मूल्य की वस्तुएँ बेचने के लिए अग्रणीत दुकानें खोली थीं) ६७ वर्ष की आयु में ही चल बसा !

व्यापार के भार से ही धनकुबेर 'बक' ड्यूक (जिसने १० करोड़ डॉलर की सम्पत्ति तम्बाकू बेचकर बटोरी थी) ६८ वर्ष की आयु में ही संसार छोड़ गया !

परन्तु जॉन डी० ने इन सबकी सम्पत्तियों की सम्मिलित जोड़ से भी अधिक सम्पत्ति एकत्रित की और फिर भी वह ६७ वर्ष तक जिया ! और यह स्मरण रहे कि ३० लाख आदमियों के पीछे केवल ३० जन ही ऐसे होते हैं जो ६७ वर्ष की आयु तक पहुँचते हैं, और १० करोड़ में एक भी ऐसा नहीं होता जो ६७ वर्ष का हो जाय फिर भी उसके दाँत सही-सलामत बने रहें । परन्तु जॉन डी० के ६७ वर्ष की आयु में भी एक भी दाँत नकली नहीं था !

आखिर, उसकी इस दीर्घायु का रहस्य क्या था !

हो सकता है कि उसे उसके पूर्वजों से ही चिरजीवी होने की शक्ति मिली हो और इस शक्ति को उसकी शान्त प्रकृति से पुष्टि मिली हो । वस्तुतः वह कभी धवराता नहीं था और कोई उससे हड़बड़ाहट में काम नहीं करा सकता था ।

जब वह 'स्टैन्डर्ड ऑइल कम्पनी' का अध्यक्ष बना तब उसके न्यूयॉर्कवाले दफ्तर में एक कोच पड़ी रहती थी, जिस पर चाहे कुछ भी होता हो वह प्रति दिन दोपहर में आध घण्टे अवश्य सोता था । अपने आखिरी दिनों में तो वह दिन में पाँच बार सोता रहा !

जब वह ५५ वर्ष का हुआ, तब एकाएक सख्त बीमार पड़ गया । उसकी यह बीमारी औषधियों के इतिहासकाल में एक बहुत ही लाभप्रद घटना हुई, क्योंकि रोगग्रस्त होने के कारण जॉन डी० ने लाखों डॉलर औषधियों की खोज के हेतु व्यय कर डाले ! उसके रोगग्रस्त होने से 'रॉक्फ़ेलर-फ़ाउन्डेशन' नामक वह प्रसिद्ध संस्था खुली, जो आज दिन लगभग १० लाख डॉलर प्रति मास संसार भर में स्वास्थ्य-प्रचार के हेतु व्यय कर रही है !

जॉन डी० ने अपना सर्वप्रथम डॉलर अपनी माँ के साथ मुर्गियाँ बेचकर कमाया था । अपने बालकपन के उन दृश्यों की स्मृति में ही बाद में उसने आठ सहस्र एकड़ भूमि पर सुन्दर मुर्गियाँ पाली थीं ।

उसकी माँ ने उसे मुर्गियों की रखवाली करने के लिए जितने भी सैंट दिए थे, उन सबको उसने एक टूटे चाय के प्याले में जमा किया था और अपने बैठकघराने के आतिशदान के ऊपर स्मृतिस्वरूप वह उसे रखता था । वह बचपन में खेत में २७ सैंट प्रति दिन पर काम करता था । उस मजदूरी को बचाकर उसने ५० डॉलर इकट्ठे किए थे और उन डॉलरों को उसने ७ प्रतिशत व्याज पर अपने मालिक को दे दिया था और यह सीखा था कि एक वर्ष में उसके ५० डॉलर उतना अर्जन कर सकते थे जितना कि वह १० दिनों के कठिन परिश्रम से पैदा करता था । उसका कथन था कि—“उसी ज़रूँ मैंने यह निश्चय कर लिया कि मैं धन का दास न होकर धन को अपना दास बनाऊँगा ।”

जॉन डी० ने अपने पुत्र को बहुत धन देकर बिगड़ने नहीं दिया । उदाहरणार्थ, वह अपने पुत्र को अपने हाते की लंबी बाढ़ में से ऐसा कोई खम्भा खोज निकालने के लिए, जिसकी कि मरम्मत की आवश्यकता हो, प्रति खम्भा एक सैंट दे देता था ! उसके पुत्र को एक दिन ऐसे १३ खम्भे मिले और तुरंत ही उसके पिता ने उसे १३ सैंट दे दिए । इसके पश्चात् जॉन डी० ने उसे बाड़ों की मरम्मत करने के लिए १५ सैंट प्रति घण्टा देना प्रारंभ किया और साथ ही उसकी माँ भी उसे बेला बजाने के लिए ५ सैंट प्रति घण्टा देने लगी !

जॉन डी० ने कभी किसी कॉलेज में शिक्षा नहीं पाई । हाईस्कूल पास करने के पश्चात् उसने कुछ मास एक व्यापारिक विद्यालय में बिताए थे । १६ वर्ष का होने पर तो उसने पढ़ाई-लिखाई से सदा के लिए बिदा ले ली थी और इस पर भी उसने शिकागो-विश्वविद्यालय को ५ करोड़ डॉलर का दान दिया !

उसको धर्म से सदैव बहुत रुचि रही । युवावस्था में वह एक 'सण्डे स्कूल' में पढ़ाया करता था । उसने न तो कभी नृत्य किया, न ताश खेले, न वह थियेटर गया, न सिग्रेट पी और न कभी मद्यपान ही किया !

रॉक्फ़ेलर की परम अभिलाषा थी कि वह १०० वर्ष की आयु प्राप्त करे और अपनी उस शताब्दी के जन्मदिन पर 'पोकान्टिको हिल्स' पर बैरड बाजे के आगे-आगे यह गीत गाते हुए चले—“मैगी, जब मेरी-तेरी मधुबेला थी !”

रॉक्फ़ेलर की सम्पत्ति आज भी १०० डॉलर प्रति मिनिट के हिसाब से बढ़ती जा रही है !



चन्द्रकाली
विश्व का सर्व-
श्रेष्ठ नर्तक !
चन्द्रकाली
की माँ

एक हिन्दू नर्तकी थी और पिता था एक फ्रांसीसी। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसकी माता ने उसका और उसकी दो बहनों का पालन-पोषण नृत्य द्वारा किया। वह योरप, एशिया और अमेरिका के प्रत्येक देश में नाची और जहाँ-जहाँ गई वहाँ बालक चन्द्र को भी अपने साथ ले गई। उसके साथ-साथ चन्द्रकाली भी नाचता और विभिन्न प्रदेशों के नृत्य भी वह सीखता जाता था। इस प्रकार चन्द्रकाली ने सभी नृत्यों का श्रुब अभ्यास किया और तब उसने

योरप के नरेशों के सामने अपना नृत्य-प्रदर्शन किया। यद्यपि उनमें से अनेकों नरेश आज अपने-अपने राज्य से हाथ धो बैठे हैं, पर चन्द्रकाली अब भी नृत्य-प्रदर्शन करता हुआ भ्रमण कर रहा है। अनेकों का ऐसा मत है कि वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ नर्तक है—निजिन्सकी से भी बढ़कर। चन्द्रकाली ने कभी किसी नृत्यशाला में शिक्षा नहीं पाई। नाचना उसके लिए उतना ही स्वाभाविक रहा है, जैसे पक्षियों के लिये उड़ना, पुष्पों के लिये खिलना और सरिताओं के लिए बहते रहना।



भटियारे से बादशाह !

बच्चा सक्का का आदि-अन्त

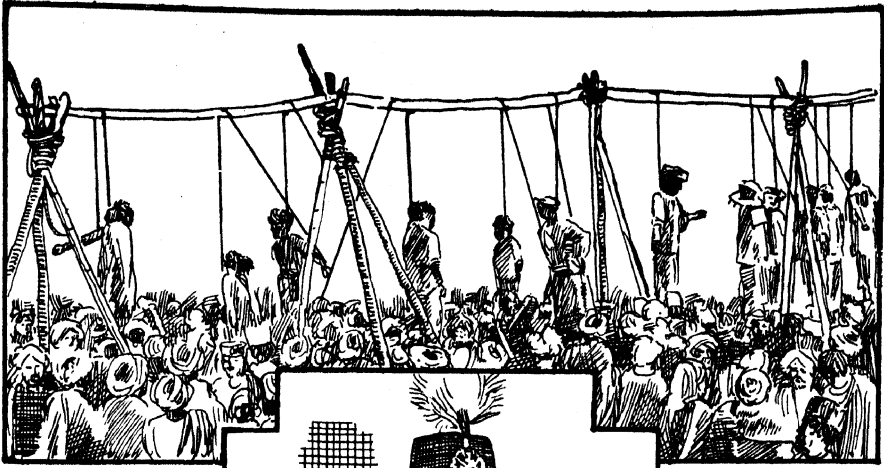
संसार के इतिहास में कई बार ऐसा देखा गया है कि साधारण जनता के मध्य में जन्म लेकर कई लोगों ने उच्च से उच्च पद प्राप्त किए हैं। बच्चा सक्का भी ऐसा ही एक अनोखा व्यक्ति था। एक साधारण श्रेणी का चाय-रोटी बेचने-वाला भटियारा होने पर भी किस प्रकार उसने अमानुल्ला सरोखे संस्कृतिवान्, उच्च आदर्शवादी और उच्च शिक्षा प्राप्त अमीर को सिंहासन से उतारकर अफ़ग़ानिस्तान क्या, एशिया से ही भगा दिया और स्वयं वहाँ का अमीर बन बैठा, यह एक ऐसी घटना है, जो किसी को भी अचम्भे में डाल देगी। बच्चा सक्का ऐसी परिस्थितियों में पैदा नहीं हुआ था कि उसको साधारण-सी भी शिक्षा मिली होती। न उसका घराना ही सुसंस्कृत था, न



उपर कींपंक्ति में बाईं ओर—बच्चा सक्का उस हालत में जब वह पेशावर में चाय-रोटी की दुकान करता था। बीच में—बच्चा सक्का डाकू-सरदार के वेश में। दाहिनी ओर—बच्चा सक्का फ़ैदी की हालत में, जब वह अरक के क़िले में कैद था। नीचे—बच्चा सक्का क़ाबुल का अमीर बनकर अपने बादशाह होने की घोषणा कर रहा है।

उसके मित्र-सम्बन्धी ही ऐसे विचार-वान् थे कि जिनसे उसे अपना जीवन सुधारने की अथवा राज्य संस्थापन करने की प्रेरणा मिलती। फिर भी इस बीसवीं शताब्दी में वह क़ाबुल का बादशाह बन बैठा !

जहाँ एक ओर संसार उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था, वहाँ अफ़ग़ानिस्तान के निवासियों ने मूर्खता-वश मुल्लाओं के बहकाने में आकर अपने को अज्ञानांधकार में ही रखना अधिक श्रेयस्कर समझा और उनके तत्त्वावधान में बच्चा सक्का के ११ महीने के शासन ने अफ़ग़ानिस्तान को योरोप के अन्धकार-युग की याद दिलानेवाला एक दुःस्वप्न बना डाला। कितनी ही को उसने मरवा डाला, कितने ही घरों को मिट्टी में मिला दिया। पिछले अमीर अमानुल्लाओं ने जो कुछ भी अपने देश की उन्नति के लिए कार्य किए थे—स्कूल, अस्पताल, चित्रशाला, पुस्तक-



प्रकाशन आदि—उन सबको उसने भिटा दिया। प्रकृति के नियमानुसार जो जैसा करता है, उसको वैसा ही फल भी भोगने को मिलता है। अंत में अफ़-ग़ान जनता की आँखें खुलीं और उसकी विद्रोह की आँच में एक दिन बच्चा सक्का और



(ऊपर) नादिरशाह द्वारा बच्चा सक्का का तफ़ला उलट दिए जाने पर उसको और उसके साथी विद्रोहियों को फाँसी पर लटका दिया गया है। (नीचे) बच्चा सक्का काबुल के अमीर के भेष में !

उसके अनेक साथियों को, जिन्होंने थोड़े दिनों के प्रभुत्वकाल में नृशंसता का नग्न नृत्य करके मानवता का मुख कलङ्कित किया था, अंत में फाँसी के तख्ते पर लटकना पड़ा। उसकी आदि से अंत तक की जीवन-कहानी चित्रों द्वारा पिछले और इस पृष्ठ पर प्रदर्शित है !

नेपोलियन के संबंध में कुछ मनोरंजक बातें !

नेपोलियन को देरी से बहुत चिढ़ थी। वह कहा करता था—“समय ही सब कुछ है। मैं लड़ाइयाँ हार भी सकता हूँ, पर यह असम्भव है कि एक मिनट की देरी से मैं कोई काम प्रारम्भ करूँ।” परन्तु एक बार उससे देर हो ही गई। मिनटों की देरी नहीं, दो घंटे की। और वह भी अपने विवाह के दिन ! बाट जोहते-जोहते आदित्य वह जज महोदय भी, जो उसका विवाह कराने आये थे, सो गए !

नेपोलियन को अपनी स्त्री जोज़ैफ़ीन से इतना प्रगाढ़ प्रेम था कि युद्धक्षेत्र से वह प्रतिदिन उसको पत्र लिखा करता था। और पत्र भी कैसे होते थे ! प्रेम की आग और आँधी से भरे हुए !

१८३३ में नेपोलियन के आठ प्रेम-पत्र, जो उसने जोज़ैफ़ीन को भेजे थे, लन्दन में २०,००० पौण्ड या लगभग २६०००० रुपए में नीलाम हुए थे !

नेपोलियन अपनी प्रिय पत्नी जोज़ैफ़ीन के मरने पर उसकी समाधि पर जाकर बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोया था और मरते समय उसके मुख से जो अन्तिम शब्द निकला था वह ‘जोज़ैफ़ीन’ ही था !



विलियम रैन्डल्फ हर्स्ट संसार का सबसे अधिक धनवान और शक्तिमान प्रकाशक

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, के 'समाचार पत्रों के बादशाह' विलियम

रैन्डल्फ हर्स्ट की मासिक आय १० लाख डॉलर है, अर्थात् प्रति दिन तीस हजार डॉलर या लगभग एक लाख रुपया ! जितना समय आपको उसका यह वर्णन पढ़ने में लगेगा, उतने में तो उसकी आय लगभग १०० डॉलर और बढ़ जायगी !

उसको 'विलियम रैन्डल्फ हर्स्ट' कहकर कोई भी सम्बोधन नहीं करता और न कोई 'विलियम' ही कहता है। उसके अभिन्नहृदय मित्र तक उसे केवल 'डब्ल्यू० आर०' (W. R.) कहकर सम्बोधित करते हैं और अपने ७० हजार बेतन-भोगियों के लिए तो वह उनका केवल 'चीफ' (Chief) ही है।

उसके चौबीस समाचारपत्रों और नौ पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या कितनी

होगी, इसका अंदाज़ लगाना कठिन है ! वह संसार का सबसे अधिक धनवान और शक्तिमान प्रकाशक है। अमेरिका के घर-घर में उसके नाम की धूम है। इतना होने पर भी उसका जीवन नितान्त रहस्यपूर्ण है—बहुत कम ऐसे होंगे जो उसके निजी जीवन संबंधी बातें जानते होंगे ! इसका कारण यह है कि अमेरिका का यह प्रगतिशील प्रकाशक बहुत ही लजीला और संकोची जीव है ! सच तो यह है कि ५० वर्षों तक लगातार एक-से-एक ख्यातनामा व्यक्तियों से घनिष्टतापूर्वक मिलते रहने पर भी उसे अपरिचित व्यक्तियों से मिलने में अच्छा ही नहीं लगता।

कैलिफ़ोर्निया में उसके यहाँ अनेक अतिथि और मेहमान सदैव ही टिके रहते हैं; किन्तु हर्स्ट की आदत है चुपके से उनके बीच से खिसक जाना और अकेले ही कोई खेल खेलते रहना। और यदि वह न्यूयॉर्क पहुँच गया तब तो वह दूकानों पर सामान ही त्वरीदता फिरेगा !

पश्चिमी संसार में कदाचित् जितना लम्बा-चौड़ा और सम्पन्न 'रैख' (लंबे-चौड़े चरागाहों से घिरा हुआ आवास-स्थान) हर्स्ट का है, उतना बड़ा किसी दूसरे के पास नहीं है। उसकी धरती का क्षेत्रफल २॥ लाख एकड़ के लगभग है और वह समुद्र के किनारे ५० मील तक फैला हुआ है !

संयुक्त राष्ट्र के पश्चिमी किनारे पर प्रशान्त महासागर के तट पर २,००० फीट ऊँचे कगारों पर पूर्वीय ढङ्ग के अनेक विशाल प्रासाद उसने बनवाए हैं, जिनकी सजावट में उसने करोड़ों डॉलर व्यय कर डाले हैं। उनकी दीवारों को उसने योरप के प्रसिद्ध कलाकार होबिलीन द्वारा बुने गए वस्त्रों से, जो कभी फ्रान्स के महान् प्रासादों की शोभा बढ़ाते थे, सजाया है। उनके विशाल कक्षों में रेम्ब्रॉ, रुबेन्स और रेफ़ेल जैसे महान् कलासृष्टियों की अमर कलाकृतियों सजी हुई हैं। अतिथियों के भोजन के लिए उनमें विशाल दीवानखाने बने हुए हैं, जिनमें अमूल्य दर्शनीय वस्तुएँ संचित हैं। परन्तु भोजन के समय वहाँ सबको कागज़ के अँगोछे ही दिये जाते हैं !

उसकी अपनी निजी जन्तुशाला भी है और वह इतनी बड़ी है कि बार्नम का सुप्रसिद्ध सर्कस उसके आगे एक खिलौना

मालूम होता है। वहाँ शेर और चीते दहाड़ा करते हैं, भुण्ड के भुण्ड ज़ैब्रा, भैंसे, जिराफ़ और कँगारू घूमते फिरते हैं और विदेशों की सहस्रों चिड़ियाँ वृक्ष-वृन्तों पर चहकते हुए उड़ती रहती हैं।

योरप में हर्ट्स् पूरे जहाज़ भर जायँ इतनी कला-कृतियाँ ख़रीद डालता है। वह समूचे विशाल प्रासाद तक ख़रीद लेता है और फिर उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके अमेरिका में मँगा लेता है! उनकी प्रत्येक ईंट और लकड़ी पर नम्बर और लेबिल लगा होता है, जिससे कि पूरा प्रासाद पुनः ज्यों-का-त्यों बनाया जा सके!

उसने इतनी कला-कृतियाँ ख़रीद डाली हैं कि उनका उसे कोई उपयोग नहीं दिखाई देता! उनके रखने के लिए न्यूयॉर्क में उसे एक विशाल गोदाम ख़रीदना पड़ा है! इस गोदाम के प्रबन्ध के लिए २० वेतनभोगी कर्मचारी हैं, जिनको प्रतिवर्ष ६०,००० डॉलर दिया जाता है। इस गोदाम में अजीब ढंग की घड़ियों से लेकर प्राचीन मिस्री मोमियाहूयों (Egyptian mummies) तक रखी हैं!

हर्ट्स् को अपने पशु बहुत प्रिय हैं। एक दिन की घटना है कि हॉलीवुड के कुछ चलचित्रों के अधिकारी हर्ट्स् से मिलने के लिए वायुयान द्वारा आए! लेकिन हर्ट्स् ने उन्हें घंटों बैठा ले रक्खा, क्योंकि वह अपनी एक पालतू छिपकली की (जिसकी दुम कट गई थी) चिकित्सा में दक्षचित्ता था! एक दूसरे अवसर पर उसने अपनी नाव भेजकर आधीरात के समय डॉक्टर को बुलवाया और उसे ५०० डॉलर फ़ीस दी, क्योंकि उसके एक पालतू सूअर की टाँग टूट गई थी!

हर्ट्स् को अपने पिता से ३० करोड़ डॉलर की सम्पत्ति मिली थी। यदि वह चाहता तो मज़े में बिना कुछ किए-धरे आराम से रह सकता था, किन्तु फिर भी नित्य ही वह ८ से लेकर १५ घण्टे तक कठोर परिश्रम करता रहा है और उसका प्रण है कि मृत्यु की अन्तिम घड़ी तक वह इसी तरह काम करता रहेगा!

जिम ब्रैडी

न्यूयार्क का हारुन-उल्-रशीद

गत महायुद्ध के समय न्यूयार्क के हारुन-उल्-रशीद, जिम ब्रैडी, का देहान्त होने पर अमेरिका से एक ऐसा व्यक्ति उठ गया, जिसके अस्तित्व पर कठिनाई से विश्वास किया जा सकता है। जब तक ब्रैडी जीवित रहा उसने ऐसे भोज दिए कि जिनकी तुलना प्राचीन जगत् में भी कहीं नहीं मिलती। रोम के सम्राटों तक की महान् दावतें (जिनमें बुलबुलों की जिह्वायें एक विशेष स्थान रखती थीं) ब्रैडी के भोजों के सम्मुख फीकी प्रतीत होती थीं। कभी-कभी तो वह नगर के पाँच विभिन्न स्थानों में एक साथ ही भोज देता और ये भोज कभी-कभी सत्रह-सत्रह घण्टे तक जारी रहते थे। और उनमें इतनी क्या होता था? एक-एक लाख डॉलर! इन दावतों की स्मृति बनाए रखने के लिए वह अपने प्रत्येक अतिथि को बहुमूल्य हीरों की घड़ियाँ और बूच (जिनका मूल्य एक-एक सहस्र डॉलर तक होता था) भेंट में दे दिया करता था!

इस असाधारण उदारमना व्यक्ति का जन्म एक अत्यन्त साधारण स्थिति के घराने में हुआ था। उसके पिता की न्यूयॉर्क में मदिरा की एक दुकान थी, जहाँ वह बालक-पन में बोटलों के कॉर्क खोल-खोलकर ग्राहकों के सामने रख दिया करता था, परन्तु स्वयं उसने आजीवन कभी मदिरा



नहीं पी। उन दिनों, जबकि ब्रॉडवे में उसी की तूती बोलती थी, उसने अपने मित्रों को सैकड़ों डॉलर की शराबें पिला डालीं और उसके मित्र पी-पीकर मेज़ के नीचे लुढ़कते फिरते, परन्तु जिम ब्रैडी स्वयं अपनी प्यास खाली बीअर के ग्लास खाली करके बुझाने में ही मग्न रहता था, वह नशा नहीं करता था।

तौल में वह तीन मन पाँच सेर था और उसे भोजन से बहुत रुचि थी। पूरे पन्द्रह विभिन्न पदार्थों का भोजन और उनमें से भी विशेष रुचि की कई चीज़ों को दो-दो तीन-तीन बार वह अकेला प्रति रात्रि को खा लिया करता था। तदुपरान्त वह आधा सेर चॉकलेट खा डालता था, और थियेटर में जाते समय पैरमिन्ट का एक बक्स अपने साथ ले जाता था। प्रति सप्ताह वह अपने मित्रों के यहाँ मिश्री के सैकड़ों बक्स मैटस्वरूप भेजा करता था, जिससे प्रति मास उसका अकेला मिश्री का ही बिल दो और तीस सहस्र डॉलर के बीच में होता था। उसे चाय और क्रह्वे से घृणा थी, परन्तु नारङ्गी के रस से विशेष रुचि थी। भोजन करने के पूर्व वह एक गैलन भर नारङ्गी का रस पी जाता था और भोजन के साथ एक गैलन भर और! वृद्धावस्था में जब एक बार उसका ऑपरेशन हुआ था तब डाक्टरों ने उसका उदर साधारण की अपेक्षा छः गुना बड़ा पाया था।

जिम ब्रैडी के पास इतना अधिक धन आया कहाँ से? बात यह थी कि वह एक बहुत ही पटु विक्रेता था। अमेरिका में उसका-सा दूसरा विक्रेता तो कभी हुआ ही नहीं। इसके अतिरिक्त वह भाग्यवान् भी था। जब अमेरिका में रेल की पटरियों पर लकड़ी की गाड़ियाँ दौड़ती थीं, तब जिम ने लोहे की गाड़ियाँ बेचना प्रारम्भ कर दिया। जिम को उन्हें बनाने का ठेका दिया गया। इस ठेके पर उसको प्रति गाड़ी ३३½ प्रतिशत कमिशन मिलता था। इस प्रकार जिम ब्रैडी ने लगभग सवा करोड़ डॉलर कमाये।

यह अन्तराशः सत्य है कि वह हीरों से एकदम लदा रहता था। मास के प्रति दिन के लिए उसके पास जवाहरात का नया सेट रहता था और बहुधा वह दिन में छः-सात बार बदलकर नये-नये जवाहरात पहना करता था। वह ब्रॉडवे में दो सहस्र पाँच सौ अड़तालीस चमचमाते हुए हीरे और उन्नीस लाल धारण कर टहला करता था।

वह अपना धन विचित्र ढङ्गों से व्यय किया करता था। न्यू जर्सी में उसका एक खेत था। वहाँ विशेष उत्सवों पर मोटे स्वर्ण-पत्रों से जड़े हुए बर्तनों में उसकी गायों का दूध काढ़ा जाता था। उसकी बिलिअर्ड खेलने की मेज़ भी कीमती पत्थरों से जड़ी हुई थी। उसके ताश मूल्यवान् सीपी के बने होते थे। अपने प्रासाद को सजवाने के लिए यह-सजक को उसने साढ़े तीन लाख डॉलर दे डाले और प्रति वर्ष अपना सम्पूर्ण फ़र्नीचर अपने मित्रों को दे कर अपने लिए वह फिर नया ही फ़र्नीचर खरीदता था।

उसने लिलिअन रसल नामक एक सुंदरी को स्वर्ण से मढ़ी हुई और सैकड़ों हीरे, लाल, नीलम आदि से जड़ी हुई एक बाइसिकिल मैट में दी थी और जब सुन्दरी लिलिअन फ़िफ़्थ एविन्यू में उस बाइसिकिल पर सवार होकर चलती थी तो बाज़ार में उसका तमाशा लग जाता था।

उसका उदर जिस प्रकार साधारण उदरों की अपेक्षा छः गुना बड़ा था, उसी तरह उसका हृदय भी बड़ा था। जो कोई भी दुःखिया उसके पास धन लेने के लिए आता उसको वह कभी निराश नहीं लौटाता था। उसे मालूम रहता कि उसका धन लौटकर नहीं आएगा फिर भी वह उसकी कोई चिन्ता नहीं करता था। वह कहा करता था—“लुटने में बड़ा आनन्द है, यदि लुटाने को पर्याप्त धन हो।”

जब उसको यह ज्ञात हुआ कि वह बचेगा नहीं और मृत्यु उसकी ओर टकटकी लगाए देख रही है तो उसने अपने उधार दिए हुए लाखों डॉलर के कागज़ मँगाकर सबको उसने फाड़कर फेंक दिया—केवल इसीलिए कि उसकी मृत्यु के पीछे कोई उस धन को एकत्रित न करे। मृत्यु के क्षण में उसने कहा था—“जब मैं मर ही रहा हूँ, तब अपने पीछे ऐसा काम क्यों छोड़ जाऊँ जिससे लोगों को कष्ट हो।”

मरते समय उसने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी। उसके हीरे, लाल और जवाहरातों का ही मूल्य २० लाख डॉलर था। जिम से अनेकों युवतियाँ प्रेम करती थीं, परन्तु वह अविवाहित ही रहा। एक बार उसने लिलिअन रसल की गोद में १० लाख डॉलर रखकर उससे विवाह का प्रस्ताव किया था, परन्तु उसने इन्कार कर दिया था। वह कहा करता था—“संसार भर में कोई भी युवती मुझसे विवाह नहीं करना चाहती, क्योंकि मैं बहुत ही असुन्दर हूँ।” और तब मेज़ पर सिर रखकर बच्चों की तरह वह रोने लगता था।

रेमोंड डिट्मार्स

दुनिया का सबसे बड़ा सँपेरा !

जब 'बुशमास्टर' नामक सर्प न्यूयॉर्क में आ पहुँचा तो सहस्रों की संख्या में जनता उसे देखने को दौड़ पड़ी। देखने में तो वह केवल छुः फीट का बच्चा था, परन्तु उसके फन में घातक विष भरा पड़ा था।

न्यूयॉर्क की जन्तुशाला के अधिकारी श्रीयुत रेमोंड डिट्मार्स २५ वर्षों से इस सर्प की खोज में थे और जब वह मिल गया तो इस भय से कि कहीं वह भूखों न मर जाय उन्होंने उसका मुख खोलकर और गले में माँस का टुकड़ा लकड़ी से धकेलकर ज़बरन उसे खाने के लिए बाध्य किया।

डिट्मार्स का सहस्रों सर्पों से पाला पड़ चुका है, परन्तु आज तक किसी भी सर्प ने उन्हें काटा नहीं। बल्कि सर्प के काटे हुए लोगों के लिए उन्होंने एक सीरम तैयार किया है, जिसके द्वारा अनेकों के प्राण बचाए जा चुके हैं।

बालक डिट्मार्स को उसके पिता ने सैनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक सैनिक स्कूल में प्रवेश करा दिया था। परन्तु उसका जी वहाँ तनिक भी न लगा, उसका मन तो वन के जन्तुओं में रमा हुआ था। बड़े उत्साह के साथ उसने न्यूयॉर्क में पाए जानेवाले तमाम सर्पों का सङ्कलन कर डाला। उसकी सारी छुट्टियाँ हडसन नदी के किनारे सर्पों की खोज में ही बीततीं। जब वह बड़ा हुआ तो सर्प खरीदने लगा और उनका व्यापार करने लगा। एक कप्तान ने उसे एक बड़ा अजगर दिया था। डिट्मार्स ने वेस्ट इन्डिज़ के वैज्ञानिकों से सर्पों के लिए लिखा-पढ़ी शुरू की और जङ्गल में रहनेवाले सर्पों के बदले में वह अपने अमेरिकन सर्प देने लगा।

इस समय तक उसने इतने सर्प एकत्रित कर लिये थे कि उसकी माँ ने भय के मारे नीचे के तल्ले से हटाकर घर की सारी ऊपरी मंज़िल उसे दे डाली। जब समाचारपत्रों को उसके सर्पों का हाल ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसके बारे में अनेक प्रकार की कहानियाँ लिखनी प्रारम्भ कर दीं और सँपेरे तथा सर्कसवाले उसके घर के चक्कर काटने लगे।

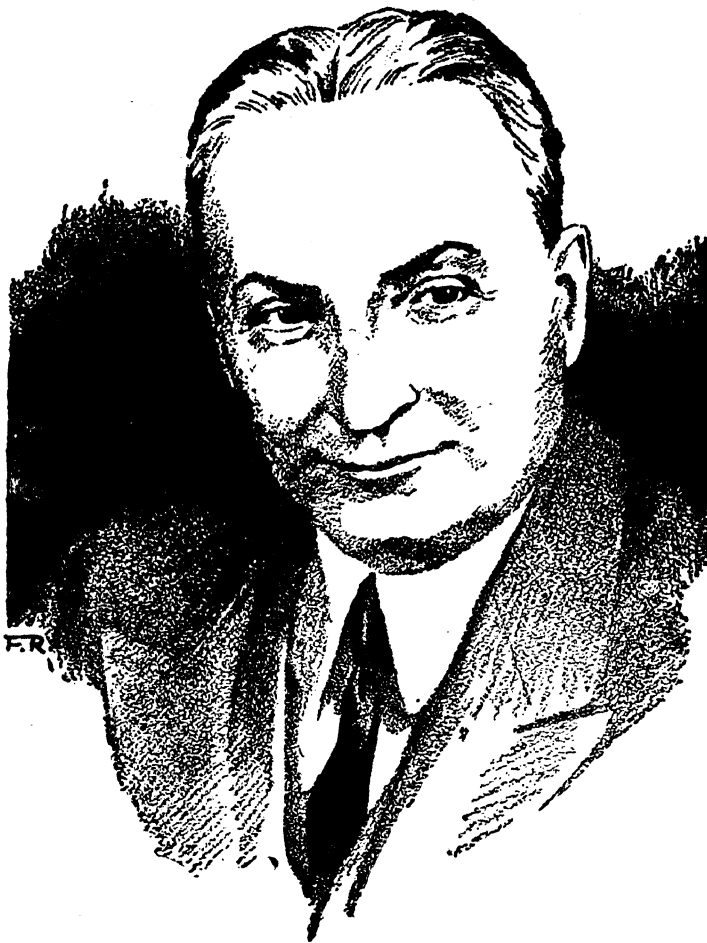
अपने इन सर्पों को भोजन कराने के लिए जब पैसे की चिन्ता हुई, तो उसने स्टैनोग्राफी या संकेतों द्वारा संक्षिप्त लिखने की कला सीखनी प्रारम्भ की। उसके पिता प्रायः उच्चस्तर से डिक्निंस के उपन्यास पढ़ा करते थे। जो कुछ वह पढ़ते उसे ही डिट्मार्स ने शॉर्टहेण्ड में लिखकर अपना अभ्यास बढ़ाना शुरू किया। इस प्रकार उसके पास शॉर्टहेण्ड में लिखे हुए डिक्निंस के समस्त उपन्यास हैं।

वर्षों पीछे जब वह एक समाचारपत्र का सम्पादकात्ता हुआ तो न्यूयॉर्क के चाइना-टाउन में प्रायः जाल द्वारा चूहे पकड़-पकड़कर वह अपने सर्पों का पेट भरने लगा।

जब न्यूयॉर्क नगर में एक बड़ी जन्तुशाला बनाने का निश्चय किया गया तो तुरन्त ही डिट्मार्स को वहाँ सर्पों की देख-रेख के लिए नियुक्त कर दिया गया। उस दिन जब डिट्मार्स ने अपने सब सर्पों को घर से ले जाकर जन्तुशाला में सुरक्षित रख दिया तो उसकी मा ने भगवान् को जी भरकर धन्यवाद दिया।

यह सन् १८९६ की बात थी और आज दिन तो न्यूयॉर्क की जन्तुशाला में विश्व भर के श्रेष्ठतम वन-प्राणियों का सङ्कलन है, और उसके अधिकारियों में रेमोंड डिट्मार्स संसार भर के सर्पों का सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ माना जाता है।





फ्लोरेन्ज जीगफैल्ड

जिसने आजीवन उत्तर में
कभी एक पत्र नहीं लिखा !

चौ

बीस वर्षों तक न्यूयार्क के
ब्रॉडवे में जीगफैल्ड के
मज़ाकिया नाटकों की ही धूम
रही। विश्व भर में कहीं भी
इतना अधिक पैसा खर्च करके
सामयिक घटनाओं की खिल्ली
उड़ानेवाले ऐसे छोटे-छोटे विनोदी
नाटक नहीं खेले जाते थे और न
कहीं इतने उल्लास के साथ उनका
कहीं स्वागत ही किया जाता था।
किसी भी नाट्यशाला ने कभी न
इतना धन उपार्जन किया और न
गँवाया ही, जितना कि जीगफैल्ड
की उस अनोखी नाटकमंडली ने।

इस नाट्यशाला के अधिष्ठाता
फ्लोरेन्ज जीगफैल्ड को किसी भी
जीवित मनुष्य की अपेक्षा अधिक
सुन्दरी युवतियों के टेलीफोन-नंबर
याद थे। उसकी नोट-बुक में सहस्रों
ही प्रमदाओं के नाम, पते और
टेलीफोन-नंबर सदैव दर्ज़ रहते
थे। प्रतिदिन ही उसके कृपाकटाक्ष
की आशा लगाए हुए ५० या ६०
नई ललनाएँ उसके सम्मुख उप-
स्थित की जाती थीं।

उसको यह गव था कि उसके द्वारा अमेरिकन युवतियों के सौन्दर्य-सुयश का संसार में प्रचुर विस्तार हुआ। बहुधा
वह साधारण भौंडी युवतियों तक को, जिनकी ओर कोई दूसरी बार आँख उठाकर भी नहीं देखता, परम रहस्यमयी सुन्दरियों
के रूप में नाट्यशाला के मञ्च पर खड़ा करके दर्शकों की आँखों में चकाचौंध पैदा कर देता था। कोई भी युवती उसकी
नाट्यशाला के मञ्च पर आकर अपना भविष्य सुधार सकती थी। पर जो कुछ उनमें सौन्दर्य का जादू दिखाई देता वह सब
जीगफैल्ड की ही अपनी देन थी।

अपव्यय करने में जीगफैल्ड किसी भी राजा-महाराजा से कम न था। केवल वस्त्रों के लिए वह लाखों डॉलर व्यय
कर डालता था और उनके लिए योरोप और एशिया के सभी बाज़ारों को छान डालता था। उसकी नाट्यशाला के वस्त्रों के
अस्तर तक बढ़िया-से-बढ़िया रेशम के होते थे। उसका विश्वास था कि कोई भी स्त्री अपने को तब तक सुन्दरी अनुभव
नहीं कर सकती जब तक कि उसके तन को सुन्दर वस्त्र स्पर्श न करे।

उसने 'शो बोट' नामक एक खेल को तीन महीने के लिए केवल इसी कारण स्थगित कर दिया था कि उसको उसके
लिए उपयुक्त डेट न मिल सके थे। एक नाटक पर दार्ढ़ लाख डॉलर व्यय करने के उपरान्त भी उसने उसे एक ही बार

प्रस्तुत करके फिर न खेलने दिया, कारण उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह नाटक ज़ीगफ़ैल्ड-परम्परा के योग्य न था।

उसने जो कुछ भी किया पूर्ण ठाठबाट के साथ ही किया। यद्यपि उसके यहाँ सैकड़ों ही पत्र नित्य आते रहते थे, परन्तु उसने स्वयं आजीवन उत्तर में कभी भी एक पत्र नहीं लिखा। वह अपना उत्तर सदैव तार द्वारा देता था। पत्रभङ्ग में जैसे हवा के भोंके के साथ पत्तियाँ उड़ती फिरती हैं, उसी प्रकार उसके यहाँ तार से आनेवाले संवादों का तौता बँध जाता था। वह जहाँ भी जाता अपने साथ में तार के कई खाली फ़ार्म ले जाता था और स्टेशन से दफ़्तर पहुँचने तक उसके उन फ़ार्मों का वह पूरा पैड समाप्त हो जाता था!

यों विश्वास नहीं होता, फिर भी यह सत्य है कि नाट्यशाला में ही मञ्च पर सूचना भेजने के लिए भी वह तार के फ़ार्म से ही काम लेता था! वह किसी को पुकारकर कुछ कहने के स्थान में उसको तार द्वारा ही सूचना देता था। एक बार उसने अपनी खिड़की से भाँककर अपने सामने की खिड़की में खड़े एक पुरुष से उच्च स्वर में कहा—“मैंने तुमको तार दिया था, तुमने उसका नहीं दिया?”

टेलीफ़ोन-घर के सामने से बिना दर्जनों आदमियों से टेलीफ़ोन द्वारा बातचीत किये निकल जाना उसके लिए एक असम्भव बात थी। अपने वेतनभोगियों को टेलीफ़ोन करने के निमित्त वह नित्य ही छुः बजे प्रभात में जग पड़ता था। प्रायः सत्रह-अठारह डॉलर की ही बचत के लिए कभी-कभी वह घंटों उपाय सोचा करता और दूसरे ही दिन बाज़ार में लाखों डॉलर खोने में भी वह नहीं हिचकिचाता था।

उसके सौम्य व्यवहारमात्र से ललनाएँ अपने को सुन्दर अनुभव करने लगती थीं। नाटक की प्रथम रात्रि में कोरस की प्रत्येक युवती को उसकी ओर से फूलों का एक गुच्छा भेंटस्वरूप मिलता था। वृद्धा और अर्द्ध-विक्षिप्त महिलाओं के साथ भी उसका व्यवहार सदैव सौम्य और मृदु ही होता था।

अपनी ख्यातनामा स्त्री-पात्रों को वह प्रति सप्ताह ५,००० डॉलर वेतन देता था, जिससे प्रायः नाटक के समाप्त होने पर उनके पास उसकी अपेक्षा वैङ्ग में अधिक ही डालर होते थे।

कोरस में भाग लेनेवाली युवतियाँ प्रारम्भ में ३० डॉलर प्रति सप्ताह पाती थीं, परन्तु पीछे १२५ डॉलर तक उनको दिया जाता रहा।

उसने चौदह वर्ष की आयु से ही नाटक, सर्कस आदि के प्रदर्शन के कार्य में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था और घर से भागकर उसने निशानेबाज़ी और अश्वारोहण का प्रदर्शन कर कीर्तिलाभ किया था।

पच्चीस वर्ष की आयु होने पर वह सुप्रसिद्ध पहलवान सैन्डो के यहाँ मैनेजर बन बैठा और इस प्रकार उसने अतुल धनराशि एकत्रित कर ली।

पर दो वर्षों के पश्चात् जब वह लन्दन पहुँचा तो उसके पास एक पैसा तक नहीं था, क्योंकि योरप के प्रसिद्ध जुआँड़ियों के अङ्ग्रेजी मॉन्टेकालों में वह अपना सर्वस्व गँवा चुका था! पर इससे उसको लेशमात्र भी चिन्ता न थी। अपने व्यवहार के जादूमात्र से एक और प्रदर्शन का आयोजन उसने कर डाला और विजयगर्व से योरप की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी और एक्ट्रेस अन्नाहैल्ड के साथ वह अमेरिका लौट आया।

अमेरिका की नाटक-कम्पनियों के बड़े-बड़े चतुर सञ्चालकों ने अन्नाहैल्ड को न्यूयॉर्क लाने के भगीरथ प्रयत्न कर डाले थे। उसको भारी वेतन देने का लोभ भी दिया था, फिर भी वह आने को राजी न हुई थी और इस बेकौड़ी-पैसेवाले अज्ञातनामा फ़्लोरेन्ज़ ज़ीगफ़ैल्ड ने केवल अपने व्यवहार के जादू से ही उसको साथ चलने के लिए बाध्य कर दिया! तभी से उसका नाम सभी की ज़बान पर रहने लगा।

अन्नाहैल्ड ने आते ही अमेरिका को मुग्ध कर दिया। उसका अमेरिका में कितना आदर था, यह इसी से जाना जा सकता है कि उसके नाम पर स्त्रियों के वस्त्र, मुख पर लगाने के पाउडर, हैट, सुगन्ध, अश्व, कॉकटेल (पेय पदार्थ) पिल्ले, और सिगारों तक के नाम रखे जाने लगे। अमेरिका के इस समुद्रतट से लगाकर उस समुद्रतट तक उसके नाम पर मदिरा पीकर उसका आदर किया जाता था। और एक वर्ष के भीतर ही ज़ीगफ़ैल्ड ने उससे विवाह भी कर लिया!

कुछ वर्षों के बाद अन्नाहैल्ड को तलाक़ देकर ज़ीगफ़ैल्ड ने बिलीबर्क नामक एक दूसरी सुन्दरी से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर लिया। उससे परिचय करने के दूसरे ही दिन उसने उसके लिए एक समूची फूलों की दूकान ही खरीद डाली और उसे भेंट कर दी! और जब बिलीबर्क ने उससे कहा कि उसने टेलीफ़ोन से उसे धन्यवाद देना चाहा था, पर लाइन खाली

न होने के कारण वह वैसा न कर सकी, तो उसने अपनी उस प्रेमिका के लिए एक टोस सोने का प्रोन लगवा दिया !

ज़ीगफ़ैल्ड को अनिश्चय बहुत प्रिय था। किसी काम के लिए संकल्प करने की उसे बेहद चिढ़ थी। उसकी मेज़ पर लिकोरिस नामक एक काली मिठाई की गोलियों रक्खी रहती थीं। एक दिन उसके एक मित्र ने उससे पूछा, “क्या तुम्हें वास्तव में यह गोलियाँ स्वादिष्ट लगती हैं?” उत्तर मिला, “ये सब श्याम वर्ण हैं, अतएव मुझे यह निश्चय करने का कष्ट नहीं उठाना पड़ता कि कौन-सा वर्ण मुझे सर्वाधिक प्रिय है।”

अपनी ‘फ़ौलीज़’ अर्थात् मसज़रेन के अभिनय के लिए वह जगत्प्रसिद्ध विदूषक (Comedians) नौकर रखता था। किन्तु स्वयं उसे कभी भी उनके विलक्षण करतबों पर हँसी न आती थी। किसी के लिए उसके मुख पर मुस्कराहट की रेखा ले आना असम्भव था। वह इतना तटस्थ रहता था कि उसके एक्टर उसको ‘बर्फ’ जैसा ठंडा’ कहकर पुकारते थे।

चौबीस वर्षों तक यह क्रम जारी रहा कि जिस दिन उसकी ‘फ़ौलीज़’ की प्रथम रात्रि होती उस दिन मोटरों की अधिकता से मार्ग चलना कठिन हो जाता और आगे की पंक्ति में बैठने के लिए एक-एक टिकट तीन-तीन-सौ डॉलर तक का बिक जाता था ! विदूषकों, कोरस में भाग लेने वाली युवतियों और सेवक-सेविकाओं की इतनी भीड़ रहती कि बिना धक्का-मुक्की किए उनके लिए अपना काम करना असम्भव था ! ऐसी परिस्थिति में केवल एक ही पुरुष पूर्ण शान्त रहता था और वह था ज़ीगफ़ैल्ड।

एक और न्यूयॉर्क के निवासी विचित्र काट के काले कोट और सफेद टाइयों लगाये घूमते-फिरते थे और दूसरी ओर ज़ीगफ़ैल्ड स्वयं एक साधारण भूरे रङ्ग का सूट ही पहने रहता था। कहीं बैठकर देखने की अपेक्षा वह सीढ़ियों पर से खड़ा होकर ही अपने नाटक देखा करता था।

सन् १९२९ में जब वॉल स्ट्रीट का एकाएक दिवाला निकला तब ज़ीगफ़ैल्ड के पास भी किराये तक के लिए रुपया जुटाना कठिन हो गया ! उसकी नाट्यशाला में अन्तिम नाटक उसके ही वेतनभोगियों द्वारा एकत्रित धन से खेला गया था।

१९३२ ई० में वह परलोक सिधार गया। कहते हैं, मृत्यु के अन्तिम क्षण में भी उसके शब्द थे—“पर्दा उठाओ ! खूब गाना होने दो ! और अधिक स्फूर्ति से ! प्रकाश करो ! अब अन्तिम दृश्य के लिए तैयार हो जाओ !” मरते दम तक उसके अस्पष्ट शब्द थे, “वाह ! वाह ! बहुत सुन्दर दृश्य है। बहुत... सुन्दर... दृश्य है।”

चार्ल्स डिकिन्स

शेक्सपीयर के नाटकों और बाइबिल को छोड़कर जिसके उपन्यास सबसे अधिक बिक रहे हैं !

बा नवे वर्ष हुए, लन्दन में क्रिस्मस के लगभग एक

छोटी-सी पुस्तिका प्रकाशित हुई थी। वह केवल एक कहानी थी, जो आज अमर हो गई है। अनेक ईसाइयों की सम्मति में वह संसार भर की सबसे महान् छोटी पुस्तक है। जब वह पहली बार प्रकाशित हुई थी तब लंदन की सड़कों पर घूमते हुए जब कभी कोई मित्र आपस में मिल जाते थे तो एक दूसरे से वे जो पहला प्रश्न पूछते वह यही होता कि “क्या तुमने वह किताब पढ़ी है?”

जिस दिन वह पुस्तक प्रकाशित हुई थी उसी दिन उसकी एक सहस्र प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक गई थीं। इस तरह एक पखवाड़े में उसकी १५,००० प्रतियाँ छपकर धड़ाधड़ बिक गई थीं ! तब से तो उसके न जाने कितने संस्करण निकल चुके हैं और भूमण्डल की समस्त भाषाओं में उसके सुंदर अनुवाद निकल चुके हैं। थोड़े ही वर्ष हुए होंगे, अमेरिका के धनकुबेर श्री० जे० पी० मॉर्गन ने अतुल धन-



राशि देकर उसकी मूल प्रति खरीद ली है और आज वह पुस्तक उस धनकुबेर के अमूल्य रत्नों के साथ न्यूयॉर्क नगर की विचशाला में सुरक्षित है।

इस जगत्प्रसिद्ध पुस्तक का नाम है 'क्रिस्मस कैरोल' और उसके लेखक का नाम है 'चार्ल्स डिकिन्स'।

चार्ल्स डिकिन्स के भाग्य में तो अंग्रेज़ी साहित्य का सर्वप्रिय लेखक होना बड़ा था, किन्तु जब उसने लिखना प्रारम्भ किया था तो उसे लोगों द्वारा खिल्ली उड़ाए जाने का इतना अधिक भय था कि चोर की भाँति घर से निकलकर रात के बारह बजे उसने अपना सर्वप्रथम लेख डाक से छुपने के लिए भेजा था—उसे इस बात का भय लग रहा था कि कहीं कोई उसकी उस उद्धतता को देख न ले!

उस समय उसकी अवस्था २२ वर्ष की थी और जब सचमुच ही उसकी वह कहानी प्रकाशित हो गई तो आनन्दाश्रु बहाते हुए गलियों में वह इधर-उधर घूमता फिरा था।

उस कहानी के लिए डिकिन्स को एक भी पैसा न मिला था। और उसके पश्चात् लिखी गई आठ अन्य कहानियों के लिए भी उसे कुछ न मिला। और पहले-पहल एक कहानी के लिए जब उसे कुछ मिला भी तो केवल पन्द्रह रुपये! परन्तु अन्तिम दिनों में उसे ही प्रति शब्द के लिए लगभग ७५ रुपए मिलने लगे थे, जितना कि दूसरे किसी लेखक को न मिला।

अनेक लेखक उनकी मृत्यु होने के पाँच वर्षों के भीतर ही भुला दिए जाते हैं, परन्तु डिकिन्स के मरने के ६३ वर्ष पीछे तक प्रकाशकों ने दो लाख डॉलर तो केवल उसकी एक छोटी-सी पुस्तक के लिए ही दे डाले हैं—और वह भी उस पुस्तक के लिए, जो उसने अपने बच्चों लिए लिखी थी!

गत १०० वर्षों में चार्ल्स डिकिन्स के उपन्यासों की बेहद बिक्री हुई है। शेक्सपीयर और इज़ील को छोड़कर संसार में उसकी ही पुस्तकें सबसे अधिक बिकी हैं। उन्हें नाटक और चल-चित्र के रूप में भी जनता ने अपनाया है।

चार्ल्स डिकिन्स ने कुल मिलाकर चार वर्ष स्कूल में शिक्षा पाई और तब भी १७ अमर उपन्यास उसने रच डाले। उसके माता-पिता ने स्वयं एक स्कूल खोल रखा था, पर वहाँ चार्ल्स कभी नहीं पढ़ा, क्योंकि वह स्कूल नवयुवतियों के लिए था। कम-से-कम विश्वास में तो ऐसा ही लिखा था। एक पीतल की तख्ती, जिस पर लिखा था 'श्रीमती डिकिन्स की पाठशाला', उसके घर के बाहर द्वार पर वर्ष भर लटकी रही, किन्तु लन्दन भर में एक भी नवयुवती ऐसी न निकली जो वहाँ आकर पढ़ती! इस प्रकार न्यय बराबर बढ़ता ही रहा। श्रष्टादाताओं ने तक्राजों के मारे नाकों दम कर दिया। अन्ततो-गत्वा क्रोधोन्मत्त हो उन लोगों ने डिकिन्स के पिता को जेल भिजवा दिया।

चार्ल्स डिकिन्स का बाल्यकाल बहुत दुःखपूर्ण था। उसकी आयु केवल दस वर्ष की थी, जब उसके पिता को जेल जाना पड़ा था और घर में खाने को एक दाना तक न था। अतएव चार्ल्स को प्रतिदिन सबेरे ही कबाड़िये के यहाँ घर की मेज़-कुर्सी बेचने जाना पड़ता था। उसे अपनी सबसे प्यारी पुस्तकें भी, जो गिनती में दस थीं, पेट के लिए बेचनी पड़ी थीं। अनेक वर्ष बीतने पर उसने कहा था, "जब मैं अपनी बे किताबें बेचने लगा, तब मुझे ऐसा लगा मानों मेरा हृदय टुक-टुक हो जायगा।"

अन्त में निराश होकर श्रीमती डिकिन्स अपने चारों बच्चों को साथ लेकर जेल में ही अपने पति के संग रहने के लिए बाध्य हुई। सूर्योदय होने पर बालक चार्ल्स जेल में ही जाकर अपना समय बिताया करता था। रात्रि में वह पुनः अपनी कोठरी में आ जाता और दो अन्य बालकों के साथ सो जाया करता था। ये लड़के उसको बहुत तङ्ग करते। खोजते-खोजते चार्ल्स को एक कारखाने में बोटलों पर लेबिल चिपकाने का काम मिल गया। जो कुछ थोड़ा-सा उसने अर्जन किया, उससे उसने एक अँधेरी कोठरी किराये पर ले ली, जिसके एक कोने में गन्दे कपड़े पड़े रहते थे। डिकिन्स के लिए वह कोठरी स्वर्ग के सदृश सुख देनेवाली थी!

वर्षों पीछे उसने 'ऑलिवर ट्विस्ट' नामक उपन्यास लिखकर अपने बचपन के उस दुःखपूर्ण जीवन का मानों बदला चुकाया।

डिकिन्स ने गृहस्थ-सुख के परम मनोरम दृश्य लिखे हैं, जबकि स्वयं उसका गार्हस्थ्य जीवन अत्यंत क्लेशपूर्ण था। उसको २३ वर्षों तक ऐसी पत्नी के साथ रहना पड़ा, जिसको वह लेशमात्र भी प्यार नहीं करता था। इस पत्नी से उसके दस बालक हुए। परन्तु प्रतिवर्ष कलह की मात्रा में वृद्धि ही होती गई। सारी दुनिया उसके चरणों पर श्रद्धापूर्वक शिर नवाती थी, पर उसका अपना घरनरक बना हुआ था। अंत में गृह-क्लेश इतना बढ़ गया कि उसका जीवन असह्य हो गया।

तङ्क आकर उसने अपनी ही पत्रिका में यह प्रकाशित करा दिया कि उसमें और उसकी पत्नी में विच्छेद हो गया है और इसका समस्त दोष उसने अपनी पत्नी पर ही मढ़ दिया !

मरते समय लगभग छः लाख रुपये वह अपनी साली को दे गया और अपनी पत्नी के लिए मंजूर कर गया केवल १०० रुपये प्रति सप्ताह !

अपनी बुराई सुनना डिकिन्स को लेश मात्र भी सख्त न था। आलोचना से वह क्रोधोन्मत्त हो उठता था। स्वाम देश के मोरों की तरह उसे अपने रूप पर बड़ा गर्व था। जब वह पहले-पहल १८५२ में अमेरिका पहुँचा, तो अपनी लाल वेस्ट-कोटों और नीले वर्ण के ओवरकोटों द्वारा वहाँ की जनता को उसने चकित कर दिया। चार्ल्स डिकिन्स ने खुले आम बाजारों में अपने बालों को कंधे से काढ़कर अमेरिका-निवासियों को जता दिया कि उनकी संस्कृति की लेशमात्र भी उसे परवा नहीं और अमेरिकनों ने भी अपने सूअरों को न्यूयॉर्क के गली-कूचों में खुला छोड़कर डिकिन्स के सारे गर्व को चकनाचूर कर दिया।

डिकिन्स अपने समय का सर्वप्रिय लेखक था ! जब वह दूसरी बार अमेरिका गया तब वहाँ की जनता उसका व्याख्यान सुनने की खातिर टिकट खरीदने के लिए ठंढी हवा में घंटों खड़ी रहती थी। ब्रुकलिन नगर में तो जनता रात्रिभर अलाव सुलगाकर चटाइयों पर पड़ी रही थी। उस समय बेहद ठंढ पड़ रही थी, निमोनिया हो जाने का भय था और एक-एक टिकट का मूल्य था तीन डॉलर। फिर भी जब सब टिकट बिक चुके और सैकड़ों को विफल-मनोरथ जाना पड़ा तो जनता ने ऐसा ऊधम मचा डाला कि मालूम होता था कि गुदर हो गया है।

साहित्य के इतिहास में चार्ल्स डिकिन्स का चरित्र निस्संदेह एक आश्चर्य में डालनेवाला चरित्र है।

नोबल पुरस्कार-विजेता सिंक्लेअर लूई

जो बिना पढ़े ही अपने अधिकांश पत्रों को चूल्हे में भोंक देता है !



सिंक्लेअर लूई का नाम पहली बार सन् १९२० में सुनने में आया। इससे पूर्व वह छः पुस्तकें और भी लिख चुका था, पर साहित्य-जगत् में उस किसी ने पूछा तक नहीं। पर उसके सातवें उपन्यास 'मेनस्ट्रीट' ने देश भर में हलचल मचा दी ! महिलाओं के क्लबों, धर्माचार्यों और समाचारपत्रों ने एक स्वर से उसको हेय, निकृष्ट और त्याज्य बताया। उसके द्वारा एक वास्तविक साहित्यिक युद्ध छिड़ गया और तीन सहस्र मील दूर योरप तक उसका प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ।

इस पुस्तक ने सिंक्लेअर को प्रथम श्रेणी का साहित्यिक बना दिया।

कुछ समालोचकों ने राय दी—“उपन्यास तो श्रेष्ठ है, इसमें सन्देह ही क्या ! परन्तु यह भी अत्युक्ति न होगी कि उसके जोड़ की दूसरी पुस्तक निकालना अब कदापि सम्भव नहीं।”

सिंक्लेअर लूई ने उनके कथन का झूठा सिद्ध कर दिखाया।

मिन्नेसोटा प्रदेश के इस लाल सिरवाले लड़के ने तब से आधे दर्जन वैसे और उपन्यास लिखकर साहित्यिक जगत् को चकित कर दिया है। उसने अपनी एक पुस्तक 'ऐरो स्मिथ' का खाली ख़ाका ही ६०,००० शब्दों में लिखा ! इसका अर्थ यह हुआ कि केवल ख़ाका ही उसने एक पूर्ण उपन्यास के आधे से कुछ अधिक आकार में लिख डाला ! एक बार वर्ष भर तक उसने एक उपन्यास लिखने में बहुत परिश्रम किया और तत्पश्चात् उसकी हस्तलिपि को रही की टोकरी में फेंक दिया !

लूई ने तीन विभिन्न समयों पर 'मेनस्ट्रीट' नामक उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया था और इस महान् कृति को वह १७ वर्षों के पश्चात् कहीं पूरा लिख पाया !

'मेनस्ट्रीट' के पीछे और भी अनेक पुस्तकें उसने लिखीं, जो सभी बेहद बिकीं—'वैबिट,' 'ऐरो स्मिथ,' 'ऐल्मर गैन्ट्री,' 'डॉइस्वर्थ,' 'ऐन विकर्स' आदि ।

सिंक्लेअर लूई का कहना है कि यदि वह साहित्यिक कार्य न करता होता तो ऑक्सफ़र्ड-विश्वविद्यालय में ग्रीक या दर्शन का अध्यापक बन जाना पसन्द करता, या घने जङ्गलों में जाकर पेड़ काटा करता ।

वर्ष भर में छः मास तो वह शहर में रहा करता है और छः महीने वेलिङ्गटन से ८० मील दक्षिण-पूर्व के पर्वतों पर । वहाँ पर उसकी अपनी ३४० एकड़ भूमि है, जहाँ वह शक्कर बनाया करता है और साग-भाजी पैदा करता है । जब उसे बाल कटवाने की आवश्यकता होती है तभी उसका 'नगर-प्रवेश' होता है !

एक बार यह पूछने पर कि "नाम हो जाने पर कैसा लगता है", लूई ने उत्तर दिया था कि "बहुत बुरा लगता है ।" उसके पास इतनी डाक आती है कि यदि सभी पत्रों का उत्तर लिखा जाय तो न तो कोई पुस्तक ही लिखी जा सके, न सोने को ही समय मिले । अतएव बिना पढ़े ही वह अधिकांश पत्रों को चूल्हे में भोके देता है और उनका जलना देखा करता है !

हस्ताक्षर के लिए आनेवालों से उसे बहुत घृणा है । वह भोजनों में भी बहुत कम सम्मिलित होता है और साहित्यिकों के चाय-पानी से तो कभी दूर भागता है ।

जब उससे उसके प्रारम्भिक जीवन के सम्बन्ध में पूछ-ताछ की गई तो उसने उत्तर दिया कि "जो लेखक मुझसे अपनी प्रारम्भिक कठिनाइयों का वर्णन किया करते हैं वे मुझे व्यर्थ तङ्ग ही नहीं करते, वरन् काफ़ी कष्ट भी देते हैं । बात तो यह है कि अमेरिकन लेखकों को पर्याप्त कठिनाइयों का सामना ही नहीं करना पड़ता । जो कठिनाइयाँ दाँत बनानेवालों, डाक्टरों और वकीलों को भेलनी पड़ती हैं, उनसे अधिक हमारे लेखकों को नहीं भेलनी पड़ती । किन्तु लेखक चिल्लपों बहुत मचाते हैं और अपनी कठिनाइयों के सम्बन्ध में बहुत बकभूक किया करते हैं ।"

वर्षों तक वह कलेवे के समय में दो घंटे पूर्व तङ्क के ही जाग जाता और भोजनालय में जाकर चूल्हा सुलगाकर उस पर कूड़े के पानी ओटाने को रख देता था और वहीं मेज़ पर लिखा करता था । वह स्वयं ही अपना भोजन बनाता, और कपड़े धोता ! छः महीने तक उसने दिन-रात काम किया था और उस पर भी केवल २ डॉलर के मूल्य की एक हस्त्य की कहानी वह बेच पाया था । लूई का कहना है कि "अन्य लोगों को यह समय कठिनाई का प्रतीत होता होगा । परन्तु सत्य तो यह है कि उससे अधिक सुखी मैं कभी भी नहीं रहा हूँ ।"

सिंक्लेअर लूई को यह पता नहीं कि अब तक उसकी कितनी किताबें बिक चुकी हैं । उसे यह भी नहीं मालूम कि 'मेनस्ट्रीट' की कितनी प्रतियाँ बिकी हैं और इसकी उसे कोई चिन्ता भी नहीं । उसके रुपये-पैसे और पुस्तकों का समस्त हाल उसके वकील और कोशायुक्त को ही मालूम रहता है ।

सिंक्लेअर को सब प्रकार का अनुभव प्राप्त है । उसके पिता एक साधारण डॉक्टर थे और उन दिनों सिंक्लेअर ही कभी-कभी रोगी को क्लोरोफ़ॉर्म दे देता और पिताजी आपरेशन करते थे ! एक बार उसने अटलांटिक महासागर को मवेशी ले जानेवाले एक जहाज़ में पार किया था ! और नौकरी की खोज में एक बार सबसे छोटे दर्जे में बैठकर उसे पनामा की यात्रा भी करना पड़ी थी । उसने बच्चों के लिए पद्यरचना की और प्रसिद्ध लेखक "जैक लन्दन" को कई कहानियाँ के कथानक बेचे हैं । यही नहीं, बघिरो की एक पत्रिका का वह सहकारी सम्पादक भी रह चुका है ।

वह कभी कोई व्यायाम नहीं करता । उसका विश्वास है कि मोटर में बैठना और उनसे उतरना ही नागरिकों के लिए पर्याप्त व्यायाम है !

खेल-कूद से भी उसे लेशमात्र प्रेम नहीं ।

वह अमेरिका के चार समाचार-पत्रों में काम कर चुका है और उनके दफ्तरों से अयोग्य समझा जाकर निकाला जा चुका है !

जब उसे साहित्य के लिए नोबल-पुरस्कार मिलने की सूचना दी गई तो उसने उसे एक दिल्लगी ही समझा ! कुछ मिनट बाद जब यह ज्ञात हुआ कि वास्तव में उसे पुरस्कार मिला है तो उसे आश्चर्य हुआ !

प्रसिद्ध अभिनेत्री मैरी पिकफ़र्ड

जिसकी आय प्रति घंटा १००० डॉलर रही है !

मैरी पिकफ़र्ड का नाम पहले 'ग्लैडिज़ मैरी स्मिथ' था। बाल्यावस्था से ही उसे नाचना-गाना बहुत प्रिय था। उसका नाम बदलकर मैरी पिकफ़र्ड कर देने का श्रेय डेविड वैलेस्को नामक व्यक्ति को है।

जिस समय आजकल की विख्यात अभिनेत्री ग्रेटा गाबो ने सिनेमा-रंगमंच के दर्शन भी नहीं किए थे और स्वीडन में एक नाई की दुकान में वह पुरुषों की दादी में साबुन लगाया करती थी, उस समय मैरी पिकफ़र्ड अभिनेत्री के रूप में संसार भर में अपना नाम पैदा कर चुकी थी।

मैरी संसार भर की सभी अभिनेत्रियों में अधिक दिनों तक चलचित्रों में काम करती रही है। विख्यात अभिनेता डगलस फ़ेयरबैंक्स ने जब सिनेमा की मशीन के दर्शन भी नहीं किये थे, उससे वर्षों पूर्व ही पिकफ़र्ड का नाम विश्व-विख्यात हो चुका था। जब चार्ली चैप्लिन ने हालीवुड को देखा भी नहीं था, उस समय तक पिकफ़र्ड लाखों डालर कमा चुकी थी और सब अभिनेत्रियों से अधिक वेतन पा रही थी !

मैरी पिकफ़र्ड ने बहुत थोड़ी अवस्था से ही नाटक के रंगमंच पर काम करना प्रारम्भ कर दिया था। अनेकों संस्थाएँ और सभाएँ कानून के बल पर उसको थिएटर में नाचने से रोकती थीं। सभी उससे कहते थे कि नाचना-गाना बन्द करो और स्कूल में जाकर पढ़ो-लिखो। परन्तु मैरी ने किसी की न सुनी। उसने उन सबको मूर्ख बनाया। उसकी एक बहन उससे आयु में एक वर्ष बड़ी थी। बस अपनी उस बड़ी बहन के जन्म का सर्टिफिकेट दिखाकर ही उसने कानून के बन्धन से पिंड छुड़ा लिया !

मैरी पिकफ़र्ड के बाबा का जन्म ८ अप्रैल को हुआ था और उसके पिता का भी जन्म ८ अप्रैल को हुआ था।

ऐसा प्रतीत होता था कि भगवान् ने पिकफ़र्ड-परिवार में सब बच्चों का जन्मदिन ८ अप्रैल ही नियत कर दिया था। मैरी का जन्म वस्तुतः हुआ तो ६ अप्रैल को ३ बजे सबेरे। परन्तु किसी ने भी उस ठीक तिथि और घड़ी की परवाह न की और उसका भी जन्म-दिवस ८ अप्रैल ही घोषित कर दिया गया !

इस प्रकार ३० वर्षों तक ८ अप्रैल ही को उसका जन्म-दिन मनाया जाता रहा !

मैरी के जीवन में ऐसा भी एक समय बीता है, जब वह स्वयं अपने हाथों कपड़े धोया करती थी, रुमालों को सुखाने के हेतु खिड़कियों के शीशों पर चिपका दिया करती थी और बहुत ही सस्ता साधारण भोजन किया करती थी। पर कुछ वर्षों के बाद ही उसे प्रति घंटा १००० डॉलर अथवा १५ डॉलर प्रति मिनट मिलने लगा था !

बचपन में उसकी माँ केवल 'हैश' नामक एक मांस का भोजन बनाकर उसे खिला दिया करती थी। आज दिन भी मैरी को वह 'हैश' ही बेहद प्रिय है। वह एक टोस्ट और एक प्याला चाय पीकर दिन-दिन भर बिता देती है और इतने ही से उसकी भूख शान्त हो जाती है !

एक बार उसने अप्टन सिंकलेअर लिखित 'जङ्गल' नाम की पुस्तक पढ़ी। तभी से उसने



अधिक मांस खाना छोड़ दिया । क़साई की दुकान देखते ही उसकी तबियत ख़राब हो जाती है और वह घंटों बीमार रहती है । वह आँख मूँदकर क़साई की दुकान के पास से जल्दी से निकल जाती है । बचपन में उसने एक मेमना पाल रखा था । अतएव उसके लिए भेड़ का गोश्त खाना असम्भव हो गया है । वह सूअर का मांस कभी नहीं खाती और जिस मछली को उसने स्वयं पकड़ा हो उसको तो वह कभी नहीं खा सकती । हाँ, दूसरों के द्वारा पकड़ी हुई मछली खाने में उसे कोई हिचक नहीं है ।

मैरी पिकफ़र्ड का कथन है कि तृष्णा एक अभिशाप है । तृष्णा के रहते हुए अपने मन का कोई भी काम करना असम्भव है । वह पैदल घूमना-फिरना चाहती है, घोड़े की सवारी करना चाहती है, पर नहीं कर सकती । वह दिन भर में १२ घंटे से लगाकर १६ घंटे तक काम में व्यस्त रहती है । उसके दो सैक्रेटरी हैं, क्योंकि कोई एक सैक्रेटरी उसकी भौति कठिन परिश्रम नहीं कर सकता ।

उसे अपने समय का एक क्षण भी खोना बुरा लगता है । उसने एक फ़्रांसीसी साथी नौकर रखा है, जिसका काम है मोटर में घूमते समय उसके साथ फ़्रैञ्च बोलना और उसकी फ़्रैञ्च की अशुद्धियों को ठीक करना ।

विश्व भर में किसी के पास इतनी डाक नहीं आती जितनी मैरी के पास आती रही है । यदि वह अपनी डाक नित्य पढ़े तो उसे १० घंटे लग जायें ! जितनी उसकी आय है, उससे दस गुने रुपए-पैसे के दान के लिए तो उसके पास विद्या-यियों की ही माँगें आया करती हैं !

मैरी पिकफ़र्ड के विशेष गुण है लज्जा और सत्यता । उसकी महान् कोर्त्ति ने उसे लेशमात्र भी बिगड़ने नहीं दिया है । उसको इसकी लेशमात्र भी चिन्ता नहीं कि उसके मरने के बाद उसका कोई भी स्मृति-चिह्न रहे ।

मैरी के पिता एक जहाज़ पर कोषाध्यक्ष थे । जब मैरी चार वर्ष की थी तभी उसके पिता का एक दुर्घटना से देहान्त हो गया था । उसके पिता का नाम जान स्मिथ था । यदि आज जान स्मिथ जीवित होता तो उसे अपनी पुत्री के भाग्य को देखकर कितना आश्चर्य होता !

प्रसिद्ध अभिनेत्री जोन क्रॉफ़र्ड

जिसका टखना टूट गया था, फिर भी वह नाचती ही रही !

लगभग १२ वर्ष पूर्व की बात है । अमेरिका के मिसूरी प्रदेश की एक कॉलेज-बालिका रात को रोते-रोते सो जाया करती थी । कारण यह था कि उन दिनों वह अकेली थी । परन्तु आज उसी बालिका को, जो अब पूर्ण युवती है, जब कभी वह बाहर निकलती है तो भीड़ें घेरे रहती हैं । और प्रत्येक महाद्वीप में करोड़ों स्त्री-पुरुष, बालक, युवा और वृद्ध उसके रूप और नाम से परिचित हैं ।

बारह वर्ष पूर्व यह बालिका रोटियों के लिए स्टिफ़ैन्स कॉलेज में साधारण नौकरानी का काम करती थी और वह इतनी दरिद्र थी कि यदाकदा चौकीदार से उसे ५० सेंट उधार लेने पड़ते थे ! कहीं से निमन्त्रण मिलने पर भी वह भोज में सम्मिलित न हो सकती थी, क्योंकि उसके पास उतरन के अतिरिक्त कोई भी वस्त्र पहनने को न था । पर आज संसार के सिनेमा-केन्द्र हालीवुड में वही सबसे अधिक सुन्दर वस्त्र पहनती है—इतने सुन्दर कि सभी वैसे ही वस्त्र पहनना चाहते हैं और संसार भर की फैशनेबल स्त्रियाँ उसके जैसे गाउन पहनने को लालायित रहती हैं !

यह एकाकी दुखिया बालिका कौन थी, जो अपने लिए



कपड़े भी नहीं खरीद सकती थी ? उसका नाम था लूसील लासोअर । क्या कभी सुना आपने यह नाम ? क्या आश्चर्य यदि आपने यह नाम सुना ही न हो, क्योंकि यह तो उसका जन्म-नाम है। हॉलीवुड में तो उसे जोन क्रॉफर्ड के नाम से ही आज सब कोई जानते हैं !

जोन क्रॉफर्ड का नाम आज सर्वाधिक प्रसिद्ध है। फिर भी उससे अधिक शायद ही कोई जानता हो कि बेकौड़ी-पैसे के एक अपरिचित नगर में रहने के क्या अर्थ होते हैं, अथवा भूखा रहना कैसा होता है और भोजन के लिए एक भी कौड़ी पास न होने के क्या मानी होते हैं।

अपने जन्मस्थान में बालिका जोन अन्य लड़कों के साथ खेलती-कूदती फिरती थी, और सबसे अधिक आनन्द उसको नाटक खेलने में आता था। वह और उसके साथी खलिहान में पुराने खाली बक्सों का स्टेज बनाते थे। प्रकाश के लिए वहाँ लालटेनें रहती थीं और तब जोन घोड़ों, कबूतरों और पक्षियों के समुल्लापना नाटक खेला करती थी !

उसने तभी निश्चय कर लिया था कि एक दिन वह अवश्य ही एक अभिनेत्री होगी और सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहना करेगी। उसने प्रण किया था कि बड़ी हाने पर वह लाल मलमल का गाऊन् और सोने के स्लिपर पहनेगी और एक बड़ा-सा हैट, जिसमें शुतुर्मुख के पर लगे होंगे, उसके सिर पर होगा !

जब जोन ८ वर्ष की हुई तब उसकी मा ने उसे एक मठ में नौकर करा दिया। इस प्रकार लड़कों के साथ उसका खेलना-कूदना बन्द हो गया। पुराने खलिहान में नाटक खेलना भी अब एक स्वप्न हो गया। पेट के खातिर अब उसको चौदह कमरों में भूझा लगानी पड़ती थी, पच्चीस बालिकाओं के लिए भोजन बनाना पड़ता था, बर्तन धोने पड़ते थे और कपड़े उतरवाकर उनको सुलाना पड़ता था !

छः वर्ष उपरान्त उसने उच्च शिक्षा प्राप्त करने का संकल्प किया और कॉलम्बिया के स्ट्रीट्स कॉलेज में नाम लिखा लिया, यद्यपि उसके पास एक पैसा भी नहीं था ! अब भी वह अन्य बालिकाओं की उतरन ही पहना करती थी ! कुछ युवतियाँ, जो उन दिनों उसे अपने से कहीं निम्न कोटि की समझकर उससे घृणा करती थीं क्योंकि वह उनकी टहलनी रह चुकी थी, अब कहा करती हैं—“क्या कहा, जोन क्रॉफर्ड ! अरे हाँ, मैं उसे बड़ी अच्छी तरह जानती हूँ। हम दोनों तो घनिष्ठ मित्र हैं। हम साथ-साथ कॉलेज जाया करती थीं।”

आज उसी के कारण स्ट्रीट्स कॉलेज को भी सब जान गए हैं और वहाँ के भोजनालय में अब उसका एक बड़ा चित्र भी सुशोभित है। उसके नीचे लिखा है—“इस कमरे में जोन क्रॉफर्ड टहल किया करती थी।”

उन दिनों उसकी महत्वाकांक्षा थी नर्तकी होने की। जब उसको एक प्रदर्शनी में पहले-पहल बीस डॉलर प्रति सप्ताह पर नाचने का काम मिला तो उसने उसे तुरन्त ही स्वीकार कर लिया और उसे ऐसा लगा मानो वह स्वर्ग में रह रही हो ! पर दो सप्ताह पश्चात् ही प्रदर्शनी बन्द हो गई और वेतन चुकाने के लिए कम्पनी के पास एक सैंट भी नहीं बचा ! बेचारी जोन ने उस अपरिचित नगर में अपने को एकदम अनाथिनी पाया !

क्या आप समझते हैं कि उस परिस्थिति से उसकी महत्वाकांक्षा नष्ट हो गई होगी ? कदापि नहीं ! उसने कहीं से कुछ डॉलर उधार लिये और वापस अपने नगर को लौट आई। उसने फिर नौकरी कर ली, थोड़ा-थोड़ा धन वह बचाती रही और एक दिन रेल द्वारा शिकागो को चल दी। टिकट का मूल्य देने के पश्चात् उसके पास केवल दो डॉलर और शेष रह गए थे, पर उसने उन्हें व्यय नहीं किया और वह दिन उपवास करके ही काटा !

शिकागो में उसे एक नृत्यशाला में नाचने का अवसर मिला। तत्पश्चात् वह न्यूयॉर्क गई और वहाँ के विन्टरगार्डन में उसने कोरस में नृत्य किया। वहीं हॉलीवुड की प्रख्यात सिनेमा-कंपनी ‘मेट्रो गोल्डिन मेयर’ के एक कार्यकर्ता ने उसे नृत्य करते हुए देखा। उसने जोन में लावण्य देखा और उसकी गति में कविता ! तुरन्त उसने जोन को फ़िल्म में प्रवेश करने के लिए निमन्त्रण दे दिया।

“क्या ? फ़िल्म में जाने के लिए ? नहीं, नहीं !” वह तो ब्रॉडवे की सबसे महान् नर्तकी बनने की इच्छुक थी। अन्त में, बहुत वाद-विवाद के पश्चात् उसने स्वीकार किया और उसको हॉलीवुड के लिए एक टिकट और ७५ डॉलर प्रति सप्ताह का वचन दिया गया। किन्तु हॉलीवुड को उसका नाम पसन्द न आया। ‘लूसील लासोअर’ नाम में कनिष्ठ अवश्य था, किन्तु फ़िल्म एक्ट्रेस के लिए यह एकदम घातक था। कोई भी न तो उसे स्मरण ही रख सकता था, न उसका उच्चारण ही कर सकता था ! अतएव एक फ़िल्म-त्रिका में उसके नामकरण के लिए पारितोषिक का लोभ देकर एक प्रतियोगिता का

विज्ञापन दिया गया ! सहस्रों ही पत्र इस संबंध में प्रत्येक डाक से आने लगे। उस प्रतियोगिता के फलस्वरूप 'लूसील लासोअर' से बदलकर उसका नाम 'जोन कॉर्फर्ड' कर दिया गया। इसी नाम से वह सिनेमा-जगत् में प्रसिद्ध है !

किन्तु अभी उसे छोटे-छोटे पार्ट ही खेलने को दिये जाते थे, यद्यपि उसने अतिरिक्त पात्री के रूप में भी फ़िल्मों में भाग लेना शुरू किया था। क्रमशः प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए उसने दर्जनों जोड़े जूते घिस डाले और अनेक पुरस्कार जीते।

उस समय जोन कॉर्फर्ड वह 'जोन कॉर्फर्ड' न थी जो अब है। तब वह किञ्चित् मोटी थी, उसके केश घुंघराले थे और उसके व्यवहार में कठोरता की झलक थी। सहसा उसे एक दिन ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि हॉलीवुड में टिकना है तो उसे अपना व्यवहार बदलना पड़ेगा। इस आकांक्षा से प्रेरित हो उसने अपने को एकदम परिवर्तित कर लिया। अब उसने रात्रि में नृत्य करना भी बन्द कर दिया।

उसने अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया। फ्रेंच, अंग्रेज़ी और जापानी भाषाएँ उसने सीखीं। उसने अपने मुटापे को छोड़ा और तीन वर्षों तक वह निरन्तर अल्पाहार करती रही। वह प्रातःकाल केवल थोड़ा नारङ्गी का रस डालकर एक ग्लास पानी पी लेती। बहुधा वह मटुं के अतिरिक्त दिन-दिन भर कुछ भी नहीं खाती। इस कठोर परिश्रम के फलस्वरूप उसको फ़िल्मों में अच्छे-अच्छे पार्ट खेलने को दिये गये और वह उन्हें इतनी अधिक लगन के साथ करती थी कि एक चित्र की तैयारी के लिए जब वह नृत्य कर रही थी, तब वह गिर पड़ी और उसका टखना टूट गया, फिर भी इस भय से कि कहीं उसका पार्ट उससे छिन न जाय, उसने डॉक्टर से अपने पाँव और टखने पट्टी से बँधवा लिये और नाचती ही रही !

जोन कॉर्फर्ड का कहना है कि उसे स्वयं अपनी विजय पर आश्चर्य है ! उसका जन्म निर्धन परिवार में हुआ था फिर भी आज उसके पास इतना धन है कि वह नहीं जानती कि उससे क्या करे ! जन्म के समय समाज में उसकी कोई स्थिति न थी और आज वह जहाँ भी जाती है, उसके साथ प्रशंसकों की भीड़ चलती है। जन्म के समय उसमें कोई सौन्दर्य न था, किन्तु आज उसकी गणना चित्रपट की अप्रतिम सुन्दरियों में की जाती है !

विश्व-विख्यात अभिनेत्री ग्रेटा गाबो

जो सिनेमा-जगत् की सबसे अधिक रहस्यमयी स्त्री है !

ग्रेटा गाबो जब १४ वर्षीय बालिका ही थी तभी उसके पिता का देहान्त हो गया था। उसका कुटुम्ब बहुत ही गरीब था, अतएव कुछ समय तक गाबो ने एक नाई की दुकान में काम किया, और फिर उसे स्टॉकहोम में टोप बेचने का काम मिला !

एक दिन टोपों के विज्ञापनार्थ एक चलचित्र बनाया जा रहा था और उसके लिए ग्रेटा के सिर पर अनेक प्रकार के टोप पहनाये जा रहे थे। उस समय उस बायस्कोप-कम्पनी के डायरेक्टर ने ग्रेटा को देख लिया और वह उसकी ओर आकर्षित हो गया। उसने गाबो से प्रार्थना की कि वह किसी नाट्यशाला में काम सीखे। अपना भविष्य सुधारने की इच्छासे गाबो ने तुरन्त ही अपना वह पक्की नौकरी छोड़ दी। इस प्रकार का साहस केवल गाबो जैसी स्त्री ही दिखा सकती है !

गाबो एक अत्यन्त ही लजीली और रहस्यमयी महिला है। जो उसके साथ काम करते हैं वे भी उसके सम्बन्ध में विशेष जानकारी नहीं रखते ! प्रसिद्ध अभिनेता वालेस बीअरी उसके साथ 'ग्राण्ड होटल' चित्र में दो वर्ष तक काम करता रहा, परन्तु उसके लिए भी वह एक रहस्यमयी पहेली ही बनी रही ! बीअरी ने उसे आज तक देखा भी नहीं है, क्योंकि वे विभिन्न दृश्यों में विभिन्न समयों पर ही सदैव काम करते रहे हैं !

ग्रेटा की फ़िल्में बनते समय कैमरामैन को छाड़कर और कोई भी स्टूडियो में नहीं रहने दिया जाता। एक दृश्य के समाप्त होते ही वह तुरन्त स्टेज पर बने हुए कमरे में घुस जाती है और जब तक दूसरे दृश्य के लिए उसका बुलावा न आवे तब तक वह निकलती ही नहीं। उसके कमरे पर पहरा लगा रहता है ताकि कोई आ न जाए। संयुक्त राज्य के प्रेसिडेन्ट अथवा इंगलैण्ड के राजा के दर्शन करना सुलभ है, परन्तु ग्रेटा गाबो के दर्शन अत्यन्त दुर्लभ हैं !

ग्रेटा गाबो के मित्र नहीं के बराबर हैं ! जब किसी से उसका परिचय कराया जाता है तो वह काँपने लगती है। विश्व भर में वह सबसे अधिक एकाकिनी स्त्री है। किमस का भोजन तक वह अपने घर में अकेले ही मनाती है ! उसके घर में टेलीफ़ोन की घंटी एकाध बार ही बजती है और हास्य-ध्वनि तो वहाँ कदाचित् ही सुनी जाती है !

गाबो को पशुओं से बहुत स्नेह है। मार्ग में यदि उसे कोई कुत्ता या घोड़ा मिल जाता है तो उससे वह अवश्य ही बोलती है और उसकी पीठ पर अवश्य हाथ फेरती है !



कौन कितने समय में ?



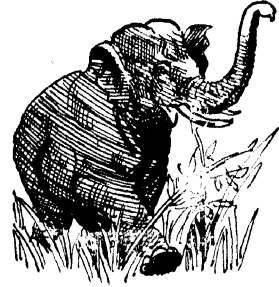
नाखून वर्ष भर में २॥ इंच बढ़ता है !

बाल वर्ष भर में १६ इंच बढ़ता है !

बॉस वर्ष भर में ३३ इंच बढ़ता है !



घोंघा एक दिन में ५० इंच चल पाता है !



ताज़ी हवा एक घंटे में ५ मील चलती है !

मनुष्य एक घंटे में ६॥ मील पैदल चलता है !

मुर्गी एक घंटे में १२ मील चलती है !

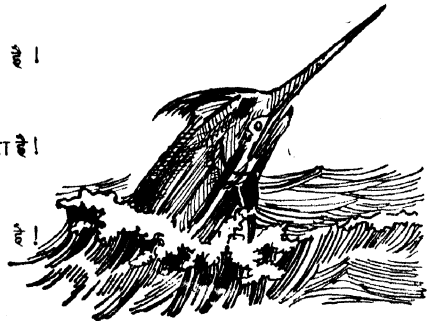
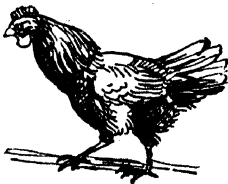
मनुष्य एक घंटे में १४॥ मील दौड़ लेता है !

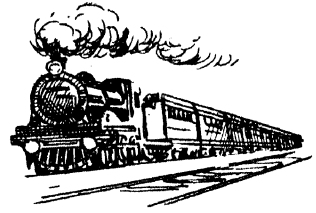
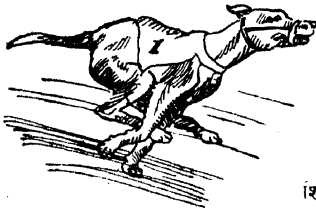


हाथी एक घंटे में २५ मील चलता है !

बर्फ पर मनुष्य एक घंटे में २७ मील चलता है !

'सोडंफिश' घंटे में ३० मील दौड़ती है !





कौन कितने समय में ?

शिकारी कुत्ता घंटे में ३६ मील दौड़ता है !

कबूतर एक घंटे में ४० मील उड़ता है !

घुड़सवार एक घंटे में ४१ मील जाता है !

जहाज़ एक घंटे में ५६ मील जाता है !

मोटरबोट घंटे में १२५ मील जाती है !

उकाब एक घंटे में १२५ मील उड़ता है !

रेल एक घंटे में १२५ मील जाती है !

वायुयान एक घंटे में ४४० मील जाता है !

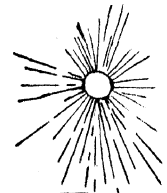
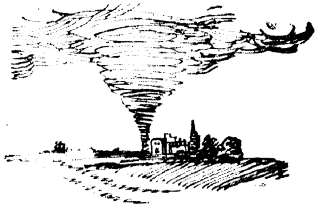
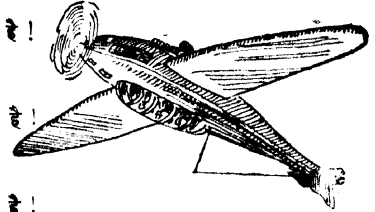
शब्द एक घंटे में ७६० मील जाता है !

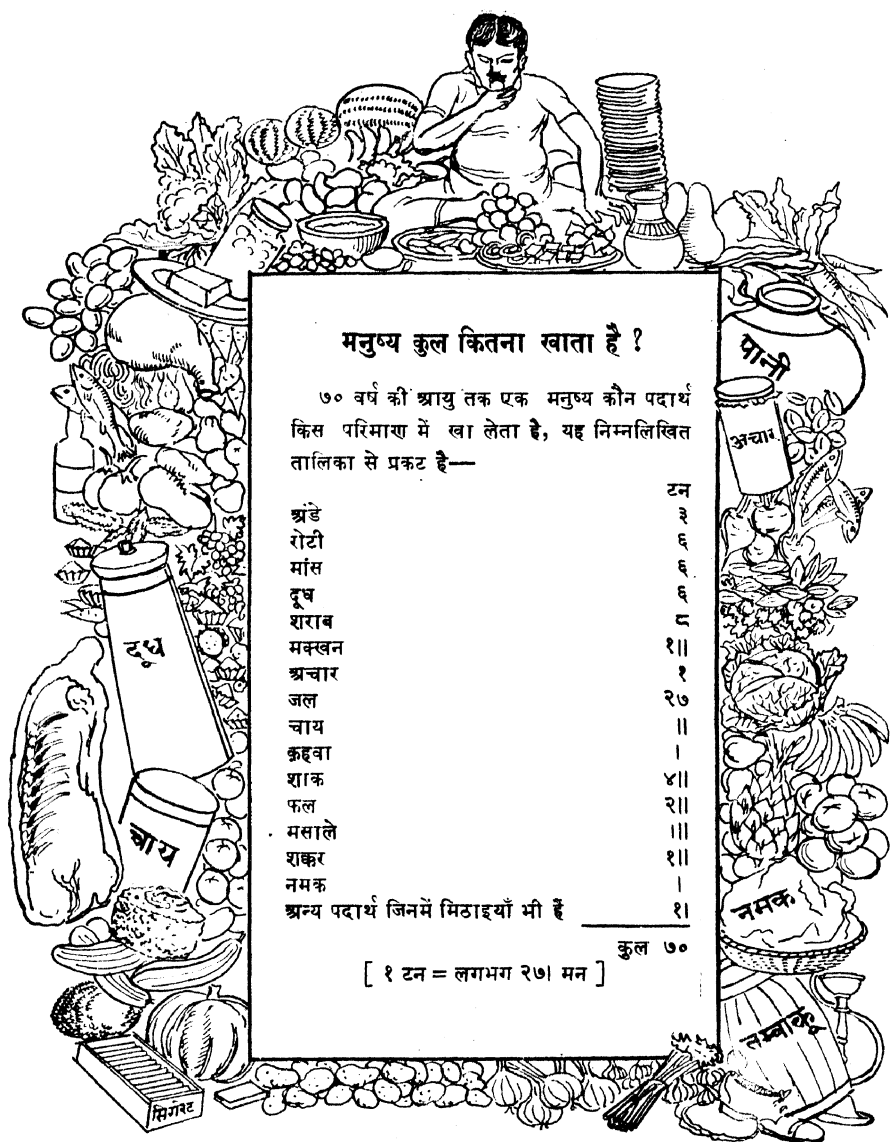
बवंडर एक घंटे में १,२०० मील जाता है !

बन्दूक की गोली घंटे में १,८०० मील जाती है !

प्रकाश एक सैकंड में १८६,३२५ मील जाता है !

मनुष्य का विचार सबसे वेगगामी होता है !





मनुष्य कुल कितना खाता है ?

७० वर्ष की आयु तक एक मनुष्य कौन पदार्थ किस परिमाण में खा लेता है, यह निम्नलिखित तालिका से प्रकट है—

	टन
अंडे	३
रोटी	६
मांस	६
दूध	६
शराब	८
मक्खन	१॥
अचार	१
जल	२७
चाय	॥
कड़वा	।
शाक	४॥
फल	२॥
मसाले	॥॥
शकर	१॥
नमक	।
अन्य पदार्थ जिनमें मिठाइयाँ भी हैं	१।

कुल ७०

[१ टन = लगभग २७। मन]

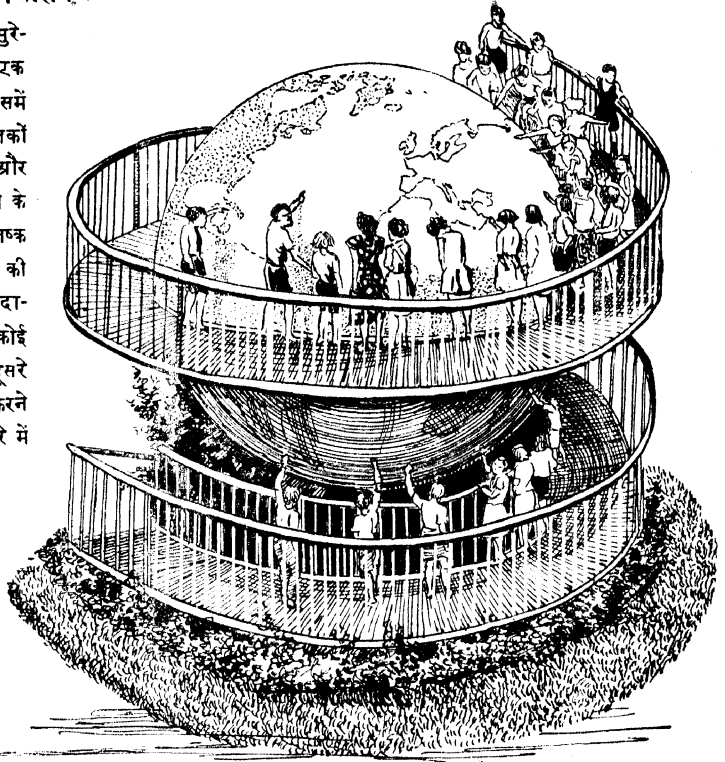
ऊपर लिखे पदार्थों के अतिरिक्त और भी कई ऐसी वस्तुएँ हैं जिन्हें मनुष्य अपने जीवन में काम में लाता है। ये चीज़ें ७० वर्ष की आयु तक वह कितनी खर्च करता है, उनका परिमाण नीचे लिखे कुछ आँकड़ों से देखिएः—

६५० दियासलाई के बड़े बक्स ! २ लाख सिग्रेट ! २४० दर्जन उस्तरे ! लगभग ४ मन तोल के जूते !

दुनिया का एक अनोखा विद्यालय !

फ्रान्स में पेरिस के निकट सुरे-नीज़ नामक स्थान में एक अनोखा स्कूल खोला गया है, जिसमें बिल्कुल नवीन पद्धति से बालकों को शिक्षा-दीक्षा दी जाती है और उनको केवल अच्छे-शान कराने के बजाय उनके शरीर और मस्तिष्क दोनों ही का पूर्ण विकास करने की ओर ध्यान दिया जाता है। उदाहरण के लिए इस स्कूल में ऐसा कोई भी कमरा नहीं है, जो किसी दूसरे कमरे से जुड़ा हुआ हो। ऐसा करने का आशय यह है कि प्रत्येक कमरे में अधिक से अधिक शुद्ध वायु और सूर्य की रोशनी पहुँच सके ! प्रत्येक दिन स्कूल में ही बालकों को एक शिक्षिका की देखरेख में खुली हवा में धूप-स्नान, वायु-स्नान और ठंडे पानी के कृत्रिम झरनों द्वारा स्नान कराया जाता है। इस अनोखे स्कूल के द्वार पर पृथ्वी के आकार-प्रकार को सूचित करने-

वाला एक विशाल गोला रक्खा हुआ है, जिसके आस-पास चारों ओर घूमने-फिरने के लिए एक चक्रदार ज़ोना बना हुआ है। इस ज़ोने पर चढ़कर बच्चे मज़े से इस गोले पर अंकित पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों और भूभागों का भौगोलिक अध्ययन करते हैं (दे० ऊपर का चित्र) !

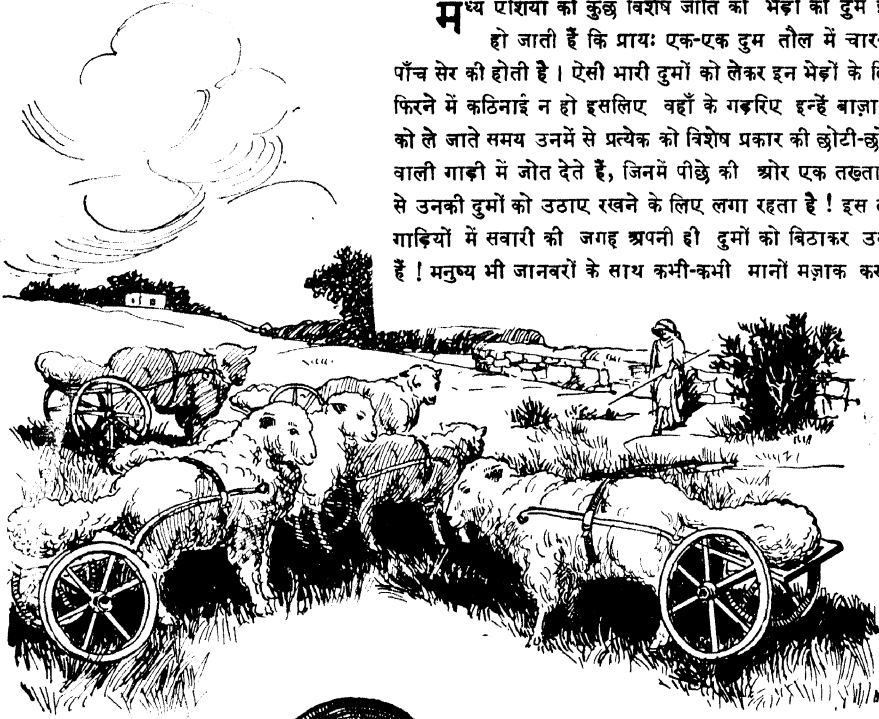


रेल से १०० मील की दूरी पर स्टेशन !

अमेरिका में निवादा प्रदेश के रायोलाइट नगर में एक रेलवे-स्टेशन इस आशा से बनाया गया था कि निकट भविष्य में ही वहाँ से रेल निकल जायगी। वह स्टेशन तो बनकर तैयार हो गया, किन्तु वहाँ तक रेलवे की लाइन कभी पहुँच ही न पाई, क्योंकि वह नगर ही वहाँ से उजड़ गया था। इसलिए आज भी रेल की पटरी से १०० मील की दूरी पर वह स्टेशन खाली खड़ा है !

• गाड़ी में सवारी के बदले दुम !

मध्य एशिया की कुछ विशेष जाति की भेड़ों की दुमों इतनी मोटी हो जाती हैं कि प्रायः एक-एक दुम तौल में चार-चार पाँच-पाँच सेर की होती है। ऐसी भारी दुमों को लेकर इन भेड़ों के लिए चलने-फिरने में कठिनाई न हो इसलिए वहाँ के गड़रिए इन्हें बाज़ार में बिकने को ले जाते समय उनमें से प्रत्येक को विशेष प्रकार की छोटी-छोटी पहियों-वाली गाड़ी में जोत देते हैं, जिनमें पीछे की ओर एक तख्ता इवास तौर से उनकी दुमों को उठाए रखने के लिए लगा रहता है ! इस तरह वे भेड़ें गाड़ियों में सवारी की जगह अपनी ही दुमों को बिठाकर उन्हें खींचती हैं ! मनुष्य भी जानवरों के साथ कभी-कभी मानों मज़ाक कर बैठते हैं !

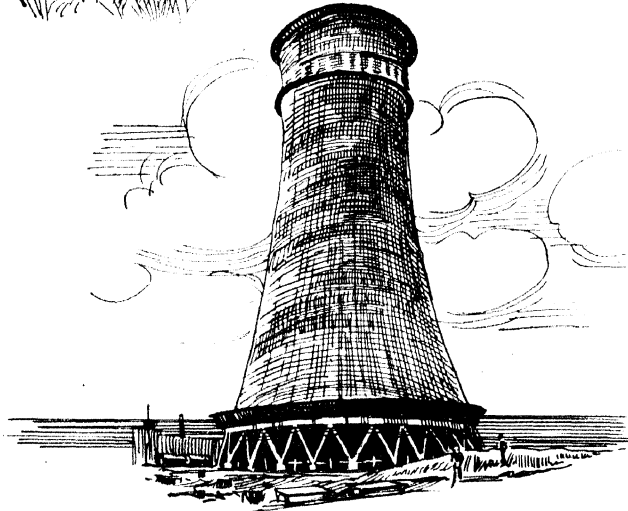


२५० फीट ऊँची सुराही !

सुराही बनती ही इसी-लिए हैं और

इसीलिए रखी जाती हैं कि उनमें पानी ठंडा होकर भरा रहे। तो फिर विला-

यत में लंकाशायर के एक बिजलीघर के लिए बनाई गई इस विशाल टंकी को भी हम सुराही के ही नाम से क्यों न पुकारें, जिसका कि चित्र बाईं ओर दिया गया है और जो केवल इसीलिए बनाई गई है कि उसमें प्रतिघंटा ३० लाख गैलन पानी ठंडा होता रहे ! संसार की यह

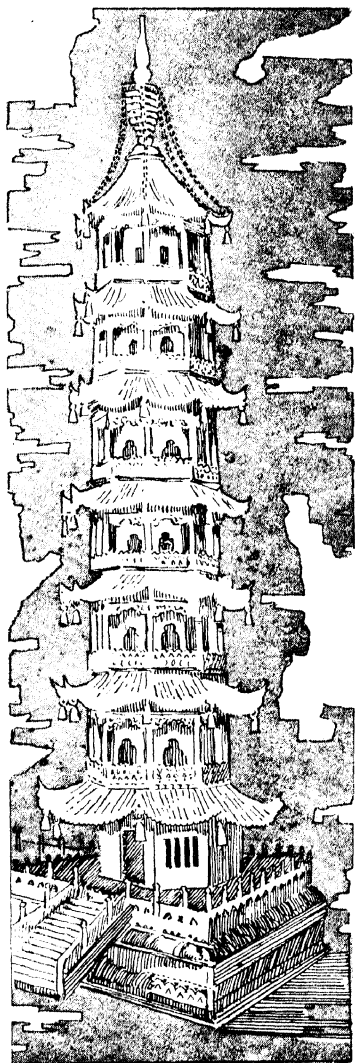
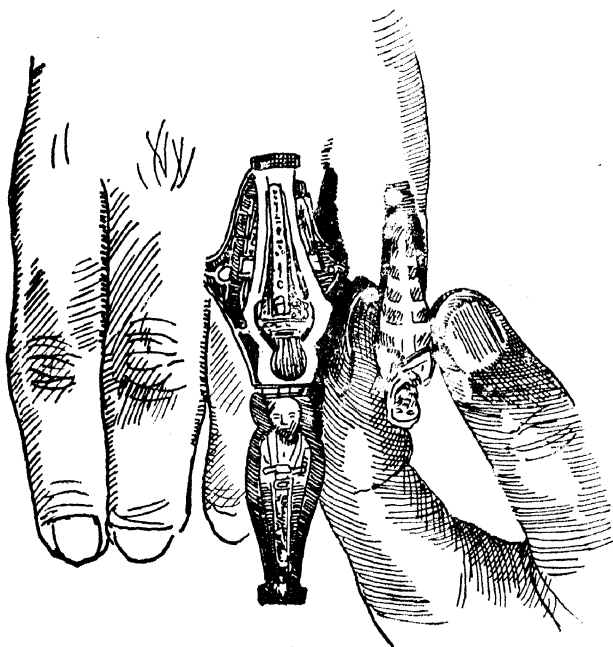


सबसे बड़ी सुराही कुतुब मीनार की तरह २५० फीट ऊँची है और उसका घेरा १७५ फीट का है ! उसका वज़न ५००० टन है और उसे बनाने में ६० आदमियों को १० महीने लगे थे ! किन्तु यह मिट्टी की नहीं, बल्कि कंक्रीट सिमेन्ट की बनी है।

हरिताम्बर-मणि में नक्काशी करके बनाया गया चीनी बौद्ध मंदिर का एक नमूना !

हरिताम्बर-मणि (green jade) के एक ही टुकड़े में से नक्काशी करके छोटे पैमाने पर बनाया गया यह चीनी मंदिर (पगोडा) का नमूना विद्वत् की एक सर्वश्रेष्ठ और बहुमूल्य कला की वस्तु माना जाता है । यह ऊँचाई में चार फीट पाँच इंच है और इसका मूल्य लगभग तीस लाख रुपये माना जाता है !

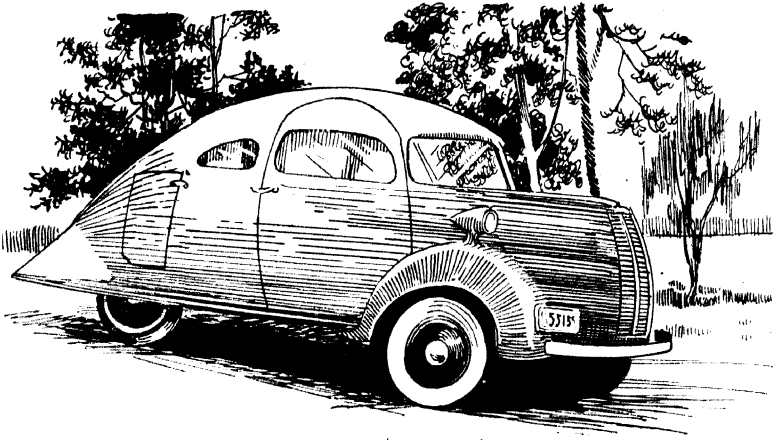
छोटे पैमाने पर बनाए गए सोने, चाँदी, संगमरमर आदि के ऐसे मंदिरों के नमूने पश्चिमी देशों में बहुत अधिक मूल्य में बिकते हैं । तो फिर यदि किसी एक ही बहुमूल्य नगीने में खोदकर एक समूचा पगोडा बनाया जाय, और सो भी चार-पाँच फीट ऊँचा हो, तो उसका मूल्यांकन करना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है । सच तो यह है कि चीन में बने हुए जिस किसी भी मंदिर का यह मणिनिर्मित पगोडा नमूना है, उस असली मंदिर की भी कीमत शायद इतनी न कूती जायगी जितनी कि उसके इस नमूने की !



संसार की सबसे प्राचीन अँगूठी !

मिस्र देश के प्राचीन बादशाहों की समाधिओं की खुदाई करते समय मिली यह अँगूठी संसार भर में अब तक प्राप्त सभी

अँगूठियों से अधिक पुरानी कही जा सकती है । यह सोने और चाँदी की बनी है और किसी प्राचीन मिस्री सम्राट के प्रस्तर-कफ़न की नक़ल है । उसके भीतर एक डिब्बिया में किसी सम्राट की मोमियाई की एक छोटी-सी सोने की मूर्ति रखी है, जो चित्र में दाहिनी ओर अलग से दिखाई गई है !



तीन पहिएवाली अनोखी मोटर !

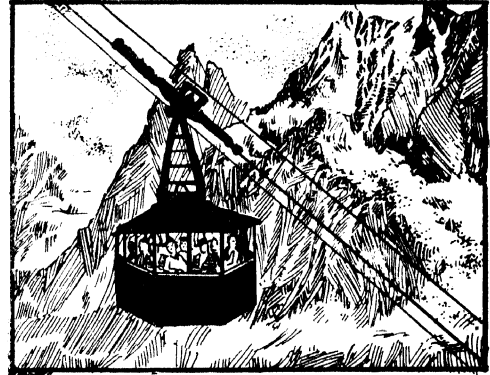
अमेरिका की 'लुईज़
अमेरिकन एअर-

वेज़' नामक एक प्रसिद्ध कंपनी
ने यह मोटर तैयार की है, जिस-
की ४ विशेषताएँ
हैं—(१) चार के
बदले इसमें केवल
तीन पहिए हैं, (२)
यह अगले पहिए से
चालू होती है ;
(३) यह पानी के

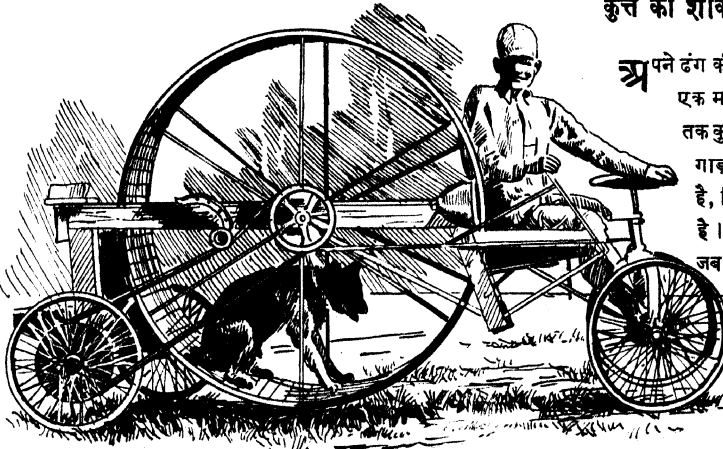
बजाय वायु द्वारा ठंडी होती है ; (४) यह तेल में बेहद हल्की है और दौड़ती है ८० मील प्रति घंटे की चाल से !

हवाई ट्रामगाड़ी !

उत्तरी अमेरिका के कैनेन नामक पर्वत पर चढ़ने-
उतरने के लिए एक हवाई ट्रामगाड़ी बनाई
गई है, जो उस पहाड़ से नीचे तक लंबाई में बंधे हुए
मोटे-मोटे तार के रस्सों में लटकती है और गिरती जैसे कुछ
यंत्रों की सहायता से उसी तरह लटकती हुई ऊपर से
नीचे और नीचे से ऊपर दौड़ा करती है ! दाहिनी ओर
का चित्र देखिए ! सचमुच ही इस गाड़ी में बैठनेवालों को
भूले का मज़ा मिलता होगा !



कुत्ते की शक्ति से चलनेवाली गाड़ी !

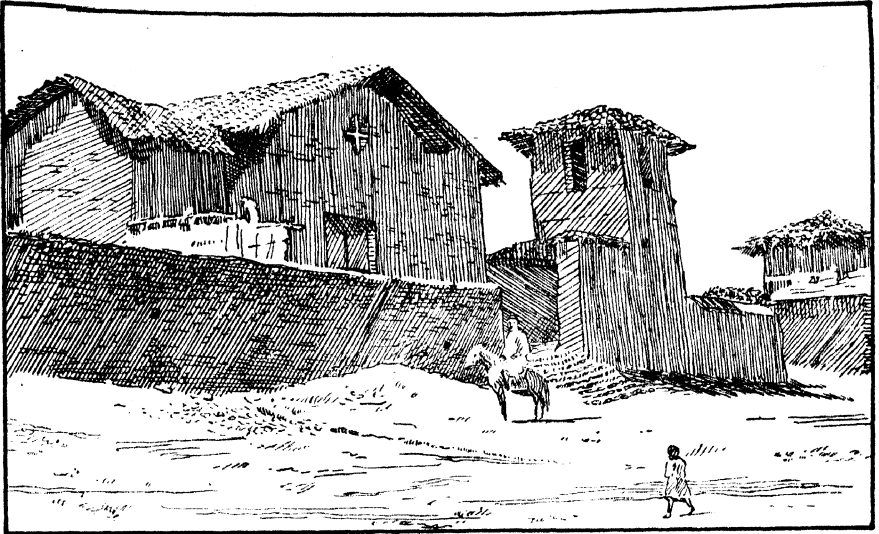


अपने ढंग की यह निराली गाड़ी विगज़ नामक
एक महाशय ने बनाई है, जो बहुत काल
तक कुत्तों के पटु शिक्क रह चुके हैं। इस
गाड़ी के बीच में एक विशाल पहिया
है, जिसमें एक कुत्ता बैठा दिया जाता
है। वह पहिया स्थिर नहीं रहता और
जब कुत्ता उसमें हिलने-डुलने लगता
है तो उसके भीतर चलने या
दौड़ने से वह पहिया बड़ी तेज़ी
के साथ घूमने लगता है ! इस
प्रधान पहिए की गति से पिछले
पहियों को चलाते हैं !

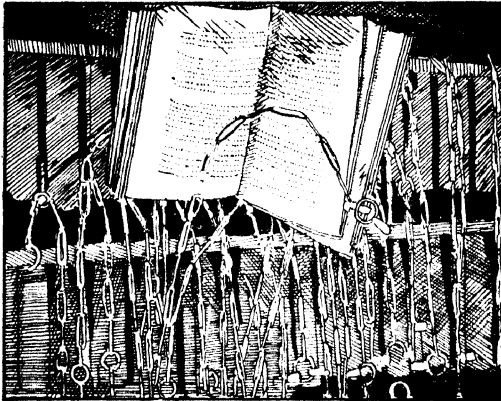
एक विचित्र गिर्जाघर !

पेरू देश
का

यह गिर्जाघर
संसार भर में
अपने ढंग
का एक ही
है ! इसमें
गिर्जाघर की
प्रधान इमा-
रत और उ-
सकी मीनार
अलग बनी
हुई हैं और
इनकी छतें



फूस की हैं ! ऐसा करने का कारण यह है कि वहाँ के क़ानून के अनुसार ऐसे अधूरे गिर्जाघरों पर टैक्स नहीं लगता !



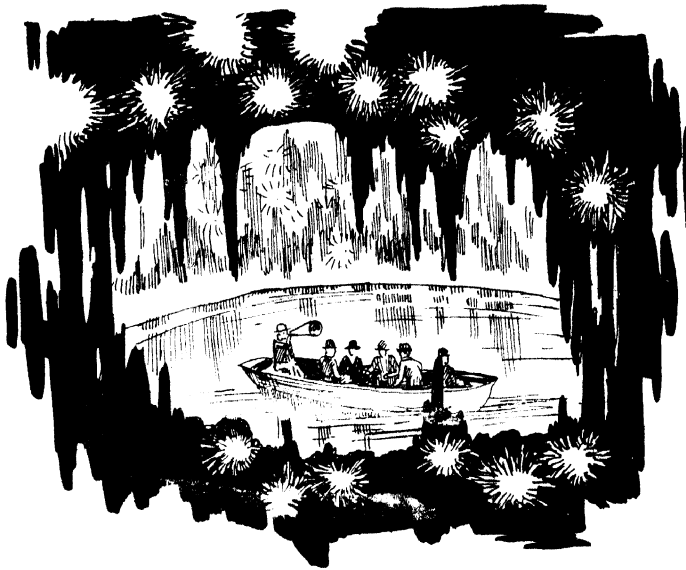
समाधि फोड़कर वृक्ष निकल आया !

लंदन के पास वाज़्ज़फ़र्ड नामक एक व्यक्ति की समाधि है, जिसे पुन-जन्म में विश्वास न था। उसकी इच्छा थी कि समाधिस्थ करते समय उसके शव के साथ कोई वस्तु रख दी जाय, जो उसके विश्वास को असत्य कर दे। अतः उसके हाथ में एक अज़ीर रख दिया गया था। कुछ समय बाद एक अज़ीर का वृक्ष उस समाधि को फोड़कर उग आया !

ज़ज़ीरों से बँधी हुई बाइबिल !

हीअरफ़र्ड नामक स्थान के गिर्जाघर में सभी बाइबिलों की प्रतियाँ ज़ज़ीरों से बँधी हैं, जिससे कि पाठक-वृन्द उन्हें स्थानच्युत न कर दें। यह प्रथा उस काल का स्मरण दिलाती है जब कि बाइबिल की प्रतियाँ बहुत कम संख्या में मिलती थीं।



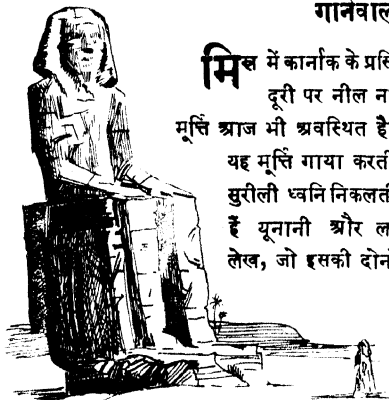


जुगनुओं द्वारा प्रकाशित गुफा

न्यू ज़ीलैण्ड की इस दर्शनीय प्राकृतिक गुफा के भीतर

पानी का एक सोता बहता है, जिस पर नौका-विहार करते हुए दर्शक-गण उसके भीतर पहुँचते हैं ! सबसे विचित्र बात तो यह है कि गहरी होने पर भी इस गुफा में अँधेरा नहीं रहता, क्योंकि उसकी दिवालों पर सदैव ही असंख्य जुगनु चमचमाते रहते हैं !

गानेवाली मूर्ति !



मिस में कार्नाक के प्रसिद्ध ध्वंसावशेषों से एक मील की दूरी पर नील नदी के तट पर यह भीमकाय मूर्ति आज भी अवस्थित है। कहते हैं एक समय था जब यह मूर्ति गाया करती थी, अर्थात् इसमें से विचित्र सुरीली ध्वनि निकलती रहती थी ! इस बात के साक्षी हैं यूनानी और लातीनी भाषाओं में लिखे हुए लेख, जो इसकी दोनों टोंगों पर खुदे हुए हैं।

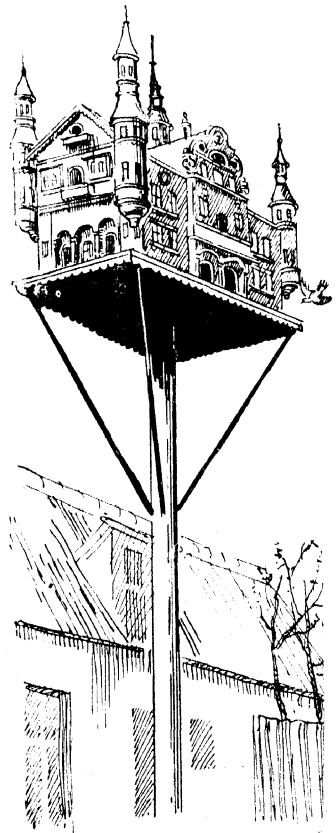
एक अद्भुत छतरी !

पक्षियों के बैठने के लिए बनाई जाने-वाली छतरियों में संसार

भर में यह अपने ढंग की एक ही है। यह छतरी बवेरिया के एक ग्राम में खड़ी है और दूबहू एक बवेरियन दुर्ग की मक़ल है ! इसमें तीन मंज़िलें बनी हैं, जिन पर बड़ी सुंदर नक्काशी की गई है (दे० दाहिनी ओर का चित्र)।

संसार के प्राचीनतम नगर

संसार के प्राचीनतम नगर सुमेरिअन लोगों के बसाये हुए थे। अब तक जिनका पता लग सका है उनके नाम हैं—उर, उरुक, और निप्पुर; और उनके अतिरिक्त तीन और हैं—किश, लगाश, और अदब।



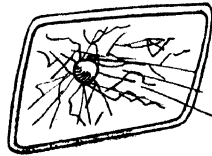
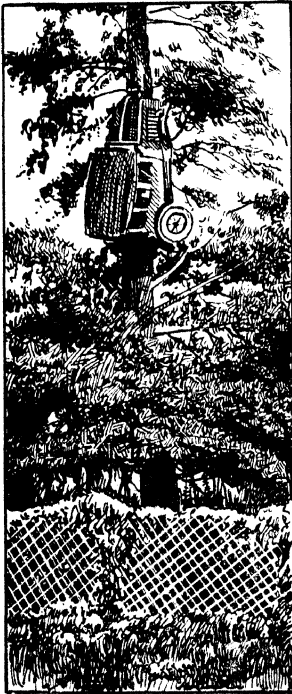
आधीरात की दुर्घटना
की खबर सुबह से
पहले ही सारे संसार
में पहुँचाई जा
सकती है !

यदि आधीरात को
कहीं कोई हत्या-
काण्ड हो जाय और जिस
किसी से भी उसका समा-
चार कहा जाय वह व्यक्ति
१२ मिनट के भीतर ही
अन्य दो मनुष्यों को उसकी
सूचना दे-दे तथा इसी
प्रकार लगातार क्रम च-
लता रहे तो दूसरे दिन सुबह होने से पहले ही उस घटना की सूचना क्रमशः संसार के सभी मनुष्यों को हो सकती है !



अनोखा हौआ !

अमेरिका के एक मिस्त्री ने
अपने साथियों की सहा-
यता से एक टूटी हुई मोटरकार को
सड़क के किनारे के एक वृक्ष पर होए
की तरह लटका दिया है ताकि लोग
अधिक वेग से उस सड़क पर मोटरें न
दोड़ाएँ और दुर्घटनाएँ कम हो जायँ !
(दे० बाई और का चित्र)



Hindi Samachar
OSMANIA

न टूटनेवाला लचीला काँच !

वैज्ञानिकों ने ऐसा एक काँच बनाया है, जो उस पर आदमी के खड़े होने से
लचक जाता है, पर टूटता नहीं ! जब ३० फीट की ऊँचाई से एक सवा
पाव की इस्पात की गोली इस काँच पर डाली गई तो वह उभर गया और उसमें
दरारें पड़ गई, पर वह टुकड़े-टुकड़े न हुआ, जैसा कि बाजूबाले चित्र से प्रकट है ।

गानेवाली बालू !

अरब में शाम के वक़्त जब दिन भर की तपी हुई बालू ठण्डी होने लगती है तो उसमें से एक सुमधुर ध्वनि निकलती है। यह ध्वनि ठण्डी होते समय बालू के खिसकने से पैदा होती है और कानों को बड़ा मधुर लगती है। परंतु यह ध्वनि दो मिनट से अधिक नहीं सुनाई देती।

जहाँ पुरुष बुर्का पहनते हैं और स्त्रियाँ मुख खोले रहती हैं !

मध्य सहारा के बालुकामय प्रदेश में रहनेवाली तौरा जाति में स्त्रियों के बजाय पुरुष बुर्का पहनते हैं, पर इसका यह अर्थ नहीं कि वे जनाने हों ! वास्तव में वे बड़े परिश्रमी होते हैं, आखेट उन्हें बहुत प्रिय है, और वे भयानक लड़ाके होते हैं। फ्रांसीसियों से वे कई बार लोहा ले चुके हैं।

इनका बुर्का नीले कपड़े का होता है, जो सुदान में बुना और रंगा जाता है। इन लोगों का सर्वाधिक सुन्दर बुर्का छोटो-छोटे टुकड़ों का बना होता है। इसको इस प्रकार पहना जाता है कि केवल आँखें खुली रहें।

संसार का सबसे ऊँचा भरना !

विनेयूएला में संसार का सबसे ऊँचा भरना है। इसके सर्वप्रथम दर्शन अमेरिकन उड़के श्रीयुत जे० ऐंजिल ने किए थे। दूर से वह गिर्जाघर की मीनार की भौंति दिखाई देता है। उसके ऊपर से एक सरिता बहती है और जब उसका जल धरती पर गिरता है, तब ऐसा शब्द होता है मानो सहस्रों बड़े-बड़े घरेटे एक साथ बज रहे हों !

नयनाभिराम सागर !

हिन्द-महासागर के जल पर जब सूर्यरश्मियों का प्रकाश पड़ता है उस समय के वर्षों का सौन्दर्य वर्णनातीत है। इतना अधिक सौन्दर्य अन्य किसी भी सागर में देखने को नहीं मिलता। हाँ, मानसून के दिनों की बात कुछ दूसरी ही होती है, जब समुद्र में पर्वत-जैसी ऊँची लहरें उठती हैं।

क्या सागर सूख जायेंगे ?

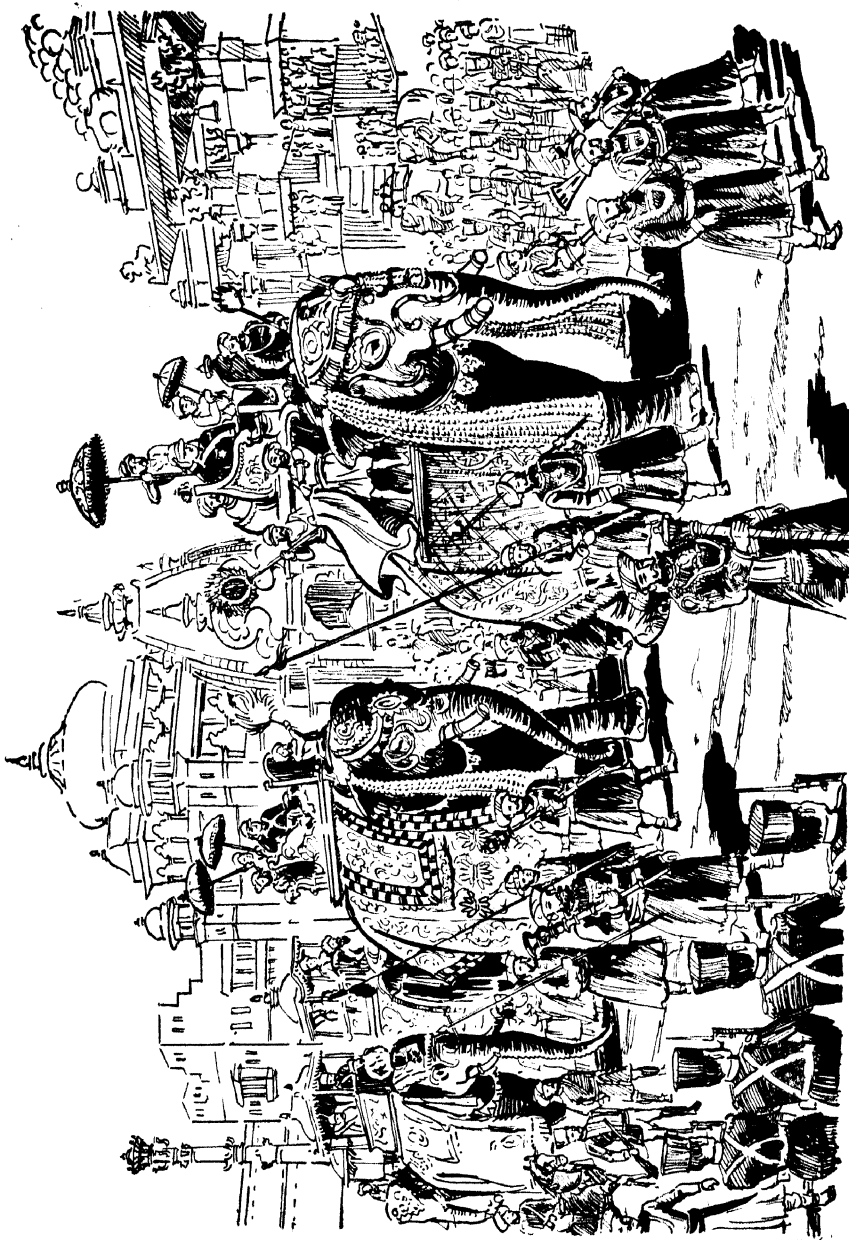
एक अमेरिकन वैज्ञानिक का कथन है कि सागर की सतह प्रतिवर्ष १० इंच कम हांती जा रही है। उसका कहना है कि यदि ऐसा ही होता रहा तो १२,००० वर्षों में पृथ्वी के सभी समुद्र सूख जायेंगे ! परन्तु इसके विपरीत एक आस्ट्रेलियन वैज्ञानिक के कथनानुसार गत १०,००० वर्षों में सागर में लेशमात्र भी जल की हानि नहीं हुई है, अतएव उसके सूखने की समस्या ही उपस्थित नहीं होती !

धूप में हिस्सा-बाँट !

ब्रिटेन के चूल्हों में प्रति वर्ष ८ करोड़ ५० लाख पीण्ड की लागत का ४ करोड़ टन कायला जलाया जाता है ! इसमें से ४० लाख टन धुआँ निकलता है, जो वहाँ धूप में बेहद कमी कर देता है। बर्लिन में इतना अधिक कायला जलाया जाता है कि उसके धुँए के कारण वहाँ केवल ४० प्रतिशत ही धूप मिलती है। न्यूयॉर्क में वर्ष भर में २७५ दिन अत्यधिक ठंडे, अत्यधिक उष्ण अथवा अत्यधिक वर्षा के होते हैं। इसके विरुद्ध एयेन्स के आकाश में वर्ष भर में केवल २५ दिन ही बादल रहते हैं ! स्काटलैण्ड में सूर्य प्रति दिन ३ घंटे के औसत से चमकता है, जर्मनी में ४॥ से ५॥ घंटे के औसत से, ऑस्ट्रिया में ५ से ७ घंटे के औसत से, स्पेन में ७ से ८ घंटे के औसत से, और मिस्र में ८॥ घंटे के औसत से !

बड़े कुटुम्ब !

पन्द्रहवीं शताब्दी में एक जर्मन महिला ने कुल मिलाकर ५३ बच्चों को जन्म दिया था—३८ बालक और १५ बालिकाएँ। उसकी स्मृति में १६३५ में वहाँ के बर्टमवर्ग नगर में एक प्रस्तर का स्मारक बनाया गया था। स्पेन के एक नगर में सन् १६२६ में ६८ वर्ष की एक वृद्धा के २६ बॉ पुत्र पैदा हुआ था। कहते हैं कि ५० वर्ष की आयु पार करने पर प्रति ३,३०० स्त्रियों के पीछे एक बालक पैदा होता है। १६२८ में एक मिस्री महिला के एक साथ चार बालक और दो बालिकाएँ पैदा हुई थीं। १६३४ में कनाडा में एक स्त्री के एक साथ पाँच लड़कियाँ पैदा हुई थीं। वे सब पूर्ण स्वस्थ हैं (अन्यत्र उनका विवरण दिया गया है)। प्रति वर्ष संसार में ३३६००० जुड़वाँ, और ३७,००० तिगड्डे बच्चे पैदा होते हैं।



तुलसी-शालग्राम के विवाह का जुलूस !

अब से कुछ वर्ष पूर्व तक ओरछा राज्य की ओर से हर साल बड़ी धूमधाम के साथ तुलसीजी और शालग्राम का विवाह मनाया जाता था। उस अवसर पर जो बारात निकाली जाती थी उसमें सुसज्जित हाथी, ऊँट, और ४००० घोड़े रहते थे। यारप और अमेरिका-निवासी आश्चर्यचकित होकर कहते हैं कि "भारतवर्ष भी बड़ा विचित्र देश है, जहाँ पन्थर और पोषे तक का विवाह होता है !" पर भारतीय संस्कृति की यही तो विशेषता है कि वह पन्थर को निरा पन्थर ही नहीं समझती, न बूढ़ को केवल बूढ़। वह तो सबमें भगवान् के दर्शन करती है।

कुछ बहुमूल्यवान् पुस्तकें !

ब्रि

टिश ग्युज़ियम में इङ्गल की एक प्रति है, जिसको रूसी सरकार ने १००,००० पौण्ड में बेचा था ! कदाचित् इससे अधिक मूल्य और किसी भी पुस्तक का कभी नहीं दिया गया है । बहुमूल्य पुस्तकों में क्रुरान की एक ऐसी हस्तलिखित प्रति भी है, जिसे अफ़ग़ानिस्तान के अमीर ने फ़ारस के शाह को भेंट की थी । इसकी जिल्द बनाने में ही ३०,००० पौण्ड व्यय हुए थे । इसके पन्ने स्वर्ण के हैं और उन पर ३६८ जवाहिरात, १६७ मोती, १३२ लाल और १०६ हरी जड़े हैं । इटालियन लेखक मैरीनेत्सी ने १६३५ में एक ऐसी किताब की जिल्द बंधवाई थी, जिसमें पतले सीसे के पत्र लगे थे और उन पर रङ्गविरङ्गे चित्रों की सजावट की गई थी ।

स्वीडन के अपसाला नगर के पुस्तकालय में एक अमूल्य पुस्तक की हस्तलिपि सुरक्षित है, जो भोजपत्र पर है । इसका धरातल लाल रंग का है और उस पर चाँदी के अक्षरों में लिखावट की गई है । १६३० में बर्लिन में इङ्गल की एक प्रति ६५,००० पौण्ड में नीलाम हुई थी । इस इङ्गल के प्रति पृष्ठ में ४२ लाइन हैं और यह सबसे पहली पुस्तक है, जो अलग-अलग छापनेवाले टाइपों द्वारा छापी गई थी । शेक्सपियर के प्रथम फ़ोलियो का मूल्य ५,२५० पौण्ड कूँता गया है । ला फ़ोन्तेन की कहानियों की एक छोटी-सी पुस्तिका, जिसके लिये फ़्रागोनार्ड ने चित्र बनाये थे, १६३६ में बीस लाख फ़्रांक में नीलाम हुई थी !

कदाचित् संसार भर की सबसे भारी पुस्तक चीनी भाषा का एक कोष है, जिसको वहाँ के सम्राट् ने १६०० ई० में छपवाया था । इसमें ५,०२० खण्ड हैं और प्रत्येक खण्ड में १७० पृष्ठ हैं । संसार भर में सबसे बड़ी अकेली पुस्तक एक 'अनाटोमिकल एटलैस' है, जो विश्वना के स्टेट टैक्निकल स्कूल में है । इसकी ऊँचाई है ७४ इञ्च और चौड़ाई ३५ इञ्च है । यह पाँच वर्षों में छपकर तैयार हुई थी ।

कुछ बहुमूल्यवान् चित्र !

सन्

१८६५ में सुप्रसिद्ध चित्रकार डेविड कॉक्स का एक चित्र, जिसका विषय था "विल्स-निवासियों का अपने शव को समाधिस्थ करने के हेतु ले जाना", २,५२० पौण्ड में बिका ! इसके एक वर्ष पूर्व चित्रकार सर जोशुआ रेनॉल्ड्स का "लेडी बेटी डैल्मी" नामक चित्र ११,५५० पौंड में बिक चुका था । १८७६ में टॉमस गेन्सबौरो की "डचज़ ऑव डेवनशायर" नामक कृति १०,५०० पौंड को नीलाम हुई थी और इसके बीस वर्ष पश्चात् रोमनी की "लेडोज़ स्पेन्सर" नामक तस्वीर ११,०२५ पौंड में बिकी । वर्त्तमान शताब्दी में एक अमेरिकन ने गेन्सबौरो का 'फ़सल की गाड़ी' नामक चित्र ५४,००० पौ० में खरीदा है ।

१९०० में बान डाइक् के दो चित्र २२,५२० पौंड में खरीदे गए और १९०८ में टर्नर का "मॉर्टलेक टैरेस" नामक चित्र १३,२३० पौंड में बिका । उसी साल लानक्रैट् की "ला रौद शॉन्पेय" नामक तस्वीर का मूल्य ११,२०० पौण्ड का कूँता गया । १९१२ में रेग्नों का चित्र "बायशेवा" ४४,००० पौण्ड में बिका ।

गेन्सबौरो का प्रसिद्ध चित्र "ब्लू बॉय" प्रथम बार ३५ गिलियों में बिका, द्वितीय बार ६५ गिलियों में और तदनंतर १९२१ में एक लाख पौण्ड में !

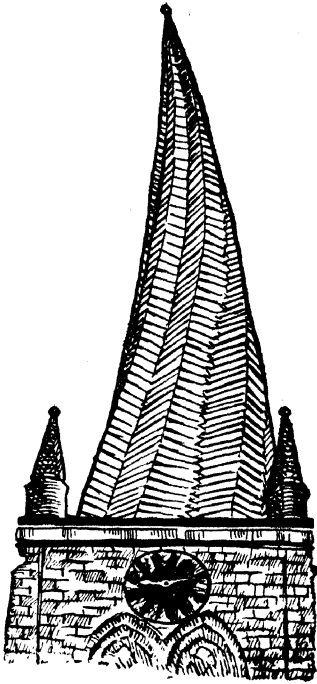
१९२६ में गेन्सबौरो के अन्य दो चित्र ४६,२०० पौंड प्रति चित्र के हिसाब से बिके और लॉरेन्स का प्रख्यात चित्र "पिंकी" ७४,००० गिलियों में बिका । अग्रिम वर्ष में रेनॉल्ड्स का चित्र "लेडी ऐन फिट्ज़पैट्रिक" १६,४२५ पौण्ड में बिका ।

१९१६ में फ़्रान्ज़ हॉल का चित्र "ओल्ड लेडी (बुढ़ा)" २७,४०० पौण्ड में बिका; कारपेक्चिओ का "मैंट यूस्टेस" ३३,६०० पौण्ड में और रोमनी का "वैक्फोर्ड के बालक" ५४,६०० पौण्ड में ।

१९२६ में रोमनी का चित्र "मिसेज़ डेविन्योर्ट" ६०,६०० पौण्ड में बिका; उसीका "लेडी ला पोल" ४६,२०० पौण्ड में और गेन्सबौरो के दो चित्र भी इसी मूल्य में ।

लन्दन की नेशनल गैलरी ने महान् चित्रकार टाइटोअन का चित्र "कौनारो" १२२,००० पौण्ड में और होल वाइन का "डचैज़ ऑव मिलान" ७२,००० पौण्ड में खरीदा है ।

संसार भर में सबसे बड़ा तेलचित्र वेनिस नगर के डोजे के महल में है । इसका चित्रकार तिनटोरेत्तो ने बनाया था । इसका नाम है "स्वर्ग" और यह लम्बाई में ८२ फीट और ऊँचाई में ३३ फीट है ।



धूप से मीनार टेढ़ी हो गई !

इंग्लैंड में डब्लुशायर के चैस्टर्फील्ड नगर के 'थ्रॉल सेंट्स चर्च' की यह मीनार सूर्य के ताप से टेढ़ी हो गई है !



चीनी लोगों की अनोखी पतंग !

चीन वालों का कला-प्रेम प्रसिद्ध है। ज़रा उनके लड़कों द्वारा उड़ाई जाने-वाली इस पतंग को ही देखिए ! कैसी कारीगरी की गई है !

मनुष्य की खाल का ढोल !

चेक जातिवालों और जर्मनों में सदियों से आपसी बैर चला आ रहा है। कहते हैं, एक बार चेकों के एक जनरल जॉन ज़िज़का (१३७६-१४२४) ने यह वसीअत की थी कि मरने पर मेरी खाल का ढोल बनाया जाय और वह ढोल मेरे सैनिकों को दे दिया जाय, क्योंकि मेरी इच्छा है कि मरने के पीछे भी मैं अपने सैनिकों को इस ढोल की आवाज़ से जर्मन लोगों से लड़ने को प्रोत्साहन देता रहूँ। पर एक बार ऐसा हुआ कि जर्मनों ने चेकों को हरा दिया और तब वीर ज़िज़का के ढोल को उन्होंने उसके ही प्रिय सैनिकों के विरुद्ध काम में लिया !

पेट्रोल से आग बुझाई जा सकती है !

आपका यह जानकर कितना आश्चर्य होगा कि बहुधा जलती हुई रई की गोंठों का बुझाने के लिए पेट्रोल और मिट्टी का तेल काम में आते हैं ; क्योंकि पानी वहाँ बेकार सिद्ध होता है—वह गोंठों के भीतर घुस नहीं पाता। पेट्रोल और मिट्टी के तेल जलने के स्थान में तुरन्त पहुँच जाते हैं और वहाँ ऑक्सीजन के अभाव के कारण स्वयं बिना प्रज्वलित हुए वे रई की गोंठों के भीतर की प्रचण्ड अग्नि को बुझा देते हैं !

१०० वर्ष के भीतर ही अमेरिका रेगिस्तान हो जायगा !

गत बीस वर्षों में अमेरिका में अनेक जङ्गल काट डाले गए हैं, जिनका भयङ्कर विनाशकारी प्रभाव हुआ है। इसके अतिरिक्त कोलोराडो, बायोमिङ्ग, कान्सास्, और नेब्रस्का प्रदेशों से लगातार मिट्टी उड़ रही है ! सन् १९२० में २० लाख टन मिट्टी आँधी द्वारा उड़कर वहाँ के पड़ोस के प्रदेशों में जमा हो गई थी। सन् १९२५ में आँधियों ने वहाँ १७ करोड़ २६ लाख एकड़ भूमि को नष्ट कर दिया और सन् १९३४ में आँधी का प्रभाव डेढ़ हजार मील दूर तक पड़ा— उसकी धूल उड़कर न्यूयॉर्क के बाज़ारों और घरों तक में घुस गई।

सन् १९३५ में कोलोराडो और कान्सास् प्रदेश के २० लाख एकड़ क्षेत्रफल के मैदान आँधी से विनष्ट हो गए और अनेकों स्थलों पर छूट-छूट फ्रीट ऊँचे टीले बन गए। इन सब बातों को देखते हुए वहाँ के कृषक-विभाग के अग्डर-सैक्रेटरी डाक्टर रेक्स टगवैल का कहना है कि यदि शीघ्र ही उपाय न किए गए तो पश्चिमी अमेरिका का मध्य भाग एक दिन चीन के मध्य भाग जैसा ऊँड़ और बालुकामय हो जायगा। एक अन्य विद्वान् डाक्टर बेकर का कथन है कि अमेरिका के बसाये जाने के समय से लेकर अब तक उतनी मिट्टी उड़ चुकी है जितना जर्मनी में कुल जोता हुआ क्षेत्रफल है ! एक और अधिकारी सजन की सम्मति है कि यदि आँधियों का ऐसा ही वेग रहा तो १०० वर्षों से कम समय में ही अमेरिका का जीवन नष्ट हो जायगा !

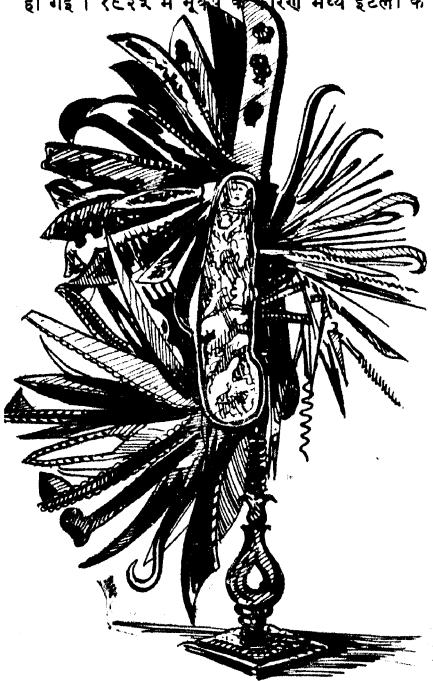
भूकम्पों द्वारा विनाश

सन् १९२३ के भूकम्प में जापान के दो प्रमुख नगर टोकिओ और योकोहामा लगभग नष्ट हो गए थे। इस भूकम्प में १४२,८०० मनुष्य मरे, १०३,७३३ ज़ख्मी हुए और अनेकों का पता ही न लगा। इसके अलावा ५००,००० घरों के नष्ट हो जाने से लगभग २,०००,००० मनुष्य बे-घरबार हो गए और लगभग ५५०,०००,००० पौण्ड की सम्पति नष्ट हो गई। १९३५ में भूकम्प के कारण मध्य इटली के ३७० नगर और ग्राम नष्ट हुए थे और ३०,००० मनुष्य मरे थे। १९०८ के भूकम्प ने सारी सिसिली और कैलैत्रिया को हिला दिया था और मैसिना और पड़ोस के अनेक नगरों को लगभग विनष्ट ही कर दिया था। उस समय ७७,२८२ नगर-निवासियों की जान गई थी और ६५,००० आहत हुए थे। समुद्र का तट पहचान नहीं पड़ता था, क्योंकि लहरें ४० फ्रीट तक ऊँची उठ गई थीं।

भारतवर्ष में १७३७ ई० के भूकम्प ने ३००,००० के प्राण लिये थे। १९३५ के क्वेटा-भूकम्प में ५६,००० के चोटें आईं और प्राण गए। इससे पूर्व बिहार में जो भूकम्प आया था उससे १२ नगरों की १०,००० से ६०,००० तक की जन-संख्या नष्ट हो गई थी, १८,००० वर्गमील भूमि बालुकामय हो गई थी, तथा कई स्थलों पर चार-चार फ्रीट धूल जम गई थी !

अनोखा चाक्र !

बाईं ओर जिस अजीब-सी चीज़ का चित्र दिया गया है, यह एक चाक्र है, जिसे दो कारीगरों ने मिलकर पूरे दो वर्षों में बनाया है ! इसमें तरह-तरह के आकार के और तरह-तरह का काम देने वाले कुल ७५ छोटे-छोटे औज़ारों का संकलन किया गया है, और प्रत्येक पर बारीक नज़रआशी करके आखेट के सुंदर दृश्य अंकित किए गए हैं !



वृक्ष या प्याऊ ?

दा

हिनी और के चित्र में दिखाई दे रहा अनोखा वृक्ष मैडेगास्कर द्वीप में पाया जाता है और अब मौरिशस तथा जावा द्वीपों में भी यह लगाया गया है। इस वृक्ष के पत्ते बहुत बड़े होते हैं और आमने-सामने केवल दो और निकले रहते हैं। ये पत्ते सदैव उत्तर और दक्षिण दिशा की ओर ही झुके हुए रहते हैं और इनके नीचे के भाग में काफी जल भरा रहता है, जिससे प्यासे यात्री इनके निकट जाकर प्यास बुझा लेते हैं। यद्यपि इस जल का स्वाद अच्छा नहीं होता फिर भी वह हानिकार नहीं होता।



मारकर वापस लौट आनेवाला हथियार !

आ

स्ट्रेलिया के आदिम निवासियों का प्यारा शस्त्र बूमेरॉंग, जिसको लेकर वहाँ का एक शिकारी और उसका बच्चा नीचे खन दिखाया गया है, एक विचित्र हथियार होता है जो शिकार को मारकर वापस शिकारी के पास लौट आता है। यह तलवार की आकृति में कठोर लकड़ी का बनाया जाता है। तौल में यह लगभग आध पाव होता है और लंबाई में दो से तीन फीट। एक ओर यह चपटा होता है और दूसरी ओर किञ्चित् गोलाई लिये हुए। यह हथियार दो से तीन फीट दूर तक के शिकार को मारकर वापस शिकारी के हाथ में लौट आता है।



सिरके की नदी !

अमेरिका के कोलम्बिया प्रदेश में एक ज्वालामुखी पर्वत के निकट एक ऐसी नदी है, जिसका जल ज्वालामुखी के निकटस्थ होने के कारण सिरके जैसा खट्टा है। इसमें मछली आदि जीवित नहीं रह सकती।

पत्थर के जङ्गल !

सन् १८६७ ई० में संयुक्तराज्य, अमेरिका, की पैन्सिल्वानिया रियासत की एक पत्थर की खान में पृथ्वी के भीतर से एक वृक्ष मिला है जो लोहे में परिणत हो चुका है। अरीज़ोना के कोरिज़ा नगर के निकट एक जङ्गल है, जो सारा का सारा पत्थर में परिणत हो चुका है और इसी कारण 'चाल्सिडोनी (एक प्रकार का पत्थर) पार्क' के नाम से पुकारा जाता है।

कोयला-युग के पत्थर में परिणत हुए वृक्ष फ्रांस के सेण्ट एतियॉ की खानों में भी मिले हैं। संयुक्तराज्य (अमेरिका) में कोनीफर वृक्षों का एक पूरा जङ्गल मिला है, जो पत्थर में परिणत हो चुका है। इस जङ्गल में काष्ठ-अग्रेट और चाल्सिडोनी के अगणित टुकड़े भरे पड़े हैं। ये एक समय विशाल वृक्षों के टुकड़े थे, जिनकी ऊँचाई ६३० फीट के लगभग अनुमान की जाती है।

लाखों वर्ष हुए सैक्सनी के कैमिंटज़ नगर के निकट आदियुग का एक जङ्गल था, जो पर्मियन युग में वृक्षादि से परिपूर्ण था। कैमिंटज़ भ्यूज़िअम में अरॉकेरिया वृक्ष का एक तना है, जो तिमंजिले घर के बराबर ऊँचा है और इतना मोटा है कि तीन पुरुष उसके चारों ओर खड़े होकर अपने हाथों से कठिनाई से उसे घेर सकते हैं। मिस्र देश में काइरो नगर के निकट उसी युग का पत्थर में परिणत हुआ अरॉकेरिया का एक जङ्गल अब तक विद्यमान है, और ऐसे ही एक और जङ्गल का पता, कुछ वर्ष हुए, पैटैगोनिया में भी लगा है। पूर्वीय जर्मनी के कोयले के क्षेत्रों में भी अनेक वृक्षों और पशुओं के अवशेष, जो कोयले में परिणत हो चुके हैं, मिल रहे हैं।

एक एकड़ भूमि का भोजन

एक एकड़ भूमि को भोजन के लिए वर्ष भर में ५,५००,००० पौंड पानी, ६,८०० पौंड ऑक्सीजन, और ५,२०० पौंड कार्बन चाहिए। इसके अतिरिक्त उसके लिए १७० पौंड ऐप्सम नमक, ४०० पौंड फौस्फेट, ३०० पौंड पोटाश, ८०० पौंड नाइट्रेट, ७५ पौंड सल्फर, २ पौंड लोहा, १५ फीट तॉबे के तार के तैल के बराबर तॉबा और थोड़ा जिङ्क भी आवश्यक होता है।

कुछ अनोखी बातें !

जिस दिन जापानी बच्चा पैदा होता है उसी दिन से उसकी आयु एक वर्ष की मान ली जाती है !

✕ ✕ ✕
 ईरान के राजा साइरस को अपनी फौज के प्रत्येक सैनिक का नाम याद था !

✕ ✕ ✕
 थैमिस्टोक्लीज़ नामक व्यक्ति एथेन्स के २०,००० नागरिकों को नाम लेकर पुकारा करता था !

✕ ✕ ✕
 प्रायश्चित्त करने के लिए स्पेन की सैलोमिआ बुल्फ़ ने अपने पति की तस्वीर अपनी जिह्वा पर गुदवा ली थी !
 वह अपने पति से बहुत लड़ा करती थी !

✕ ✕ ✕
 पार्सन को, जो यूनानी-साहित्य का प्रसिद्ध विद्वान हो गया है, मिल्टन की सम्पूर्ण रचनाएँ कण्ठस्थ थीं ! वह उनको आदि से अन्त तक और अन्त से आदि तक ज़बानी दोहरा सकता था !

✕ ✕ ✕
 ला क्रोज़ बारह अज्ञात भाषाओं में कही गईं बारह कविताएँ केवल एक बार सुनकर दोहरा सकता था !

✕ ✕ ✕
 नेपल्स-निवासी आर्लोनिन ने बिना एक क्षण रुके दौंते कवि की कविताओं के १५,३५० चरण कहे थे !

✕ ✕ ✕
 तुर्की के सुल्तान मुराद चतुर्थ के २४० रानियाँ थीं। अंत में उसने प्रत्येक को एक-एक बोरे में बन्द करके बौस्फोरस में फिक्वा दिया और उनसे पिण्ड छुड़ाया !

✕ ✕ ✕
 हवाई द्वीप के जल-प्रपात प्रसिद्ध हैं। वे नूआनो घाटी में स्थित हैं और सड़क पर से दिखाई देते हैं। वहाँ ज्योंही जल चट्टानों पर से नीचे गिरने लगता है, त्योंही वायु के वेग के कारण फिर ऊपर की ओर जाने पर बाध हो जाता है !



विचित्र जंतुशाला !

नेब्रास्का (अमेरिका) के श्रीयुत पुत्र ने अपने बगीचे को एक जंतुशाला में परिणत कर डाला है ! तीन-चार वर्षों के अन्दर ही वृक्षों की पत्तियों और शाखाओं को काट-छोँटकर उन्होंने अनेक प्रकार के पशुओं की आकृतियों बना डाली हैं। प्रस्तुत चित्र को ध्यानपूर्वक देखने से अनेक पशु-पक्षियों की आकृतियों का पता आपको लग जायगा।

वृक्षों और लताओं का अद्भुत संसार !

दुनिया में सबसे बड़ी पत्तियाँ एक प्रकार के ताड़ वृक्ष की होती हैं, जो लङ्का में पैदा होता है। वे छाते बनाने और छप्पर छाने के काम आती हैं। इस वृक्ष में केवल एक बार ही फूल आता है और वह भी ८० वर्ष के पीछे। उसके फूल का दण्ड ४० फीट ऊँचा होता है। इसके बाद दूसरा नंबर विक्टोरिया रीजिआ नामक विशाल कुमुदिनी के पत्तियों का है, जिसकी थालीनुमा पत्तियों का व्यास छः फीट होता है। संसार भर में सबसे ऊँचे पेड़ की तस्वीर अगले पृष्ठ पर दी गई है, पर उससे भी ऊँचा एक और पेड़ सैन-फ्रांसिस्को नगर के निकट कमी स्थित था, जिसकी ऊँचाई ३३३ फीट थी।

दक्षिण-पश्चिमी मैक्सिको के सान्ता मार्का डेलट्यूल नामक ग्राम में एक साईप्रस का वृक्ष है, जिसके तने की परिधि १७५ फीट है। इङ्गलैंड का सबसे ऊँचा पेड़ है डगलस प्रर और इसकी ऊँचाई है १७८ फीट।

विश्व भर में सबसे लम्बी घास एक समुद्री घास है, जो केप हॉर्न और न्यूजीलैण्ड के मध्य में सागर में उगती है। इसकी लम्बाई २०० फीट से अधिक होती है, और इसकी शाखा जहाज़ की रस्सी जैसी मोटी होती है।

दुनिया की सबसे बड़ी अंगूर की बेल पर्थशायर में है। यह १८३१ में लगाई गई थी और १८८६ में उसने ४६५१ वर्गगज़ भूमि घेर ली थी। इसमें अग्रणीत शाखाएँ निकल आई थीं। इसके सबसे बड़े अंगूर के गुच्छे का वज़न सवा दो सेर था। जर्मनी की सबसे बड़ी अंगूर की बेल ८८ फीट लम्बी है और इसमें ८०० अंगूरों के गुच्छे लगते हैं !

संसार का सबसे बड़ा फूल—रैफ़लीज़िया !

संसार का सबसे बड़ा फूल रैफ़लीज़िया है। इसके सूत्रवत् अंग पड़ोस के पेड़-पौधों से अपने लिए धुराक चुराया करते हैं। इस फूल की प्रत्येक पंखुड़ी प्रायः १ फुट लम्बी होती है। पूरे फूल की चौड़ाई एक गज़ से भी अधिक होती है और इसके मधुकोश में लगभग पाँच सेर पानी समा सकता है !

भुंककर प्रणाम करनेवाला खजूर का पेड़ !

कहते हैं, प्रीदपुर में ऐसा एक खजूर का पेड़ था जो नित्य सन्ध्या को आरती के समय मन्दिर के घण्टों की ध्वनि के साथ शिर नवाकर स्थिर हो जाता था।

एक बार आँधी से यह वृक्ष कुछ भुंक गया था। तभी से ताप के घटने-बढ़ने के साथ इस वृक्ष का तना एक गज़ के लगभग भुंक जाया करता था और तन भी जाया करता था और तीसरे प्रहर उसकी बड़ी-बड़ी पत्तियाँ लगभग छः गज़ का चक्कर काटकर तन जाया करती थीं। इसी से जनता को ऐसा प्रतीत होता था मानो वह विशाल वृक्ष भक्तिभाव से सन्ध्याकाल में वन्दना कर रहा हो !

मधुमक्खी को कितनी मेहनत करनी पड़ती है !

आधा सेर शहद बनाने के लिए मधुमक्खियों को ३७,००० मधु-बिन्दुओं की ज़रूरत होती है। इसीलिए लोगो के इस विचार को पुष्टि मिलती है कि मधुमक्खी बहुत काम करती है।

मधुमक्खी को नियमपूर्वक सीखना पड़ता है कि मधु कहाँ-कहाँ उपलब्ध होता है। एक बार मालूम होने पर कि किसी प्रकार का फूल अपना मधु कहाँ सञ्चित रखता है, मधुमक्खी उसी फूल को सुगमता से खोज निकालती है और अपना समय यह अन्य पुष्पों की खोज में नहीं गँवाती।

नवजात द्वीपों पर भी हरियाली कैसे हो जाती है ?

जब वायु वेग से चलती है तब वह अपने साथ पुष्पों से पराग तथा पेड़-पौधों के बारीक बीज भी उड़ा ले जाती है। इसी कारण वे द्वीप जो समुद्र में सहसा प्रकट हो जाते हैं और जिनमें ज्वालामुखी पर्वत होते हैं, शीघ्र ही लता-वृक्षादि से परिपूर्ण हो जाते हैं। क्योंकि उन पर वायु द्वारा पौधों के बीज आदि उड़कर जा पहुँचते हैं और जमकर शीघ्र ही हरियाली कर देते हैं !

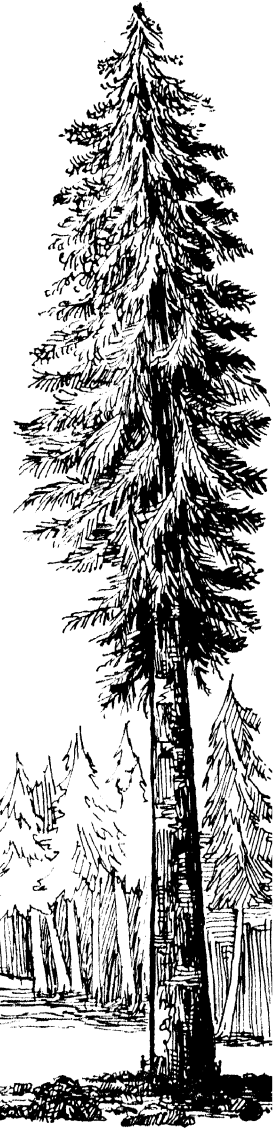


मनुष्य टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता पसन्द नहीं करता !

ऊपर के चित्र में अमेरिका के एक विशाल वृक्ष के भीमकाय तने में काटी गई एक सुरंग का दृश्य है। यह वृक्ष उस ओर निकलनेवाले एक रास्ते की आड़ में पड़ता था !

दुनिया का सबसे ऊँचा वृक्ष !

दाहिनी ओर जिस विशाल वृक्ष की तस्वीर दी गई है, वह दुनिया में सबसे ऊँचा है। उसकी ऊँचाई ३२५ फीट है और इसका नाम है 'डगलस फर'। यह अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रदेश के एक पार्क में है।



एक वृक्ष पर १७ तरह के सेब !

अमेरिका के मेजर फ्रैंक ए० गुड ने न्यू ब्रंज़विक में एक सेब के वृक्ष पर १७ फ़ल में लगाई थीं। उन्होंने सङ्कल्प किया था कि ब्रंज़विक में उगनेवाले सब जाति के सेब एक ही सेब के वृक्ष पर उगाये जावें। उनको अपने उद्योग में आशातीत सफलता मिली।



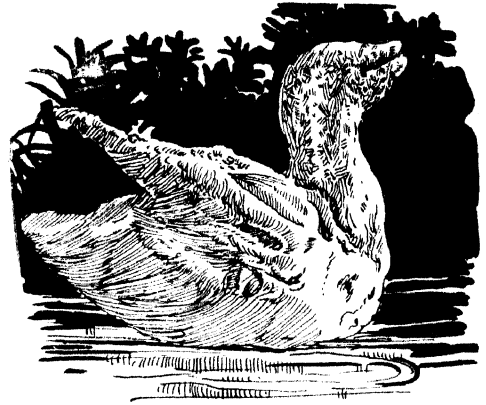
यह मनुष्य नहीं, वृक्ष है !

यह वृक्ष का विचित्र टूट प्रकृति की कला का आश्चर्यजनक उदाहरण है। प्रकृति द्वारा पालित-पोषित इस वृक्ष ने अपने आप ही यह मानव जैसा रूप धारण कर लिया है ! यह मिचीगन (अमेरिका) निवासी श्रियुत हालो क्लार्क नामक सज्जन की सम्पत्ति है।



दो सेर वजनवाला नींबू !

क्या आप विश्वास करेंगे कि यह नींबू परिधि में २२ इंच और तौल में दो सेर का पैदा हुआ था ! इसको कैलिफ़ोर्निया के श्रियुत डब्ल्यू० जी० मिकी ने उगाकर पैदा किया था !



क्या यह वृक्ष है ?

हाँ, इसकी गर्दन, चौंच, डेने आदि तो बहुत-कुछ

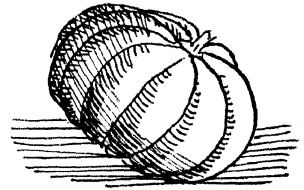
वृक्ष-जैसे ही मालूम होते हैं। पर ज़रा नज़दीक जाकर तो देखिए, यह जानवर है या एक फल ! लीजिए जनावर, यह भी खूब मज़ाक रही ! यह वृक्ष नहीं, बल्कि पपीता नामक फल है, जिसको कुदरत की मेहरबानी से एक बार ऐसी ही अजीब शक्ल मिल गई थी ! न केवल पपीता ही, बल्कि फूट, कद्दू, आम आदि अन्य फल भी कभी-कभी इसी तरह बड़ी विचित्र शक्लें लेकर पैदा होते हैं !



५०० वर्ष पुराना, फिर भी केवल ३ फीट ऊँचा वृक्ष !

आप मानें चाहे न मानें, पर इस गमले में

जो यह वृक्ष उगा हुआ दिखाई दे रहा है, इसकी उम्र ५०० वर्ष की है, यद्यपि देखने में यह इतना छोटा है। यह जापान में होने-वाले एक प्रकार के बेर का वृक्ष है ! इसकी ऊँचाई है केवल ३ फीट !

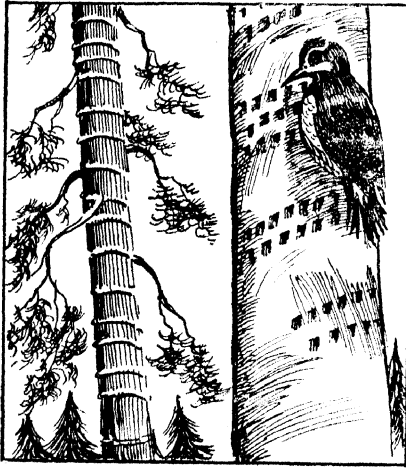
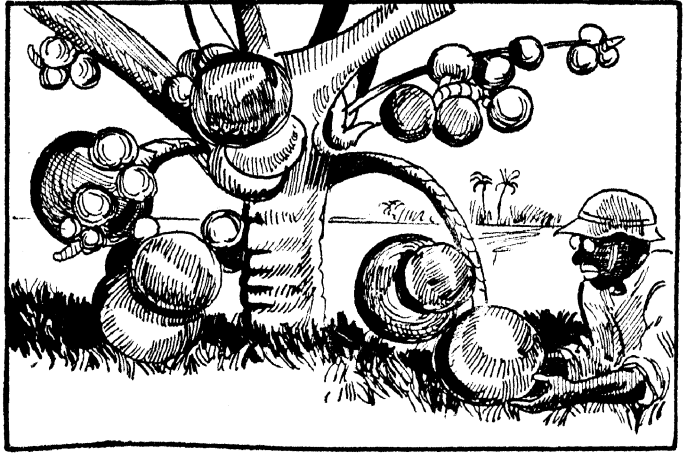


सवा मन का कद्दू !

आप अपने भारी-भारी कुम्हड़े देखे होंगे, पर ऐसा भारी न देखा होगा ! यह तौल में १ मन १० सेर है और परिधि में ६॥ फीट। इसको न्यूयॉर्क-निवासी श्रियुत एल० क्लेबर्ग ने अपने खेत में उगाया था !

जुड़वाँ नारियल !

पिछले किसी पृष्ठ पर आप ऐसे जुड़वाँ भाइयों की मनोरंजक कहानी पढ़ चुके हैं, जो जन्म से ही एक-दूसरे से जुड़े हुए पैदा हुए थे। मैडेगास्कर द्वीपों के उत्तर-पूर्व में स्थित सिलिलीज द्वीप के इस वृक्ष में भी उन्हीं जुड़वाँ भाइयों की तरह एक-साथ जुड़े हुए दो-दो नारियल पैदा होते हैं, और तौल में ये नारियल बीस-बीस सेर के होते हैं। इससे मालूम होता है कि प्रकृति न केवल मनुष्य या जानवरों के साथ ही बल्कि वृक्षों के साथ भी विनोद करती है !



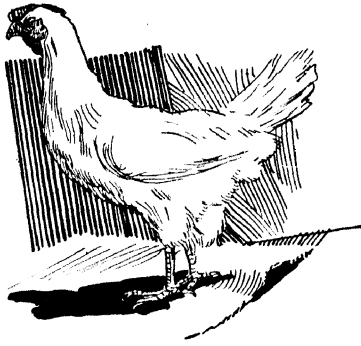
पक्षी और पेड़ की लड़ाई में पेड़ ही विजयी हुआ !

निरन्तर कई वर्षों तक यह पक्षी कैलिफोर्निया के इस चीड़ के वृक्ष के तने में घोंसला बनाने के लिए छेद करता रहा। परन्तु दिन में वह जो छेद कर जाता, रात भर में ही वृक्ष के तने पर उस स्थल पर एक चूड़ी-सी बन जाती थी। जब पक्षी वापस लौटता और वहाँ अपना छेद गायब देखता तो फिर दूसरी जगह वह छेद बनाता, पर पुनः वहाँ वैसी ही चूड़ी बन जाती ! इस तरह इस पक्षी और पेड़ में आपस में वर्षों लाग-डॉट चलती रही और परिणाम यह हुआ कि वृक्ष के पूरे तने में इस तरह अनेक चूड़ियाँ बन गईं। आखिर पक्षी को हार मानना पड़ी और विजय का सेहरा पेड़ के ही सिर बँधा (देखिए बाईं ओर का चित्र) !

बिना काँटे का गुलाब !

फूलों की दुनिया में भला गुलाब की-सी सुन्दरता और मृशब्द अन्यत्र कहाँ मिल सकती है ? परन्तु गुलाब का फूल तोड़ते समय जब उसका काँटा उँगलियों में चुभता है, तब किसके मन में यह बात न उठती होगी कि यदि ये काँटे इस पौधे पर न होते तो कैसा अच्छा रहता ! लीजिए, अमेरिका के कनेक्टीकट प्रदेश के एक माली निकलस गिल्लो ने, जिसको संसार भर में गुलाब के सम्बन्ध में सबसे अधिक ज्ञान है, आखिर एक बिना काँटे का गुलाब उगा ही डाला ! दाहिनी ओर का चित्र देखिए—उसमें कलिकावस्था से लगाकर पूर्ण विकसित होने तक के पाँच दृश्य दिखाये गये हैं।





इस मुर्गी ने दुनिया में सबसे अधिक अंडे दिए !

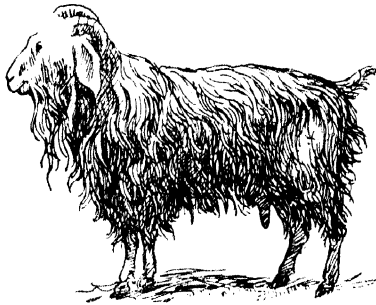
वर्ष के ३६५ दिनों में इस मुर्गी ने (जिसका चित्र बाईं ओर दिया गया है) ३५७ अंडे दिए थे ! हाल ही में एक मुर्गी द्वारा १५२ दिनों में १५२ अंडे दिए जाने की भी खबर मिली है !



कुंभकर्ण का वंशज !

मैं ढक के मुख की आकृतिवाला

यह अजीब पत्नी मलय प्रदेश और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में पाया जाता है। इसको दिन में ऐसी गहरी नींद आती है कि उस समय यदि इसे कोई कहीं उठा ले जाय तो यह कदापि जगेगा नहीं !



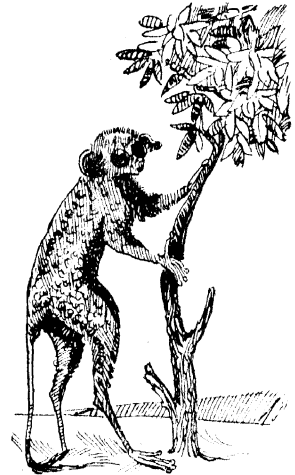
दूध देनेवाला बकरा !

यह बकरा नैपाल से कलकत्ते की जंतुशाला में लाया गया है। यह सुबह-शाम लगभग एक सेर दूध देता है ! ऐसा ही एक और बकरा जयपुर की जंतुशाला में भी था।



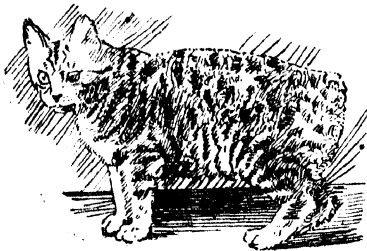
सुअर यों लेटकर क्या समाधि लगाता है ?

विना पीठ के बल लेटे शूकर महोदय के लिए संभवतः गम्भीर चिन्तन करने आवश्यक है, शायद इसीलिए यह इस तरह लेटा करते हैं !



क्या यह चरमा लगाए हुए है ?

नहीं, मलय-प्रदेश के टासिअर नामक इस जन्तु की बड़ी-बड़ी गोल आँखें ही ऐसी हैं कि चरमा जैसी दिखाई देती हैं ! यह बंदरो की जाति का जानवर होता है।

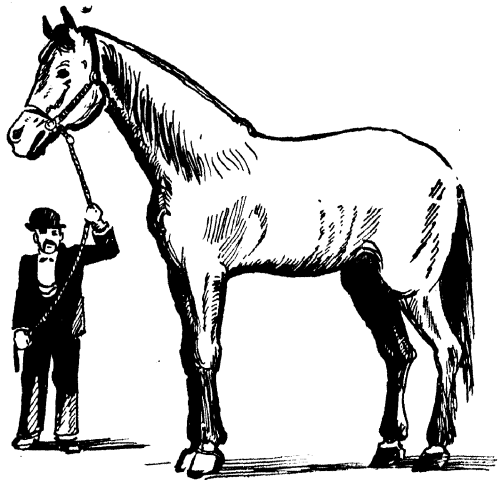


बिना दुमवाली बिल्ली !

मैं इस जाति की इस बिल्ली के दुम नहीं होती—उसके बदले केवल केशों का एक गुच्छा दिखाई देता है !

१३॥ फीट ऊँचा घोड़ा !

आम तोर पर एक अच्छे घोड़े की ऊँचाई अधिक-से-अधिक आदमी की ऊँचाई जितनी ही होती है, परन्तु संयुक्त राज्य (अमेरिका) के निवासी श्रीयुत् ए० एन० हिल महोदय के 'पीटर महान्' नामक इस अद्भुत घोड़े ने तो क्रुद के मामले में मानों जिराफ़ से होड़ बदन की ठान ली हो ! इसकी कानों तक की ऊँचाई १२ फीट ५ इंच है ! यदि एक आदमी के सिर पर दूसरा आदमी खड़ा हो जाय तो भी यह घोड़ा उन दोनों से ऊँचा ही रहेगा ! भला, इस घोड़े पर सवारी कैसे की जाती होगी—क्या सीढ़ी लगाकर ?



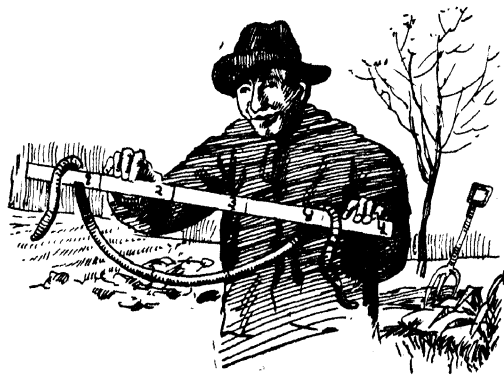
यह पेड़ का टूँठ नहीं, दीमक की बाँधी है !

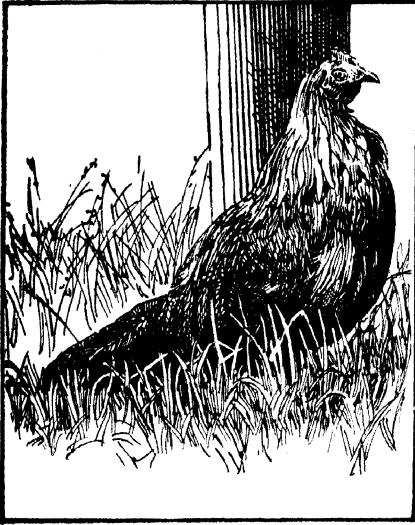
जानवरों की दुनिया में दीमक को 'सिविल इंजीनियरिङ्ग' का सर्टिफ़िकेट दिया जा सकता है । यदि आप दीमक की बनाई हुई बाँधियों की तुलना उसके शरीर के आकार से करें तो आप यह देखकर दंग रह जायेंगे कि यह छोटा-सा जीव अपने निजी आकार से १००० गुना अधिक ऊँची इमारतें खड़ी कर लेता है, जबकि मनुष्य अब तक सबसे ऊँची जो इमारत बना पाया है वह उसके आकार से २०० गुना ही बड़ी है ! दीमक की ये बाँधियाँ, जो २५ फीट तक ऊँची पाई गई हैं, ऐसी मज़बूत होती हैं कि इन पर कठिनाई से फावड़ा चल सकता है और इनके भीतर हज़ारों छोटे-छोटे कच्चे और टेढ़े-मेढ़े सुरंगनुमा रास्तों का जाल बना रहता है !



पाँच फीट लम्बा कैंचुआ !

अमेरिका के ईकोडोर प्रदेश में कैंचुए बहुत पाए जाते हैं, जो मछली का शिकार करनेवालों के लिए आशीर्वाद के तुल्य हैं । कहते हैं, वहाँ का एक-एक कैंचुआ पाँच-पाँच फीट तक लम्बा पाया जाता है । दिन भर की मेहनत में यदि एक भी ऐसा कैंचुआ मिल गया तो परिश्रम रफ़ाल हो जाता है । ये कैंचुए धरती के भीतर काफ़ी गहराई पर रहते हैं और इन्हें खोद निकालने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है ।





मुर्गी मुर्गी बन गई !

सन् १९३७ ई०
की बात है।

लन्दन की जंतुशाला में एक जङ्गली मुर्गी एकाएक मादा से नर बन गई। उसकी गर्दन पर न केवल नर के-से पर ही निकल आए, वरन् एक छोटी-सी कलंगी भी !

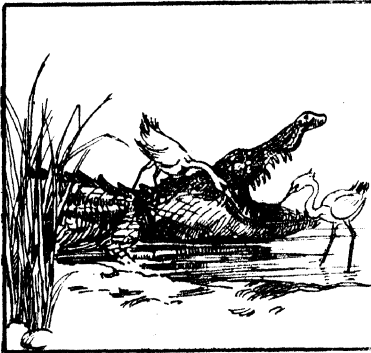
दाढ़ीवाला घोड़ा !

अमेरिका के रोज़-लैण्ड नामक
गाँव के एक ग्वाले



का यह घोड़ा है। इस घोड़े के दाढ़ी उग आई हैं ! इसका स्वामी

इसे दूध की गाड़ी में जोतकर ले जाता है, और समय-समय पर उस्तरे से वह इसकी दाढ़ी को मुँहवा देता है, अन्यथा बाज़ार में तमाशा लग जाय ! पर कुछ दिन बाद फिर ज्यों-की-त्यों इस घोड़े की दाढ़ी उग आती है !



बगुले घड़ियालों के दाँत कुरेदते हैं !

यह बात तो ठीक वैसी

ही अनहोनी-सी है, जैसे कोई कहे कि बकरी जाकर शेर के दाँत साफ़ करती है ! किन्तु आप माने या न मानें, है यह एक प्राकृतिक सत्य कि नदियों और तालाबों के किनारे घड़ियाल अपना भयंकर मुख खोले हुए पड़े रहते हैं और



बगुले उनके मुँह में अपनी लंबी चोंच डालकर उनमें यहाँ-वहाँ अटकते हुए मांस के टुकड़े चुग लेते हैं ! ज़रा इन बगुलों के साहस का तो अनुमान कीजिए ! यदि उस समय घड़ियाल महाशय एकाएक अपना मुँह बंद कर लें तो उनके जबड़ों में पिसकर बगुलोराम की गर्दन की क्या दशा हो !

एक दिन में एक करोड़ अंडे !

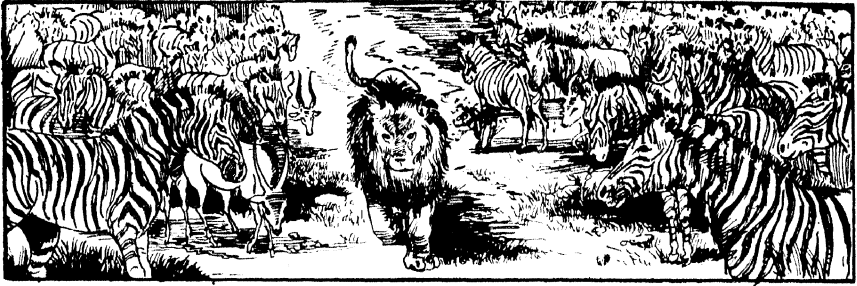
क्या आप जानते हैं कि मादा दीमक केवल एक

ही दिन में एक करोड़ अंडे देती है ! ज़रा हिसाब लगाइए कि इस प्रकार प्रति सैकंड वह कितने अंडे देती होगी !



जंगल के
राजा सिंह
से दिन में
जानवरों
को कोई
भय नहीं !

शिका-
रियों



का कहना है कि अफ्रीका के जंगलों में पाए जानेवाले ज़ेबरा, हिरण और अन्य पशुओं को दिन में शेर से किंचित् भी भय नहीं लगता ! जब वे शेर को आते देखते हैं तो मानों उसके सम्मान में रास्ते से अलग खड़े होकर केवल उसके लिए एक मार्ग बना देते हैं । और सिंह भी उन्हें छेड़े बिना बड़ी शान के साथ धीरे-धीरे चलता हुआ उनके बीच में से होकर निकल जाता है ! यह बात कहीं तक सच है सो तो शिकारी लोग ही जानें, परन्तु यदि ऐसा ही होता हो तब तो गाय और शेर के एक घाट पर पानी पीने की बात कोरी कपोल-कल्पना नहीं रह जाती !

मनुष्य ने शेर को भी पालतू बना डाला !

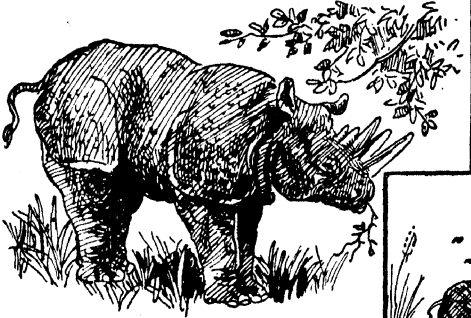
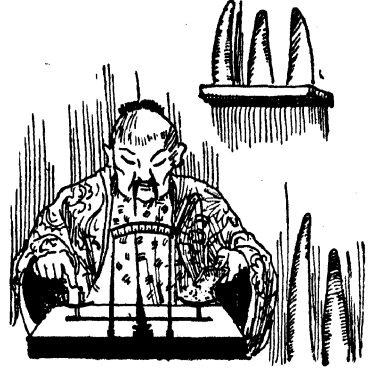
पिछले एक प्रकरण में हम अमेरिका के सुप्रसिद्ध भयंकर जानवरों के सर्कसी खिलाड़ी क्लाइड बीअटी का परिचय दे ही चुके हैं । लीजिए, अब मनुष्य द्वारा पशुओं पर विजय का एक और प्रमाण आपके सामने प्रस्तुत है । अलादीन नामक इस शेर को इसके खिलाड़ी ने केवल दो महीने की

शिक्षा द्वारा इस तरह मोटे तारों पर शरीर-संतुलन करते हुए चलना सिखा दिया है ! इस जानवर का तोल ३ मन ५ सेर है !



चोर चोरी करे, पड़ौसी मारा जाय !

एक जगह की घटना है कि एक शिकारी खरगोश आदि पकड़ने के लिए एक पिंजड़े में कुछ दाना-चारा रखकर उस पिंजड़े को रात को किसी वृक्ष से बाँध देता था । पर सुबह आकर जब वह देखता तो न केवल उस पिंजड़े में का दाना-चारा ही गायब मिलता, बल्कि उसके साथ ही वह पिंजड़ा और उसको बाँधने की रस्सियाँ भी ! जब कई बार ऐसा हुआ तो संदेह में पड़ौसी से उसकी लड़ाई ठन गई । पर बाद में मालूम हुआ कि यह चोरी एक रीछ किया करता था !



क्या आपको गैंडे के संबंध में ये अद्भुत बातें मालूम हैं ?

इस अनोखे जानवर के प्रायः एक ही सींग होता है और वह सिर पर नहीं, बल्कि

इसके नाक पर उगता है ! परन्तु यह बात केवल भारतीय गैंडे के संबंध में ही कही जा सकती है। इसके विपरीत अफ्रीका में पाए जानेवाले गैंडों के दो, तीन और चार तक सींग होते हैं और एक गैंडा तो ऐसा भी पाया गया है जिसके पोंच सींग थे ! परन्तु हर हालत में ये सभी सींग रहते हैं उसके नाक पर ही !

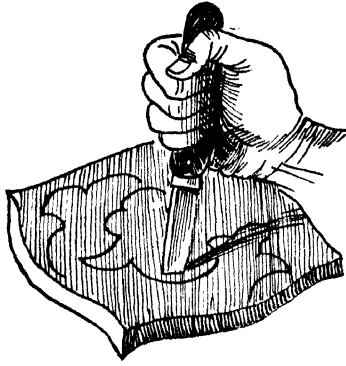
गैंडे के सींग का चूर्ण चीन और सुदूर पूर्व के अन्य देशों में ज्वर-शान्ति के लिए औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है, इसीलिए वहाँ इसके सींग का मूल्य प्रति इंच ३०० रुपये के लगभग होता है !

मध्ययुग में, जब कि विष द्वारा शत्रु का विनाश करने की प्रथा थी, गैंडे के सींग का चूर्ण किसी भी पदार्थ में मिले हुए विष की मौजूदगी का पता लगाने के लिए भी काम में लाया जाता था। कहते हैं, विष में इस चूर्ण को डालने से प्याले के बाहरी भाग में पसीने की-सी बूँदें बन जाती थीं। पर अब यह बात असत्य प्रमाणित हो चुकी है।

जब कोई खतरे की बात होती है तो आसपास के पक्षी ज़ोरों से चहचहाकर और गैंडे के ऊपर उड़कर पंख फड़ा-फड़ाकर उसे सोते से जगा देते हैं और सावधान कर देते हैं।

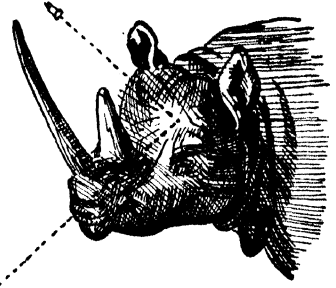
सन् १५१३ ई० में पहले-पहल भारत से एक गैंडा जब पुर्तगाल के राजा के पास भेजा गया तो वहाँ इस अनोखे प्राणी को देखकर हलचल मच गई !

(ऊपर इसी संबंध के चित्र प्रदर्शित हैं ।)



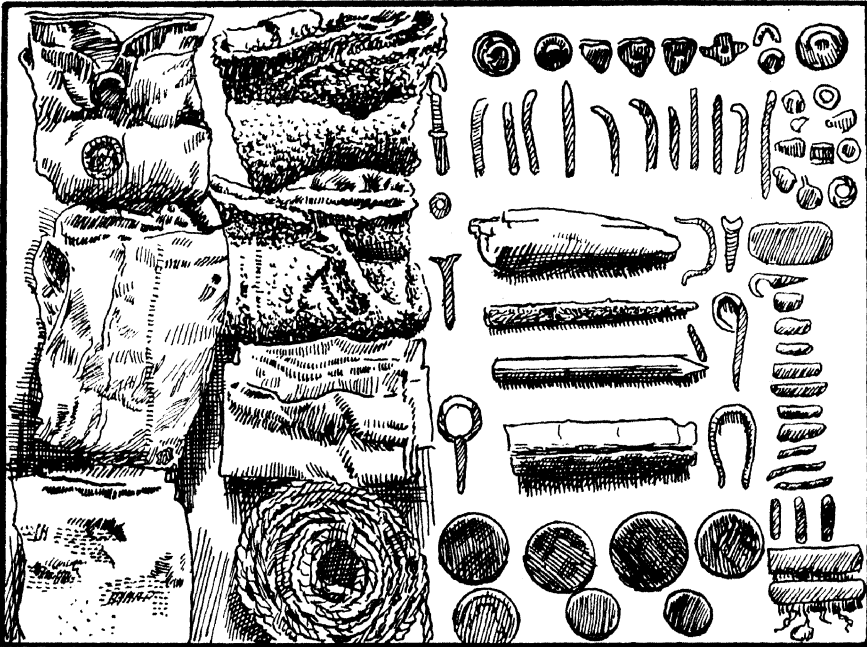
क्या सचमुच गैंडे की खाल
दुर्भेद्य है ?

सभी यह कहते हैं कि गैंडे की
खाल ऐसी दुर्भेद्य होती
है कि उस पर तलवार या भाला
तो क्या बंदूक की गोली भी असर
नहीं करती। इसीलिए प्रायः मध्य-
युग में गैंडे की खाल की ढालें
बहुत अधिक काम
में लायी जाती रही
हैं। किन्तु यह बात



हाँ, उसकी खोपड़ी अवश्य दुर्भेद्य है !

प्रायः यह देखा गया है कि शिकारियों की गोली का
गैंडे की खोपड़ी पर ठीक निशाना बैठने पर
भी उस जानवर का कुछ भी नहीं बनता-बिगड़ता ! इसका
कारण यह है गैंडे की खोपड़ी इतनी मज़बूत होती है कि
उससे बंदूक की गोली उचटकर लौट जाती है !



शुतुर्मुर्ग का अनोखा भोजन !

शुतुर्मुर्ग को अत्यधिक भूख लगती है और भूखा होने पर वह चाहे जो खा लेता है—उसे किसी भी प्रकार के
भोजन से अरुचि नहीं है। वह रस्सी से लगाकर पत्थर तक सब-कुछ खाकर जीवित रह सकता है। प्रसृत
चित्र में दिखाई गई सभी वस्तुएँ एक शुतुर्मुर्ग के पेट से निकली थीं !



देखने में समान
पर आचरण
में विपरीत !

बगुला और

सारस
देखने में बहुत-
कुछ मिलते-जुलते
होते हैं, परन्तु
उनका आचरण
कई बातों में एक-
दूसरे से विपरीत
होता है। उदा-
हरण के लिए ब-
गुला अपनी गर्दन
को पीछे की ओर
मोड़कर और शिर
को अपने दोनों
कन्धों के मध्य में
करके उड़ता है
तथा सारस अपनी
गर्दन को लम्बाय-
मान करके उड़ता
है। पुनश्च, ब-
गुला अपना घों-
सला पेड़ पर लक-
ड़ियों के टुकड़ों का बनाता है तो सारस पृथ्वी पर घास का घोंसला
बनाकर ही बसेरा लेता है ! बगुले का कपटजाल मशहूर ही है !



बया घोंसले में दिया जलाती है !

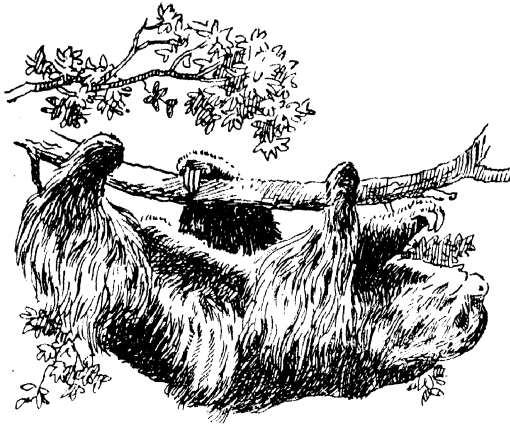
बया का घोंसला तो आपने देखा ही होगा—
वह पक्षी-जगत् की कारीगरी का सर्वोत्कृष्ट
नमूना कहा जा सकता है। वह पेड़ से नीचे लटक
रहता है और नीचे ही से उसमें प्रवेशद्वार होता
है, ताकि और कोई जानवर उसमें न घुस पाए और
न बरसात आदि का ही भीतर कोई असर पहुँच
सके। आपको ताज्जुब होगा कि इस घोंसले को
भीतर से प्रकाशित रखने के लिए यह चिड़िया
बहुत-से जुगनु पकड़कर उसमें कैद कर देती है, जो
वहाँ चमचमाते हुए उजाला किए रहते हैं !



उड़नेवाला साँप !

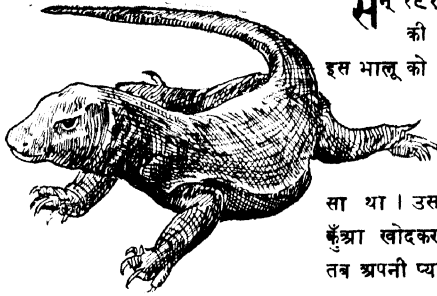
यह

साँप केवल
जावा और
मलेशिया प्रदेश में ही
पाया जाता है। यह वृक्ष
पर रहता है और फीते
की तरह चपटा होकर एक
वृक्ष से दूसरे वृक्ष
पर उड़कर चला
जाता है। उस
समय कैसा भयंकर
लगता होगा वह !



पेड़ों पर उलटा लटका रहनेवाला भालू !

मध्य और दक्षिणी अमेरिका का यह भालू जैसा पशु भूमि पर चलने में पूर्ण असमर्थ है, क्योंकि इसके पैर इस प्रकार मुड़े होते हैं कि उनसे वह केवल वृक्षों की शाखाओं पर ही खिसक-खिसककर चल-फिर या लटका रह सकता है। इसके अग्रले पैर में केवल दो अथवा तीन उँगलियाँ होती हैं और पिछले में तीन। यह उँगलियाँ अलग-अलग न होकर त्वचा द्वारा मिली हुई होती हैं और इनके सिरों पर नख होते हैं।



भालू ने कुँआ खोदकर प्यास बुझाई !

सन् १६१० की बात है। लन्दन की सुप्रसिद्ध जंतुशाला के इस भालू को एक दिन जब पीने को पानी दिया गया तो उसने उसे कुँआ तक नहीं, यद्यपि वह प्यासा था। उसने स्वयं ही धरती में कुँआ खोदकर पानी निकाला और तब अपनी प्यास बुझाई !

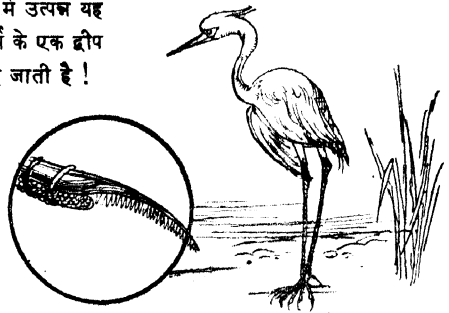
१२ फ्रीट लंबी छिपकली !

आदि युग के दैत्याकार उरंगमों के वंश में उत्पन्न यह बृहत्काय छिपकली पूर्वी भारतवर्ष के एक द्वीप में देखी गई है। यह १२ फ्रीट तक लम्बी पाई जाती है !



मेंढक अपने अंडे पीठ पर लादे रहता है !

योरप में पाए जानेवाले इस विशेष जाति के मेंढक की मादा वर्ष में दो से चार बार तक अंडे देती है। इन अंडों को मेंढक महाशय अपनी पीठ पर तीन सप्ताह तक लादे रहते हैं !

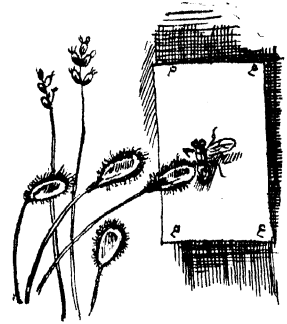


बगुले की पंख सँवारने की कंधी !

नीले रंग के इस बगुले की जाति के पक्षी के पंजे में एक कंधा रहता है, जिसे यह अपने पंरों को सँवारकर स्वच्छ रखने के लिए काम में लाता है !

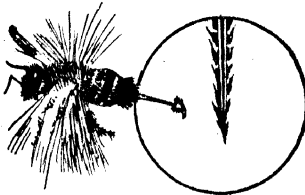


अनोखा घोंघा !
ब्राजील में कुछ ऐसे घोघे पाए जाते हैं, जो नौ इंच तक लम्बे होते हैं। इनके अण्डे प्याज़ की भौंति बड़े देखे गये हैं। देखिए बाईं ओर का चित्र।



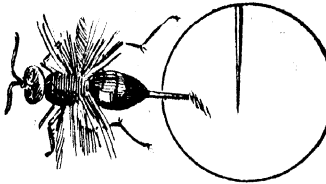
मांसाहारी पौधा !

ऊपर जिस पौधे का चित्र दिया गया है, इसका नाम 'सन-ड्यू' है। यह शिकारियों की तरह छोटे-छोटे जीवों का आखेट करता है। मक्खी को देखकर उसे पकड़ने के हेतु यह ३ इंच आगे बढ़ जाता है, जैसा कि चित्र में प्रदर्शित है।



मधुमक्खी और बर् के डङ्क में अंतर !

मधुमक्खी के डङ्क में काँटे होने के कारण वह केवल एक ही बार डङ्क मार सकती है, और ऐसा करने पर वह अपने डङ्क और जीवन दोनों से ही हाथ धो बैठती है ! किन्तु बर् का डङ्क सुई जैसा नुकीला और चिकना होता है। इसलिए वह अनेक बार काम में लाया जाता है। देखिए बाईं ओर के दोनों चित्र।



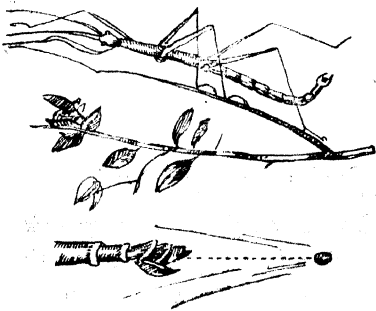
भृङ्ग और रानी मधुमक्खी की ६००० और १३००० आँखें !

क्या आप यह जानते हैं कि भृङ्ग के १३,००० चक्षु होते हैं, और रानी मधुमक्खी के ६,००० ?



जन्तु-जगत की बन्दूक !

वहुत-से कीड़ों की मादा के शरीर के पिछले हिस्सों में बन्दूक की नली जैसा एक अंग होता है, जिसके द्वारा वह अपने अंडे उसी प्रकार निकालती रहती है जैसे कि बन्दूक से गोलियाँ छूटती हैं ! देखिए बाईं ओर का चित्र।



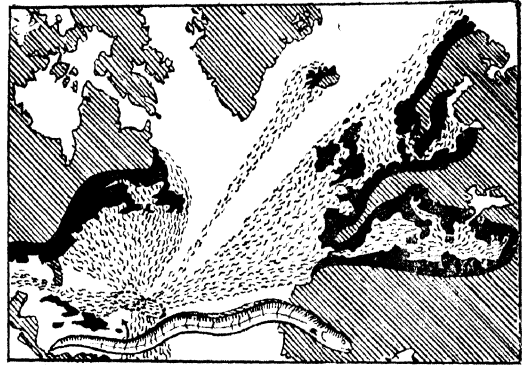
रेशम बनानेवाला कीड़ा !

क्या आप यह जानते हैं कि रेशम रई की तरह किसी वनस्पति का रेशा नहीं, बल्कि एक विशेष जाति के कीड़े द्वारा पैदा किया जाता है ? ऊपर के चित्र में वह कीड़ा प्रदर्शित है।

‘ईल’ मछली की अनोखी लंबी यात्रा !

योरप और अमेरिका की ईल या बाम मछली की

जीवन-कहानी सब जीवन-कहानियों से निराली है। इसका ठीक-ठीक पता लगे अभी थोड़े ही वर्ष बीते हैं। शकल-सुरत या रहन-सहन में ये विदेशी मछलियों हमारे देश की बाम मछलियों से बहुत-कुछ मिलती-जुलती हैं। पूर्ण रूप से बदी हुई मादाएँ गज़ भर लम्बी हो जाती हैं, परन्तु बड़े से बड़े नर २ फीट तक भी नहीं पहुँच पाते। नर ४-६ वर्ष में पूरे बंद जाते हैं, परन्तु मादाओं को उनसे २ वर्ष अधिक लग जाते हैं। अपने वृद्धि-काल में इनका रंग पीला-सा होता है, इसलिए ये पीली बाम कहलाती हैं। ज्यों-ज्यों ये पूर्ण वृद्धि को पहुँचती जाती हैं, इनके रंग और रूप में भी परिवर्तन होता जाता है। उस समय उनका रंग रुपहला हो जाता है, आगे का थूथन कम चपटा हो जाता है, आँखें बड़ी हो जाती हैं और आगे के डैनों में भी मज़बूती आ जाती है। उनकी भूख गायब हो जाती है, तथा अन्न-प्रणाली में भी संकीर्णता आ जाती है। रुपहली मछलियाँ खाने में पीलीवाली मछलियों की अपेक्षा अधिक स्वादिष्ट होती हैं। ये मछलियाँ जब नया रूप धारण कर लेती हैं, तब इनमें एक तीव्र इच्छा उत्पन्न होती है और वे ताज़े पानी के भीलों और तालाबों को छोड़कर, ज़मीन पर होकर नदियों में होती हुई, सभी बाधाओं का सामना करती हुई निकट के समुद्र में पहुँच जाती हैं। इनकी यात्रा की पहली मंज़िल यहाँ समाप्त हो जाती है। जर्मनी के डाक्टर जोहानीज़ शिमिट ने १७ वर्ष की खोज के बाद पता लगाया कि योरप के कोने-कोने से इन मछलियों के भुंड-के-भुंड बाल्टिक सागर, उत्तरी सागर तथा भूमध्यसागर में एकत्रित होकर अटलांटिक महासागर में जा पहुँचते हैं और उपवास करते हुए इस महासागर को पारकर वेस्ट इण्डोज़ द्वीपसमूह के पूर्वी भागों में पहुँच जाते हैं ! यहीं समुद्र की गहराई में उन सबका जन्म-स्थान है। इस लम्बी जल-यात्रा में उनको कई महीने लग जाते हैं।



१ हजार फीट या उससे भी अधिक गहराई में अपने डिम्ब-कोष और वीर्य को त्यागने के उपरान्त ईल अपना शरीर भी त्याग देती हैं। जन्तु-जगत् में सन्तान के प्रति माता-पिता के प्रेम का इससे पदकर क्या उदाहरण होगा ! सन्तानोत्पादन में ही वे अपना जीवन तक समाप्त कर देती हैं। अंडों से निकले हुए पारदर्शक नन्हें-नन्हें बच्चे पहली गर्मी में जब लगभग १ इंच लम्बे होते हैं, तब सागर की गहराई से ऊपर की ओर आ जाते हैं। उस समय जल की ऊपरी सतह पर पूर्व की ओर बहनेवाली धारा में फँसकर वे भी योरप की ओर अपनी यात्रा आरम्भ कर देते हैं। दूसरी गर्मी के शुरू होने पर वे मध्य अटलांटिक में होते हैं और उस समय तक वे २ इंच लम्बे हो जाते हैं तथा उस समय देखने में काँच के बने हुए चाकू के फल या कनैल की पत्ती-जैसे दिखलाई पड़ते हैं। तीसरे वर्ष तक वे १ इंच बड़े हो जाते हैं और योरप के किनारों पर पहुँच जाते हैं। इसी रूप में वे सागर के खारे जल को त्यागकर नदियों के भीटे जल में प्रवेश करने लगते हैं। इस समय फिर इनके शरीर में परिवर्तन होता है—उनकी भूख लुप्त हो जाती है, शरीर चपटे आकार से बुनने की सुई-जैसा गोल हो जाता है और अब वह पारदर्शक भी नहीं रहता। अब ये मछलियाँ भिन्न देशों की नदियों में चढ़ जाती हैं और दल-दलों तथा नालियों में होकर भील-तालाबों में भर जाती हैं—यहाँ तक कि स्विट्ज़रलैंड-जैसे भीतरी देशों की भीलों में भी पहुँच जाती हैं !

यहाँ ४-६ वर्ष तक खा-पीकर अपने पूर्ण डील को पहुँचकर फिर उसी प्रबल मनोवृत्ति के बश में होकर सन्तानोत्पत्ति करने तथा प्राण त्यागने के लिए ये अपनी जन्मभूमि के लिए निकल पड़ती हैं। यह कोई नहीं जानता है कि किस शक्ति से प्रेरित होकर ये बिना किसी पहले अनुभव के अपनी बाल्यावस्था में ही अपने जन्म-स्थान से हजारों मील चलकर योरप पहुँच जाती हैं और फिर बड़ी होने पर वहाँ से चलकर अटलांटिक महासागर को पारकर अपने आदि जन्म-स्थान को वापस लौट जाती हैं। यह कैसे अचम्बे की बात है ! किन्तु जन्म-जन्मान्तर से ये ऐसा ही करती आई हैं।



चिमगादड़ नहीं, तोते !

वृक्षों पर उलटे लटके हुए ये जानवर चिमगादड़ नहीं हैं, बल्कि तोते हैं ! मलय देश में बीस प्रकार के ऐसे तोते पाये जाते हैं, जो रात को सोते समय, चिमगादड़ की तरह, पेड़ की डाल से एक या दोनों पंजों के बल लटके रहते हैं !

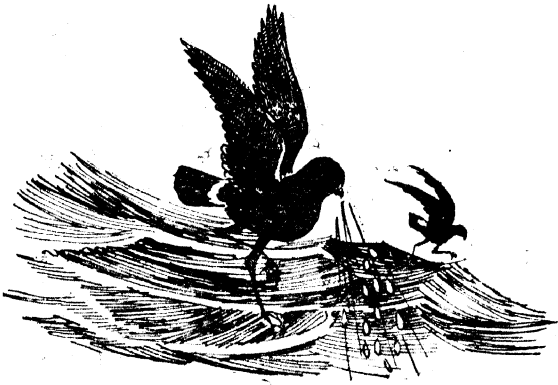


दक्षिण चिड़िया !

यह चिड़िया हमारे ही देश में होती है और अपने घोंसले को यह बड़े विचित्र ढंग से घोंस के तिनकों से सी-सीकर तैयार करती है। उसकी पैनी चोंच की नोक ही सुई का काम देती है और धागे का काम वह लम्बे नरम तिनकों से ले लेती है ! निस्संदेह यह पक्षियों की दुनिया की दक्षिण कही जा सकती है !

शुतुमुर्ग पंजाब-मेल की रफ्तार से दौड़ता है !

आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि दुनिया का सबसे बड़ा पक्षी होने पर भी शुतुमुर्ग उड़ने में असमर्थ है। इसके विपरीत वह ६० मील प्रति घंटे की चाल से दौड़ लेता है ! उसकी टाँगें इसीलिए इतनी मजबूत होती हैं।



समुद्र की लहरों पर दौड़नेवाली अनोखी चिड़िया !

इस अद्भुत चिड़िया को प्रकृति ने ऐसी कुछ विशेषता दी है कि यह आसमान में उड़ने के बजाय समुद्र की सतह पर लहरों के साथ अठ-खेलियों खेलते हुए इस प्रकार सरपट दौड़ती चली जाती है मानो ज़मीन पर ही दौड़ रही हो ! साथ ही वह अपने गले और नासिका-रंध्रों में से पानी पर एक प्रकार के तैलीय पदार्थ का फव्वारा-सा छोड़ती जाती है !

तरह-तरह की जिह्वाएँ !



सिंह की जिह्वा ऐसी सुदृढ़ होती है कि मनुष्य की खाल को फाड़ डालती है और हड्डियों पर से मांस खुरेच लेती है !

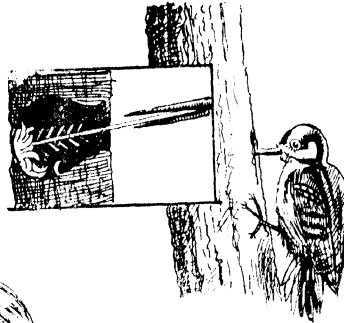


जिराफ़ की जिह्वा ऊँचे वृक्षों की शाखाओं में लम्बी करके जपेटी जा सकती है !

चोंटो-भरक की जिह्वा ८ या ९ इंच लम्बी और बहुत ही चिपचिपी होती है, जिससे कि वह चींटियों को पकड़ कर खा सके !



बिल्ली की जिह्वा भी सुदृढ़ होती है और तरल पदार्थ पीते समय सिंह की जिह्वा की तरह प्याले की आकृति की हो जाती है !

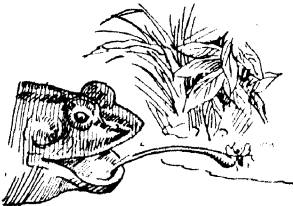


सुटबर्ड की जिह्वा नुकीली होती है, जिससे वृक्षों के छेदों में से कीड़े-मकोड़ों का शिकार किया जा सके !

तोतों की जिह्वा मोटी होती है जिससे खाने-पीने में उन्हें बहुत सुगमता रहती है !

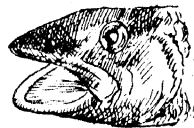


मनभनाने वाली चिड़िया की जिह्वा में दो ताने-से साथ-साथ होते हैं, जिनसे वे पुष्पों में से रस खींच लेते हैं !



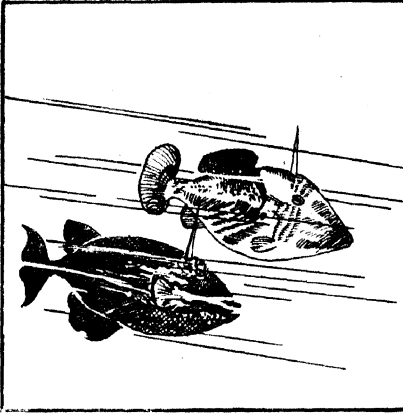
मेंढक की जिह्वा चिपचिपी रबड़ की गुल्लक जैसी होती है, जो शिकार देखते ही धावा बोल देती है !

अनेक मछलियों के जिह्वा होती ही नहीं। यदि होती भी है तो वह छोटी-बड़ी नहीं की जा सकती।



सर्प की दो जिह्वा प्रसिद्ध ही हैं। कहते हैं, उनसे वे सुन सकते हैं और स्पन्दनों का अनुभव कर लेते हैं !





मोमबत्ती की तरह जलनेवाली मछली !

इस मछली के बदन में इतनी अधिक चर्बी या तेल होता है कि इसको सुखाकर और इसके शरीर में एक बत्ती रखकर जलाने से यह मोमबत्ती के समान जलते हुए बढिया प्रकाश देती है, जैसा कि दाईं ओर के चित्र में दिखाया गया है !



एक मछली का अनोखा शस्त्र !

भयभीत होने पर अथवा किसी खतरे का सामना होने पर इस मछली की पीठ पर एक नोकदार कौंटा उठ आता है। यह प्रणयातक कौंटा इतना कड़ा होता है कि आप अपनी उँगली से उसे दबा नहीं सकते। हाँ, उसकी रीढ़ की हड्डी को एक विशेष स्थान पर दबाने से यह कौंटा यथास्थान भीतर घुस जाता है ! (दे० ऊपर का चित्र)



विद्युत्मयी मछली !

नीचे के चित्र में जिस कबचितरे अनोखे जीवधारी की तस्वीर दी गई है, वह एक जाति की मछली होती है, जो प्रायः गहरे पानी में पाई जाती है। इसकी विशेषता यह होती है कि इसके शरीर से विद्युत् की लहरें निकलती हैं, जिनके बल पर यह केवल अपने स्पर्शमात्र से शिकार को अचेत कर देती है !

पानी की बूंदों द्वारा शिकार !

बाईं ओर के चित्र में ऊपर जो मछली दिखाई दे रही है, वह अपने मुख से बन्दूक की गोली के समान पानी की बूंदों की बौछार छोड़कर छोटे-छोटे कीड़ों का आखेट करती है !

सितारे-जैसी मछली !

बाईं ओर के चित्र में नीचे सितारे की-सी आकृति का जो पँचकोना जंतु दिखाया गया है, वह भी एक जाति की मछली होती है !

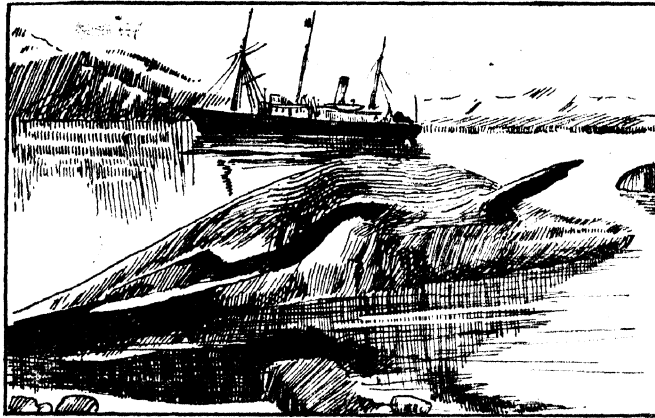


हजारों वर्षों से बर्फ में कैद आदि-युग का भीमकाय जानवर !

कुछ ही साल पहले की बात है, सुदूर उत्तरी भ्रुव-प्रदेश-वासी एस्किमो जाति के शिकारियों की एक टोली शिकार की टोह में भटकते-भटकते उस बर्फीले उजाड़ खण्ड के एक ऐसे सुनसान भूभाग में जा पहुँची, जहाँ संभवतः उनसे पहले किसी भी मनुष्य ने क़दम न रक्खा था। वहाँ जो दृश्य उन्हें दिखाई दिया, उससे वे दंग रह गए। उन्होंने देखा कि जल पर तैरते हुए अनेक छोटे-बड़े हिम-खण्डों के बीच समुद्र-तट से लगा हुआ एक विशाल पर्वताकार बर्फ़ का पहाड़ खड़ा है और उस स्फटिक-जैसे पारदर्शी निर्मल हिमखण्ड के भीतर अत्यंत लंबी गरदनवाला एक ऐसा दैत्याकार डरावना जानवर कैद है, जैसा कि आज दिन पृथ्वी पर कहीं देखने को नहीं मिल सकता। पहले तो ये शिकारी भयभीत होकर उल्टे



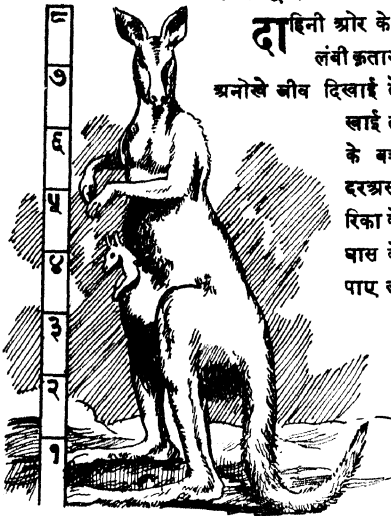
पौंव भाग चले, किन्तु जब उन्होंने देखा कि वह अनोखा जीव अपनी उस कालकोठी में ऐसी मज़बूती से कैद है कि तिल भर भी हिलने-डुलने में वह असमर्थ है तो वे साहस करके पुनः उसके समीप गए और जब उन्हें यह पक्का विश्वास हो गया कि चारों ओर बर्फ़ के जम जाने के कारण उस भीमकाय प्राणी के प्राणपखेरू न जाने कब के उड़ चुके हैं, तो उन्होंने कुछ तो उत्सुकतावश और कुछ उसके मांस के लालच में उस बर्फ़ की चट्टान को तोड़ना शुरू किया। यह किस जाति का जानवर था और कितने दिनों से इस तरह कैद था, यह वे बेचारे जंगली शिकारी निर्णय न कर पाए। जब बाद में कुछ वैज्ञानिकों को इसकी ख़बर मिली तो वे उस स्थान को दोढ़े गए, किन्तु तब तक एस्किमो लोगों ने मांस के लिए उस दानवीय जन्तु के शरीर को काट-काटकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। फिर भी उसकी ठटरी की हड्डियों के कुछ बचे-बुचे टुकड़ों से वैज्ञानिकों को यह ज्ञात हुआ कि वह आदि-युग के भीमकाय उरंगमों का प्रतिनिधित्व करनेवाला कोई जीव रहा होगा और उसका शव लगभग ४



हज़ार वर्ष से उसी तरह बर्फ़ में कैद रहा होगा। चूँकि वह बर्फ़ से ढका रहा इसीसे इतना अधिक समय बीतने पर भी वह सड़-गल न पाया !

**हेल एक मछली नहीं, स्तन-
पायी जानवर है !**

हेल, जो आकार में हाथी से भी बड़ा प्राणी है, एक जलजंतु होने पर भी मछली की जाति का जीव नहीं है—वह स्तनपायी जीव है। हेल की लंबाई १०० फीट और आयु ४०० से ५०० वर्ष तक की होती है !



ये मालू के बच्चे नहीं, कुत्ते हैं !

दा

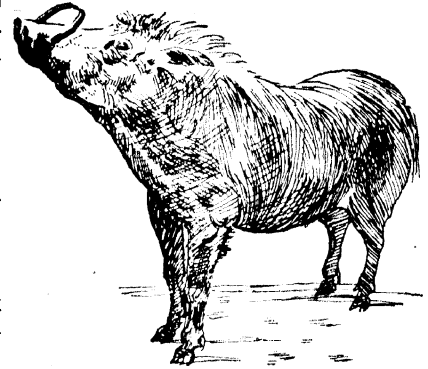
हिनी और के चित्र में एक लंबी कृतार में बैठे हुए जो अनोखे जीव दिखाई दे रहे हैं वे दिखाई तो देते हैं मालू के बच्चों जैसे, किन्तु दरअसल वे हैं अमेरिका के 'प्रेरी' नामक घास के मैदानों में पाए जानेवाले एक अनोखी जाति के कुत्ते; जिनकी बस्तियाँ मनुष्यों के नगरों से कहीं अधिक विस्तृत सौ मील तक लंबी होती हैं।



कंगारू की अनोखी गोद !

मा

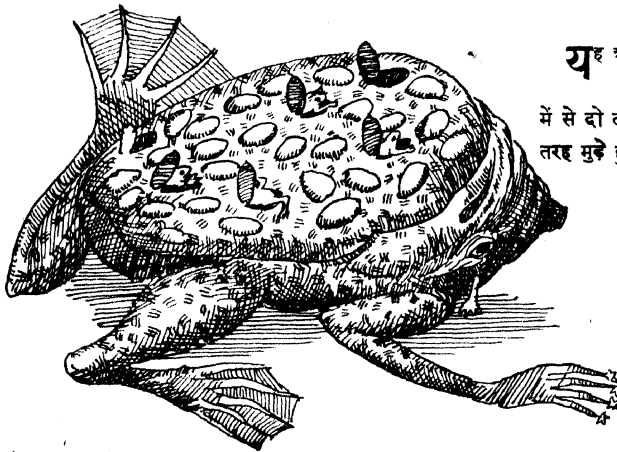
कंगारू अपने बच्चे को अपनी गोद में बने हुए एक जेब-नुमा थैली में बिठाए रखती है, जैसा कि ऊपर के चित्र में आप देख सकते हैं ! यह थैली ऐसी अजीब होती है कि जब बच्चा अपना सिर भीतर कर लेता है तो वह स्वयं ही बंद हो जाती है और जब वह बाहर निकलना चाहता है तो खुल जाती है ! बच्चा होने पर कंगारू ७ या ८ फीट तक लंबा हो जाता है, परन्तु जन्म के समय वह केवल १ इंच लंबा होता है !



अनोखा सुअर !

यह अजीब जाति का सुअर 'वार्ट हॉग' कहलाता है। इसके मुख पर दो भौंड़े-से मसे होते हैं और जबड़ों में से दो दाँत (जो २६ इंच तक लंबे होते हैं) सींग की तरह मुड़े हुए ऊपर को निकले रहते हैं !

यह मेंढक पीठ पर अंडे सेता है !



सु

रीनम नामक इस मेंढक की मादा जब अपने अंडे देती है, उस समय उसकी पीठ की खाल बहुत कोमल और गुदगुदी हो जाती है। मेंढक एक-एक करके सब अंडों को मेंढकी की पीठ की उस खाल पर रख देता है। इसके उपरान्त यह खाल तुरन्त ही जैसी पहले थी वैसी हो जाती है और प्रत्येक अंडे को रहने के लिए उसमें मानो एक-एक डिबियानुमा निजी घर मिल जाता है ! यथासमय इनमें से छोटे-छोटे मेंढक निकल आते हैं !



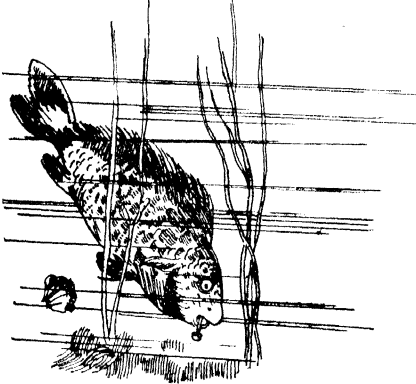
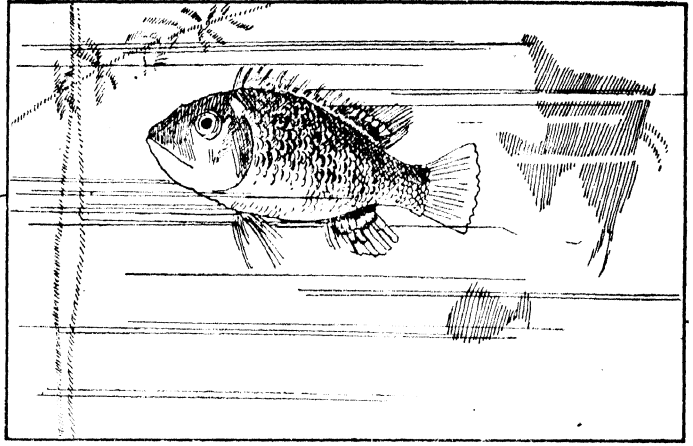
धरातल पर चलनेवाली मछली !

लकड़ा की यह मछली जल में से निकलकर सूखी धरती पर एक मील तक चली जाती है ! यह जल के बाहर एक सप्ताह तक जीवित रह सकती है !

यह मछली अपने अण्डे मुँह में लिये रहती है !

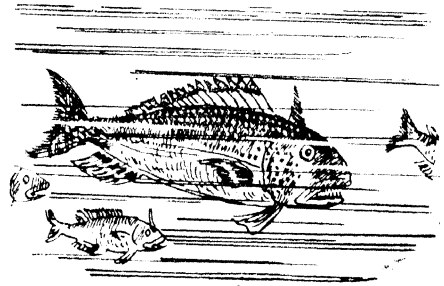
दाहिनी ओर जिसका चित्र दिया गया है, यह मछली नील

नदी में रहती है और जब अण्डे देती है तो उन्हें दस दिनों तक अपने मुँह में रखे रहती है। उन दिनों यह कुछ भो नहीं खाती-पीती !



चोंच से लोहे को भी काट देनेवाली मछली !

यह अनोखी मछली दक्षिणी अटलांटिक महासागर में पाई जाती है। इसकी चोंच इतनी कठोर होती है कि उससे यह तार, कील, काँटा, मूँगा आदि सभी कुछ काट लेती है। इसका आहार है समुद्री घास !



छुकाछिपी का खेल खेलनेवाली मछली !

इस मछली की शकल सपरेल की आकृति की-सी होती है। सबसे प्रथम १८७६ में यह मछली देखी गई। तीन वर्ष उपरान्त यह एकदम अन्तर्धान हो गई, और उसकी सहस्रों लाखों समुद्र में दिखाई पड़ी। १८८२ में यह मछली फिर दिखाई देने लगी और अब इसकी नस्ल बहुत बढ़ गई है।

एक शुक्तिका की पाँच पीढ़ी की संतान परिमाण

में पृथ्वी से आठ गुना बड़ी हो सकती है !

यदि एक ही शुक्तिका (Oyster) की सन्तति पाँच पीढ़ियों तक जीवित रहे तो वह परिमाण में पृथ्वी से आठ गुना के बराबर हो जाय !



वैज्ञानिकों का सबसे विचित्र आविष्कार — यंत्रनर !



एक से एक आश्चर्यजनक यंत्रों का निर्माण करनेवाले मानव ने अब विज्ञान की सहायता से स्वयं अपनी ही यांत्रिक प्रतिमूर्ति तैयार करने के लिए हाथ बढ़ाया है। आए दिन अनेक ऐसी खबरें सुनने को मिलती रहती हैं कि अमुक देश के अमुक वैज्ञानिक ने ऐसा एक नक़ली आदमी या यंत्रनर (Robot) तैयार किया है, जो केवल आदेश मात्र से विविध प्रकार के मान-वोचित कार्य करता है, तो दूसरे ने ऐसा एक यंत्र बनाया है जो मिनटों में गणितज्ञ की भाँति जोड़, बाँकी, गुणा आदि के पेचीदा हिसाब लगाकर सही-सही आँकड़े बता देता है ! कुछ ही समय पहले एक खबर छपी थी कि कनाडा के मास्त्रील नगर में सोने की एक खदान के खजाने में लगे हुए एक यंत्रनर ने उस खजाने में चोरी करने के प्रयत्न को सफलतापूर्वक विफल कर दिया था और केवल उस यंत्र की ही चौकसी की बदौलत सब-के-सब चोर एकदम पकड़ लिये गए थे ! यही नहीं, अब तो वैज्ञानिकों की कृपा से ऐसे यंत्र युद्ध के मैदान में भी उतर पड़े हैं और प्रायः सुना जाता है कि अमुक युद्धक्षेत्र में ऐसे स्वयंचालित टैंकों या वायुयानों से काम लिया जा रहा है, जिनमें कोई चलानेवाला आदमी नहीं बैठा रहता, प्रत्युत् रेडियो-तरंगों द्वारा आदेश पहुँचाकर मीलों दूर से हेडक्वार्टर में बैठा हुआ कोई चतुर वैज्ञानिक उनका संचालन करता रहता है !

निस्संदेह ये यंत्र-नर हड्डी, मांस या चर्बी के बने नहीं होते बल्कि उनका कलेवर अत्यंत पेचीदा कल-पुजों का एक जंजाल मात्र होता है। हाँ, कभी-कभी मनबहलाव के लिए उनके उस यांत्रिक कंकाल को ढकने के हेतु धातु के पत्तों द्वारा निर्मित

मनुष्य के आकार का एक आवरण उस पर चढ़ा दिया जाता है, जैसा कि इसी पृष्ठ पर दिए गए एक यंत्रनर के चित्र में आप देख सकते हैं।

अंग्रेज़ी कवि शैली ने एक बार ऐसे एक वैज्ञानिक की कल्पना की थी, जिसने अपनी प्रयोगशाला में हाड़-मांस से युक्त एक कृत्रिम मानवाकार दानव की सृष्टि की थी। आज के वैज्ञानिक द्वारा उपजाया हुआ यह यंत्र-दानव भी, हाड़-मांस-निर्मित न होने पर भी, किसी तरह कम आश्चर्यजनक नहीं है। पाश्चात्य देशों में होनेवाली कई प्रदर्शनियों में ऐसे यंत्र-नरों का प्रदर्शन किया जा चुका है, जो केवल आपकी आवाज़ ही सुनकर उत्तर में हाथ-पैर हिलाकर या बोलकर आपके प्रश्नों का सही-सही उत्तर दे देते हैं, अखबार पढ़ते हैं और गाना गाते हैं ! सबसे आश्चर्यजनक तो वे पेचीदा यंत्र हैं, जो कई बैंकों में लगाए गए हैं और होशियार से होशियार गणितज्ञों से भी अधिक शीघ्रतापूर्वक अत्यंत पेचीदा आँकड़ों के हिसाब का सही-सही उत्तर प्रस्तुत करने का काम करते हैं। वाशिंगटन के एक सरकारी दफ़्तर में उबार-भाटे के उतार-चढ़ाव संबंधी आँकड़ों का हिसाब लगाने के लिए ऐसा एक कृत्रिम यंत्रनर लगा है, जो केवल ७ घंटे में ऐसे-ऐसे पेचीदा गणित के प्रश्न हल कर देता है, जिन्हें १०० गणितज्ञ लगातार छुटे रहकर वर्ष भर में भी नहीं हल कर पाएँगे !

ताज्जुब नहीं यदि भविष्य में इन यंत्रों का दायरा इतना अधिक बढ़ जाय कि हमारे घरों में नौकर-चाकर की ज़रूरत ही न रहे और घर का सारा कामकाज केवल यंत्रों द्वारा ही होने लगे !

मविष्य के नाम वर्त्तमान का एक अनोखा संदेश !

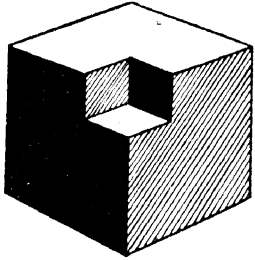
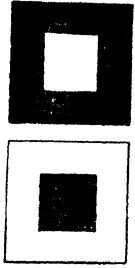
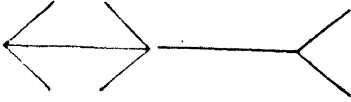
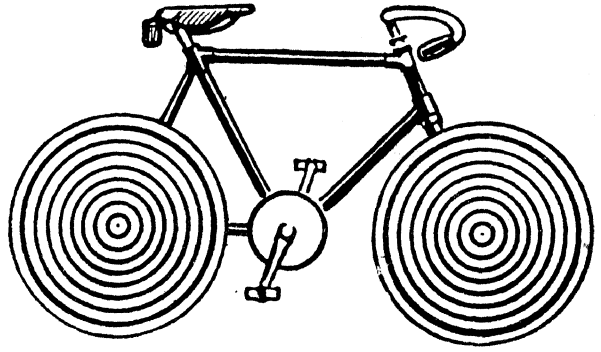
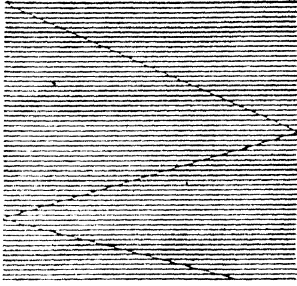
सितंबर २३, १९३८, के दिन वर्त्तमान युग की ओर से आज से ५००० वर्ष बाद की दुनिया

के नाम एक अनोखा संदेश प्रेषित किया गया ! इस संदेश का ध्येय था पृथ्वी के भावी निवासियों के लिए संक्षेप में आज की सभ्यता और संस्कृति की एक ऐसी अचूक कुंजी प्रस्तुत कर देना जिससे कि यदि कारणवश वर्त्तमान सभ्यता और उसके सभी उपकरण एकबारगी ही नष्ट हो जायें तब भी बाद के युगों के पुरातत्त्वान्वेषक सही तरीके से अनुसंधान करने पर इस युग की पूरी-पूरी भोंकी देख पाने में सफल हो सकें। इसके लिए दुनिया के बड़े-बड़े पुरातत्त्ववेत्ताओं और विज्ञान के दिग्गज पंडितों की सलाह से विशेष प्रकार की टिकाऊ धातुओं द्वारा एक टारपेडोनुमा पेटी बनाई गई, जिसकी लंबाई ७॥ फीट, व्यास ८ इंच और वजन १० मन था। इस पेटी के छः कक्ष या विभाग थे और उसकी भीतरी दीवार पर 'पाइरेक्स' नामक विशेष जाति के शीशे का एक आवरण चढ़ाया गया था, ताकि उसमें रक्खी गई चीजों पर गर्मी, नमी आदि का कोई प्रभाव न पड़ सके। इस ७॥ फीट लंबी नली में न केवल आज तक के सारे ज्ञान का निचोड़ ही भर दिया गया, बल्कि वर्त्तमान जगत् का पूरा ज्वाका ही खींचकर सूत्ररूप में सुरक्षित रख दिया गया। उसमें ३५ ऐसे पदार्थ चुनकर रखे गए, जो कि आज दिन हमारे दैनिक जीवन में सबसे अधिक काम में आते हैं। इन पदार्थों में एक साधारण पेंचकश से लगाकर अत्यंत लघु आकार का फोटो खींचने का कैमरा तक सम्मिलित था। तदनंतर छोटी-छोटी शीशियों में गेहूँ, मक्का, जौ, चावल, सोयाबीन,



चुर्कंदर, गाजर, रुई, सन, तंबाकू आदि के बीज भी उसमें इस आशा से रखे गए कि यदि तब तक इनका पृथ्वी पर नाम-निशान भी न रहे तो भी उस युग के लोग चाहें तो इन बीजों को उगाकर ये चीजें तैयार कर सकें। साथ ही लगभग ४० तरह के कपड़ों के नमूने भी रखे गए। और अंत में जो सबसे अनोखी चीज उसमें रक्खी गई वह थी लगभग ११०० फीट लंबी एक फ़िल्म, जिसमें लगभग १ करोड़ शब्द और १००० तस्वीरों से युक्त एक विशाल ज्ञानकोश (Encyclopedia) का सूक्ष्म फोटो चित्रित था। इस चित्रपट में इतनी पठन-सामग्री दे दी गई थी, जो साधारण पुस्तक के रूप में दी जाती तो बारीक टाइप में छपी लगभग १०० जिल्दोंवाली पुस्तक में समा पाती! इस चलचित्र में सभी विषयों के ज्ञान के साथ-साथ अंग्रेज़ी भाषा का एक शब्दकोश तथा संसार की ३०० विभिन्न भाषाओं के नमूने भी दिए गए थे। साथ ही उसमें संसार के सबसे महान् ज्ञानकोष 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' के विज्ञान और कला संबंधी कई एक लेख, तीन संसारप्रसिद्ध उपन्यास, बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाओं के सूचीपत्र, ८० प्रमुख मासिक और दैनिक पत्रों के सामयिक अंक, रेलवे और हवाई यात्रा के टाइमटेबल, आदि भी हूबहू उद्धृत किए गए थे। साथ ही दो किताबें भी इस पेटी में रख दी गई थीं, जिनमें एक थी बाइबिल और दूसरी थी इस दफ़नाई जानेवाली पेटी की कुंजी-रूपी एक बीजक-पुस्तिका, जिसकी एक-एक प्रति संसार के ज्ञास-ज्ञास अजायबघरों में संग्रहाय्य भेज दी गई थी। ये सब चीजें रखकर उस अनोखी पेटी में से सारी हवा निकाल ली गई और फिर उसे ऊपर से इस तरह बंद कर दिया गया कि उस पर बाहर की नमी, हवा या गर्मी का कोई असर न होने पाए। तब न्यूयॉर्क शहर में वह एक ज्ञास जगह पर घरती में ५० फीट नीचे गाड़ दी गई !

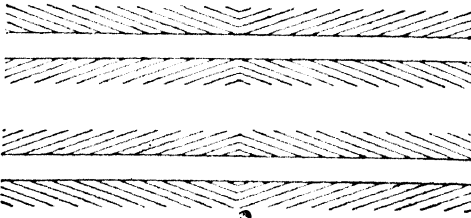
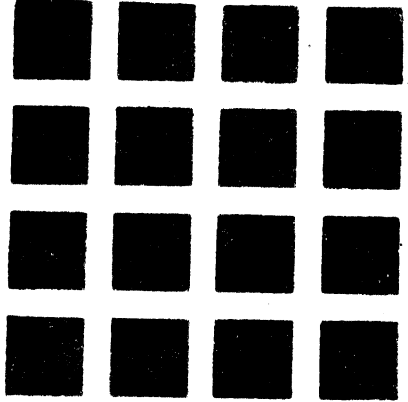




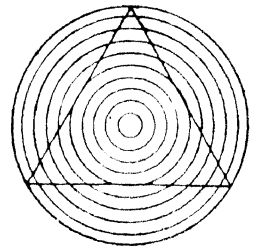
दृष्टि-भ्रम !

बाएँ ओर नीचे की युगल

रेखाएँ समानान्तर हैं, किन्तु क्या आपको इनमें से एक की दोनों रेखाओं के बीच का अन्तर मध्य में कम और किनारों की ओर अधिक तथा दूसरी में इसका उल्टा नहीं जान पड़ता ! बीच के षटकोण को घुमा-



फिराकर देखने से नई-नई बातें दिखाई देती हैं। कभी ठोस चीज़ का एक कोना कटा हुआ प्रतीत होता है, तो कभी ऐसा लगता है मानों दो पदों के बीच में एक छोटा चौकोर टुकड़ा रक्खा हुआ है, और कभी जान पड़ता है कि बड़े चौकोर टुकड़े के कोने



में एक छोटा टुकड़ा लगा हुआ है ! उसी के बगलवाले काले और सफ़ेद समचतुर्भुज बराबर होते हुए भी छोटे-बड़े लगते हैं ! उनके ऊपर वाली दोनों सीधी रेखाएँ बराबर हैं, फिर भी एक बड़ी और दूसरी छोटी दिखलाई दे रही है ! सबसे ऊपर की समानान्तर रेखाओं को काटनेवाली तिरछी रेखा को आप लहरदार कहेंगे या सीधी ? दरअसल तो वे एकदम सीधी हैं, किन्तु दिखाई देती हैं लहराती हुई ! दाहिनी ओर सबसे ऊपर दिए गए साइकिल के चित्र को यदि घुमाते हुए आप देखें तो ऐसा मालूम होगा मानों साइकिल के पहिए तेज़ी से घूम रहे हैं, और उसके नीचे दिए गए काले-काले समचतुर्भुजों के समूह में उन स्थलों पर जहाँ कि बीच की सफ़ेद पट्टियाँ एक-दूसरे को काटती हैं, आपको कुछ धुँधलीछायाएँ पड़ती हुई दिखाई देंगी ! इसी तरह नीचे अनेक वर्तुलों के बीच बने त्रिकोण की भुजाएँ वास्तव में हैं सीधी, पर देखने में वे बीच में से झुकी हुई मालूम देती हैं ! यह सब हमारी दृष्टि का कैसा विचित्र भ्रम है !

